॥भ.सा. रावनहूसीकरनसवलोग ॥ ३ ॥ रागभैरों ॥ अतिहेंअनंतसुसवा
॥५०॥ रभयों ॥ नारागनसवगगनछिपाने अरुनउदितअंधकारगयों
॥१॥ जागेमहरिकाजग्रहलागेनिसिकोंदुखसवभूलिगयों ॥ प्रा
तसनानकरतजमुनाकोंनंदहिनुरनउछयदयों ॥ २ ॥ मथनहार
सवग्वालबुलायोंप्रातभयोंउठिमथ्योंदहीं ॥ सुख्लनंदघरनीआ
गेंहूमथ्यातिमथ्यानीनेतिगहीं ॥ ३ ॥ राग आसावरी ॥ जसोदाकह्यचि
रैयावोली ॥ कियोंकलेऊप्रातप्रीतिसोंगोपसखनसोंकरतक
लोली ॥ १ ॥ करिसिंगारचलेगय्यनलेंगोपसखानिजसंग ॥ गा
वतखेलतविविधिभांतिहरिक्रीडतअपुनेरंग ॥ २ ॥ आयेवृं
दावनसुखपायोंगिरिकंदरसुखरूप ॥ झरनाझरतअमृतके
जलज्यौंसोहतपरमअनूप ॥ ३ ॥ खगमृगभंगनिकीमधुरीधु
निसुनतमनहिहरखाए ॥ कमलआदिवहुफूलनसोंधनिप
वनसंगचलिआए ॥ ४ ॥ सुंदरसरनिरमलजलसोहेंतहांविह
रतदोऊभाई ॥ द्रुमएनएफूलफललेकेंभेटहिमनुल्याई ॥
५ ॥ देखनहरिदाऊसोंवोलेसुरपूजतिहमसवहीं ॥ फलफूलन
लेंभेटकरनतुवचरननिपेनेपाही ॥ ६ ॥ विनयकरतजोअ
रुअज्ञानीतिनकीपरखीपारि ॥ तुमकृपालदेंयाधरपरिकी
तनकीतपतिनसाई ॥ ७ ॥ यविधिविनयकरतयेसवहीं तातेंउ
त्तमदास ॥ औरभोगीजनअतिसयमुनिसेपरमहुलास ॥
८ ॥ गुनतुमरेमोवतसंमाधावत ॥ चरणकमलसहिलेत ॥
रूनीपसुपंषीसवमिलिकेंमनआनंदसवदेत ॥ ९ ॥ कोकि
लमोरदेखिकेंगावतहरिजनकीयहरीत ॥ ह्यपायवहुभां
तिफिरिवेंगुनगावेंअतिप्रीत ॥ १० ॥ धरनीअरुतृणदूवडभागी
जोतुमरेपदलागी ॥ कुंकुमपरसहोतसुखपावतपुलकितन
हियअनुरागी ॥ ११ ॥ येहिविधिसवव्रजधनिजानितुमसुरसु
निवेरववखानें ॥ येहिरसपारनपावेंकोऊकृपानुसारीजांनें
॥ १२ ॥ येहिविधिक्रीडतश्रीयमुनातटसावनसंगदोऊभाई ॥ स
रदासहूपिकीवांनीसुनिसवनपरमसुखपाई ॥ १३ ॥ इतिश्रीभा
गवतेमहापुराणेदशमस्कंधेपंचविंशोध्यायः ॥ २५ ॥ अथकार
लीमर्दनलीला ॥ रागविलावल ॥ नारदनृपसोंकरतविचारा
व्रजमेंकोऊहेंअवतारा ॥ १ ॥ नंदसुवनवलिरामकन्हाई ॥ इन
कीगतिमेंकछुनपाई ॥ २ ॥ तणऋवर्तसोंदूतपठयों ॥ तापाछें ॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj

केसीअसुरधायो ॥३॥ बकीपठाईपहुलेंही ॥ ऐसेमनिकोंबलवे
सवलेंही ॥४॥ उननेंकछुभयोंनहिकाजा ॥ यहसुनिमोहिआव
तहैंलाजा ॥५॥ अवसुनितुमएकबुद्धिविचारो ॥ सूरस्यामबलि
रांमहिमारों ॥६॥ राग बिलावल ॥ नारदऋषिनृपसोंयोंभाखत
वेहैंकालतुम्हारे प्रगटेकाहेकोंतुमराखत ॥१॥ कालीउरगा-
गारैंजलभीतरतिननेंकमलमगावहु ॥ दूतपठाइदेउब्रज
ऊपरनंदहिडरप्रतिपावहुं ॥२॥ यहसुनिकेंब्रजलोगडरेंगे
वेसुनिहैंएबात ॥ पहुपलेंनजेहैंनंदढोटा उरगकरेंतिहिघा
त ॥३॥ यहसुनिकंसबहुतसुखपायोंभलीकहीयहमोहि ॥ सूर
दासप्रभुकोंमुनिजानतध्यांनकरतमनजोहि ॥४॥ रागसरो बि
लावल ॥ कंसबुलायदूतएकलीनों ॥ कालीदहकेफूलमगाए
पत्रलिखाइतासकरदीनों ॥१॥ यहकहियोंब्रजनाउनंदसोंकं
सराजअपकाजमगाए ॥ तुरतपठायदियेहीबनिहैंभलीभांति
कहिकहिसमुझाए ॥२॥ अंतरजामीजांनिलियमेंआपरहेबन
ग्वालपठाए ॥ सूरस्यामब्रजजनसुखदायककंसकालजियह
रखबढाए ॥३॥ रागरामकली ॥ खेलतचलोनंदकुमार ॥ दूतआ
वतजांनिब्रजमेंआपुनदीनोंटारि ॥१॥ नंदजमुनान्हानआए
महरिछाडीद्वार ॥ नृपतिदूतपठायदीनोंचल्योब्रजइहिकार ॥
२॥ महरिपेंढनिसदनभीतरछींकबांधेईधारि ॥ सूरनंदकहत
महरिसोंआजकहाविचार ॥३॥ रागबिलावल ॥ यहसुनिकंस
मुदितमनकीनों ॥ दूतहिप्रगटकहीयहबांनीपत्रलिखायनं
दकोंदीनों ॥१॥ कालीदहकेकमलपठावहु तुरतदेखियहपां
ती ॥ जैसेंकालिकमलयापहुचेंतसकहियोंइहिभांती ॥२॥ यहसु
निदूततुरतहीधायोंतबपोंहोंच्योंब्रजजाइ ॥ नंदमहरिकर
पातीदीनीदूतकह्योसमझाइ ॥३॥ रागसूहो ॥ पांतीबांचतनंदडु
राने ॥ कालीदहकेफूलपठावहुसबेंलोगघबराने ॥१॥ जोमो
कुंनहिफूलपठावहु तोब्रजहोंइउजार ॥ महरिगोपउपनंदन
राखोंसबहुनिडरोंमारि ॥२॥ पोहोंपदेउतोबनेंतुम्हारीनातर
गएलिवाइ ॥ सूरस्यामबलिरांमतिहारेमांगोंउनेंधराइ ॥३॥
रागबिलावल ॥ नंदसुनतमुरझायगए ॥ पातीबांचीसुनीदूतमु
खयहबांनीसुनिचकृतभए ॥१॥ बालिमोंहनखटकतबाके
मनआजुकहीयहबात ॥ कालीदहकेफूलकहोंकोंआंनें

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. धौंजाइब्रजवासीनातरसबमारौंबांधौंबलहिकन्हाई॥२॥यह
५२ कहतदेखुनैनदुखानेनंदघरनिदुखपाइ॥सूरस्यांमचितवत
मातमुखपूछतबातबनाइ॥३॥रागआसावरी॥पूछेंजाइता
तसौंबात॥मैंबलिजाउमुखारविंदकी।तुमहिंकाजकंसअ
कुलात॥१॥आएस्यांमनंदपेंधाएजान्यौंमातपिताबिलखा
त॥अबहींदूरिकरौंइनकौंदुखकंसहिपठेंदेहुजलजात
॥२॥मोसौंकहींबातबाबायहबहुतकरततुमसोचबिचार
कहांकहौंतुमसौंमेरेप्यारेकंसकरतकछुतुमसौंझार॥३॥
जबतेंजनमभयोहैतेरोकेतीककरबरिष्टरीकन्हाई॥सूरस्यां
मकुलदेवनितेंकौंजहांतहांकरिलियौसहाई॥४॥रागबि
लावल॥तुमहिंकहतकोऊकरैंमहाई॥सोदेवतासंगहैमेरे
ब्रजतेंअंतकहूंनहिंजाई॥१॥वहदेवताकंसमारैगोकेसध
रैंधरनीघिसियाइ॥वहदेवतामनावौंसबमिलितुरतकमल
जोपठाइदेइ॥२॥बाबानंदझषतकिहिकारणएयहकहिमाया
मोहउपजाइ॥सूरदासप्रभुमातपिताकौंतुरतहिंदुखडार्यौं
बिसराइ॥३॥रागरामकली॥खेलनचलेयौंकुंवरकन्हाई॥क
हतघोषनिकासजेंहोंजैंखेलनधाइ॥१॥गेंदखेलतबहु
तबनहैंल्याबोकोउजाइ॥सखाश्रीदामागयेघरगेंदतुर
तहिंल्याइ॥२॥आपुलैकरस्यांमदेख्यौंअतिहीहरखबढाइ॥स
खेप्रभुसखालेसंगकरतखेलबनाइ॥३॥रागसारंग॥खे
लतस्यांमसखालीयेंसंग॥इकमारतइककरोकतगेंदहिएक
भगतकरिनानारंग॥१॥मारपरस्परकरतआपुसमेंअति।
आनंदभयेमनमांहि॥खेलतहीमेंस्यांमसबनकौंजमुनातन
टकौंलीनेंजांहि॥२॥मारिभजतजोजाहिताहिसौंमारतलेतआ
पनोंदाउ॥सूरस्यांमकेगुनकोजानैंकहतऔरकछुऔरउपा
उ॥३॥रागगौरी॥लेंगयेटारिजमुनजलग्वालनि॥आपुनजात
कमलकेकाजेंसखालियेंसंगग्वालनि॥१॥गोरीमारिभजत
उनहींकौंजातजमुनाकेतीर॥इकधावतपाछेंउनहूंकेपावत
नहींअधीर॥२॥हटकिकरततुमखेलतहींमेंपरीकहेंयहबानि
सूरस्यांमकौंकहतग्वालसबतुमेंभलेंकरिजांनी॥३॥॥८॥
स्यांमसखाकौंगेंदचलाई॥श्रीदामामुरिअंगबचायोगेंद
गिरीकालीदहजाई॥१॥धायगहौंतबफेंटस्यांमकीदेहुनमे

Shrimad Gokulnathji Maharaj

रोगेंदमगाइ औरसखाजिनमोकोंजानोंमोसोंजिनतुमकरों
ढिठाई॥२॥जानिबूझितुमगेंदगिराईअबरीझेदेवनेकन्हाई॥
सूरसखासबहसतपरस्परभलीकरीहरिगेंदगवाई॥३॥रा
ग॥सो॥रठि॥फेटछांडिमेरीदेश्रीदामा॥काहेकोंतुमरारिबढावतत
नकबातकेकांमा॥१॥मेरीगेंदलेहुताबदलेंबांहगहतहोंधा
इ॥छोंडिदेहुजानतनहिकाहूकरतबराबरिआइ॥२॥हमकाहे
कोंतुमरीबराबरिबडेनंदकेपूत॥सूरदासदीनेंहीबनिहेंब
डेकहावतधूत॥३॥राग॥कल्यान॥तोसोंकहांढिठाईकरिहों
जहांगिरीतहांदेखीनाहीकहांतोसोंमेलरिहों॥१॥मुहसंभारि
तूबोलतनाहीकहतबराबरिबात॥पावोगेअपनपोंकीयोंअ
बहीरिसनिकपावतगात॥२॥सुनोंस्यांमहमतुमसरनांहीऐ
सेंगयेलिवाइ॥हमसोंसतरहोतससूरजप्रभुकमलदेहुअबजा
इ॥३॥राग॥गौरी॥हमहीपरसतरातकन्हाई॥सुनतमकमलकंस
कोंरीजेंडारोंहमेंमराई॥१॥संबकहोंमेंलेश्रीदामाकमलका
जमेंआयों॥कहाकंसबपुरोकिहिलागाकेजानेंमोहिडरयों॥२॥
अघाबकाकेसीसकटासुरतणावर्तसिलापरडारयों॥बकीकप
टकरिआवनआईताकोंतुमपछारयों॥३॥कालीदहसबब्र
जतमरेंसबसोईकालीनागहिलायो॥सूरस्यामप्रभुदेहधरेकोंगुण
प्रगटहुतिहिंठांऊ॥४॥राग॥सोरठि॥रिसकरिलीनोंफेंटछुडाई॥स
खासबेंदेखतडारेंआपुनचढेकदमपरधाई॥१॥नारीदेंदे
हसतसबैमिलिस्यांमगयेतुमछांडिराई॥रोवतचलेश्रीदा
माघरकोंजसुमतिआगेंकहिहोंजाई॥२॥सखासखाकहिस्यां
मपुकारयोंगेंदलेंआपुनीलेहुनआई॥सूरस्यांमपीतांबर
काछेंकूदिपरेदहमेंफिरिआई॥३॥राग॥सोरठि॥इहांकरि
सबसखनपुकारयों॥गेंदकाजयहकरीसुदांमानंदमहरिसों
ढोटामारयों॥१॥जसोमतिचलीरसोईभीतरतबहींग्वालिएं
कधीक॥पाकिनहेंरहीद्वारेंपरठाढीबातनहींकछुनीकी
२॥आईअजरनिकसिनंदरानीबहुतरव्योटेदोषमिटाइ॥मंजा
रीआगेंहोंनिकसीपुनिफिरिआगेंधाई॥३॥व्याकुलभईनि
कसिगईआननकहांधोंगयोकुंवरकन्हाई॥वांयोंकागदा
हिनेखरसुरव्याकुलफिरिघरआई॥४॥रविनभीतरमिन
बहिस्आवतखिनआंगनयांभांति॥सूरस्यांमकोंटेरतिज

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. ननीनेकनहीमनसांति॥ प॥ रा॥ गोरि॥ देखेनंदचलेघरआवत
५२ पेंठतिपोरिछींकभईवांयेंरोइदाहिनेंदाहूसुनावत॥ १॥ पटकत
अववबखांनद्वारेपरकुररीकरतलराई॥ माथेपरद्वेकागउड
नेकुसगुनवहुतनउपाई॥ २॥ आएनंदगेहमनमारेव्याकुलदे
खीनारि॥ सूरनंदजसोमतिसोंपूछतविनछविवदननिहारि
३॥ रा॥ नट॥ नंदघरनिसोंपूछतिवात॥ वदनझुराइगयोक्योंतो
तेरोकहांगएवलिमोहनतात॥ १॥ भीतरचलीरसोईकारनछीं
कभईतवआगनआइ॥ पुनिआगेंद्वैगईमंजारीऔरवहुत
मेंकुसगुनपाइ॥ २॥ मोहिभयोकुसगुनघरपैठतआजुकहांध
हूंसमुझनजाई॥ सूरस्यामकितगयेआजुधोंवारवारपूछतनं
दराई॥ ३॥ रा॥ गोरी॥ महरिमहरिमनगईजनाय॥ छिनभीतर
छिनवाहिरठाढेविनआगनदेखतहैंजाय॥ १॥ हरिअंतरस
वसखापुकारेरोवतआएव्रजकोंधाय॥ आतुरगयेनंदघ
रहीकोंमहरिमहरिकोंवातसुनाय॥ २॥ व्याकुलभएदोऊपूछ
नलागेकहीवातहमसोंसमझाइ॥ सूरस्यामखेलतकदम
हिचढिकूदिपरेकालीदहजाइ॥ ३॥ रा॥ मारु॥ सुपनोंप्रगटकि
योंकन्हाई॥ सोवतहीनिसआतुरानेहमसोंकहियतवातसु
नाई॥ १॥ धरनिपरीमुरझायजसोदावेदरगयेजमुनातटधाइ
वालकसवनंदहिसोंआएव्रजघरघरजहांसोरमचाइ
२॥ आइआइसवहिनंदपुकारतदेखतठौरगिरेफहराइ॥ लो
टतधरनिपरेजलभीतरसूरस्यामदखरियोवचाइ॥ ३॥ रा
गुजरी॥ व्रजवासीयहसुनिसवआये॥ कहांपरयोगिरिकुव
रकन्हाईवालकलेसोठौरदिखाये॥ १॥ सूनोगोकुलविनस्यां
मतुमयहकहिलोगउठेसवरोइ॥ नंदघरनिरसवहुतधरिरा
खीपोछनवदननीरलेधोइ॥ २॥ व्रजवासीसवकहतमह
रिसोंमरनभयोंसवहीकोंआइ॥ सूरस्यामविनकोवसिहैंव्र
जधामजीवननिहुभवनकहाइ॥ ३॥ मोरठ॥ महरिपुकारतकु
वरकन्हाई॥ मांखनधरयोंतुम्हारेकारण तुमकहंआजुअवार
कराई॥ १॥ आनिकोमलतुमरेमुखलायक तुमजेवहुमेरेनेंनजु
डाई॥ धौरीधूधऔटिराख्योंअपनेकाररधिकियोंजमाई॥ २
वाजतवारजसोदाकोंसवयहकहिकहिनिवेंजदराई॥ सू
रस्यामसुतजीयमातकेयहविपोगवरन्योंनहिंजाई॥ ३॥ रा॥ गौ.

Shrimad Gokulnathji Maharaj

री॥ माखन खाउ लाल मेरे आइ बैठो आइ संग रेमऊ॥१॥ तुमजेंवो
मैया बलि जाई खेलत आज अबार लगाई॥२॥ सद माखन अति
हित मे राख्यो आजु नहीं तनके नें चाख्यो॥३॥ प्रात हि तें मोदियेज
गाई दोठोंक हि जगाय दोउ भाई॥४॥ मैं बैठी तुम पंथ निहारों
आवो तुम पर तनमन वारों॥५॥ व्रजजुवती सुनि सुनि यह बांनी
रोवति धरनि परी अकुलानी॥६॥ शोक सिंधु बूडी नंदरानी॥ सु
धि बुधि तन की सबै भुलानी॥७॥ सूरस्याम खेलत यह कीनों
मुख के हित जननी दुख दीनो॥८॥ राग नट॥ चौकि परी तन की
सुधि आई॥ आजु कहां व्रज सोर मचायो तब जान्यो दह मिंहौं
कन्हाई॥१॥ पुत्र पुत्र कहि के उठि दौरी व्याकुल जमुना तीर हि आ
ई॥ व्रजवनिता सब संग हि लागी और गए बलि अग्रज भाई
॥२॥ जननी व्याकुल देखि प्रबोधित धीरज करि नीके जदुराई
सूरस्याम कों नेंक नहीं डर जिन तू रोवें जसुमति माई॥३॥ रा
ग बिलावल॥ व्रजवासी सब उठे पुकारी॥ नंदमहर कहुं करत मु
रारी॥१॥ संकट में तुम करत सहाई॥ अबकें नाथ बचावन आ
ई॥२॥ मात पिता अति ही दुख पावत॥ रोइ रोइ सब कृष्ण बुलावत
॥३॥ हलधर कहत सुनो व्रजवासी॥ वे अंतरजामी अविनासी
॥४॥ सूरदास प्रभु आनंद रासी॥ स्याम सहित जलरहि के वासी॥५॥ रा
ग होरी बिलावल॥ अहि सिर नृत्य मलन तन धरयो कन्हाई॥ नागनहूं जबहूं
काली सोवत उरग नारि देखे अकुलाई॥१॥ कह्यो कोन को बाल
करे तू बाप ... कहि भागि न जाई॥ छिन हूं में जरि भस्म होइ गो
जब देखे उठि जागि जभाई॥२॥ उरगनारि की बानी सुनि सुनि आ
पुहि से मन में मुसिकाई॥ मो कों कंस पठायो देखन अब या कों
तू देहि जगाई॥३॥ कहां कंस दिखरावत इनकों एक फूंक ही में
जरि जाई॥ पुनि पुनि कहत सूर के प्रभु को तू अब काहे न जाइ प
राई॥४॥ राग गौडमलार॥ कह्यो उरग करोया फन गकों वावरी॥
कह्यो मेरो मानि छांडि आपनी वांन अब ही परे जानि यह टे
क सब री॥१॥ बरी तो हि देखत मो हि दया अति ही भई कोंन
को सुवन कहां तू आयो॥ मरो वह कंस निरवंस या को होइ क
ह्यो यह गमन जो कों पठायो॥२॥ कंस को मारिहों धरनि अधा
रि हों अमर निरवारि हों उरग घरनी॥ सूर प्रभु के बचन सुन
न उरगी कह्यो जाहि अब कोंन मति मंद मरनी॥३॥ राग मा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.मा. झिरकिकें नारि दई गारि गिरधारी तब पूछ पर लात दें अहि जगायौ
५३ उग्र अकुलाय उरगाय खाराइ कों देखि बालक गरभ अति बढा
यौ ॥१॥ पूछ लीनी झटकि धरनि सों गहि पटकि फुंकरयौ फन गा
करि क्रोध फूले ॥ पूछ राखी चांपि रिसन काली कांपि देखि स
ब पाप औसान भूले ॥२॥ करत फन घात विष जात उतरात अ
ति नीर जरि जात नहि गात परसे ॥ सूर के स्याम प्रभु लोक अभि
राम बिनु जानि अहि राज विषज्वाल बरखे ॥३॥ राग नट ॥ हरि कों
लें अब ब्रज नहि रिखाउं ॥ कमल भार इहि ही पर लादों इहि कों आप
जनाउं ॥१॥ मात पिता अति ही दुख पावत देखे नैन मन ह्यां सुख
पाउं ॥ कमल पठाइ देहुं नृप आजु हि कालि कह्यो ब्रज ऊपर धा
ऊं ॥२॥ मन मन करत विचार यहै है अब काली कों दउरि षांऊ
सूरदास प्रभु की यह बांनी ब्रजवासीन कों दरस दिखराऊं ॥३॥ रा
ग कान्हरो ॥ उरग नारि सब कहत परस्पर देखौ या बालक की बा
त ॥ विषज्वाला जल जरत जमुन कों प्रानि तन लागत नहि तात
॥१॥ यह कछु तंत्र मंत्र है जानत अब ही सुर कों मल गात ॥ यह
अहि राज महा विषज्वाला कौं करत सहस फन घात ॥२॥ छुव
त न हि न याके विषकर अब लौ बच्यौ पुन्य पितमात ॥ सूर स्या
म सों हा उ विचारयौ काली अंग लपेटत जात ॥३॥ राग बिलावल
उरग भयो ही कोप पराइ ॥ गर्व वचन कहि कहि मुख भाखत
मो कों नाहि जानत अहिराइ ॥१॥ लियो लपेटि चरण ते सिख लों
अति ही मा सों करत ढिठाई ॥ चापी पूछ लुकावत अपनी जुव
तिन कों नाहि सकत दिखाइ ॥२॥ प्रभु अंतरजामी सब जानत
अब डारों सब सो चमिटाइ ॥ सूरदास प्रभु तन बिस्तारयौ का
ली बिकल भयो तब जाइ ॥३॥ राग कान्हरो ॥ जब हि स्याम तन अ
ति विस्तारयौ ॥ पट पटात लोटत अंग जान्यो सरण सरन अहि
ज पुकारयौ ॥१॥ यह बांनी सुनि कें करुणामय तब ही गये सकु
चाइ ॥ यह वचन सुनि दुरुपद सुता सुख दीनो बसन बढाइ ॥२॥ य
ह वचन सुनि गजराज उबारयो गरुड छांडि तहां आए ॥ यह वें
न सुनि लाखाग्रह में पंडव जरत बचाए ॥३॥ यह बांनी सहि ना
तिन प्रभु सों ऐसे परम कृपाल ॥ सूरदास प्रभु अंग सकोच्यो बा
कुल देख्यो ब्याल ॥४॥ राग गौरी ॥ नाथत ब्याल बिलंब न कीनों
पग सों चापि खैंचि बिबल नाथ्यौ बहुरि नाग कर सों गहि लीनों ॥१॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj

कूदि धरे ताके माथे पर कालीकरत बिचार ॥ श्रवणनि सुनें
रह्यो यह वांनी व्रजके हैं कृष्ण अवतार ॥२॥ तेई आय अवतरे
गोकुल में जांनी यह बात ॥ अस्तुति करन लगे पांसह सों मुख ध
न्य धन्य जगतात ॥३॥ बारबार कहि सरन पुकार्यो राखि राखि गो
पाल ॥ सूरदास प्रभु प्रगट भए जब देख्यो व्याल बेहाल ॥४॥ रा
बिलावल ॥ देखि रूप मन हरख भयो ॥ पूरन ब्रह्म सनातन तुम
ही ब्रज कृष्ण अवतार लयो ॥१॥ श्रीमुख कह्यो अब जहूं तुम जा
यो नाही ब्रज में भयो अवतार ॥ और कोन जो तुम सों बाचें सह
सफननि की फार ॥२॥ अनजांनत अपराध कियो प्रभु राखि सरन
मोहि लीजें ॥ सूरदास प्रभु मेरे धनि फन चरण कमल जिहि दी
जें ॥३॥ राग गौरी ॥ अब कीनों प्रभु मोहि सनाथ ॥ कोटि कोटि की
टों समनाही दरसन दियों जगत के नाथ ॥१॥ असरन सरन क
हावत हैं तुम कहत सुनी भगतन मुख बात ॥ मो अपराध छ
मा सब कीजें धिग मेरी बुधि कहत इहरात ॥२॥ नवचन सुनि का
ली मुख तें चरण धरे फन फनि प्रति आप ॥ सूरस्याम रेख्यो अहि
व्याकुल सुख दीने मेटे त्रैताप ॥३॥ राग गौरी ॥ जसुमति टेरति
कुवर कन्हैया ॥ आगें देखि कहत बलिरांमहि कहां रहे हो तुम
भैया ॥१॥ मेरो भैया अबहि आवत तोहि रिखाऊं मेया ॥ धीरज क
रो नेंक तुम देखो यह सुनि लेन बलैया ॥२॥ पुनि पुनि कहत मो
हि पर मोधन धरनि गिरी मुरझैया ॥ सूर बिना सुत भई अति व्या
कुल मेरो बाल कन्हैया ॥३॥ राग सोरठि ॥ व्रजवासी सब भये बेहा
ल ॥ कांन्ह कांन्ह कहि के टेरन हें व्याकुल गोपी गोपाल ॥१॥ अब कों
बसो जाइ व्रज हरि बिनु धृग जीवन नर नारि ॥ तुम बिन यह
गति भई सबन को कहुं रहे बनचारि ॥२॥ प्रात हितें जल भीत
र बैठे होन लगे जग जांम ॥ कमल लिये सूरज प्रभु आवत स
बसों कही बलिरांम ॥३॥ राग नट ॥ आवत उरगनाथें स्यांम ॥ नं
द नसो राम्मो पगु बालनि कहत हें बलिरांम ॥१॥ मोर मुकट बि
साल लोचन श्रवण कुंडल लोल ॥ कटि पीतांबर भेष नट
वर निर्त फन पर डोल ॥२॥ देव दिवि दुंदुभी बजावत सुमन
गन बरखाइ ॥ सूरस्यांम बिलोकि व्रजजन मात पिता सुख
पाइ ॥३॥ राग कांन्हरो ॥ मात पिता मन हरख बढायो ॥ मोर मुक
ट पीतांबर कांछें देख्यो अति ही निकट जब आयो ॥१॥ देव दुं

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू.सा. दृभीवजावत गावत निर्तत फण प्रतिरूपाम॥ व्रजवासी सब म
॥५५॥ रत निवाए हरि खिउ ठो सब वांम॥२॥ सो गा सिंधु बहि गयो तुरत
ही मुख कों सिंधु बढायो॥ सूरदास प्रभु कंस निकंदन कमल क
राय परलायो॥३॥ राग कान्हरो॥ फन फन पर निर्तत नंदनंदन॥ ज
लभीतर जगजा मरह्हे कहूं मियौं नहीं तन चंदन॥१॥ वह कांध
नी कर रिपी नांवर सीस मुकट प्रतिमो हत॥ मानों गिरि पर मो
र आनंद रत देखत व्रजजन मोहत॥२॥ अंबर थके अमर ललल
ना सब जय जय धुनि तिहू लोक॥ सूरस्याम काली पर निर्तत
आवत है व्रज ओक॥३॥ राग मोरठ॥ गोपाल राइ निर्तत फन प
र ऐसें॥ मांनो गिरि पर वारद देखत मोर आनंदित जैसें॥१॥ डोल
त मुकट सीस पर थरिकें कुंडल मंडित गंड॥ पीत वसन दामि
नी तन घन मनु तापर सुरकों दंड॥२॥ उरगनारि आगें सब ठाढी
मुख मुख अस्तुति गावें॥ सूरदास अपराध छिमा पों अब हम मांगो
पति पावें॥३॥ राग कान्हरो॥ बहुत कृपा अब करो गुसाई॥ एती कृ
पा करी नहि काहू जेतें लये राखि सरनाई॥१॥ कृपा करी प्रहला
द भक्त कों द्रुपद सुता पति राखी॥ गहि मुख निगज राज छुडायो वे
द पुरान न भाखी॥२॥ जो कछु कृपा करी काली कों सो काहू न हि
कीन॥ कोटि ब्रह्मांड रोम प्रति अंगनि ते फन पग प्रति दीन॥३॥ ध
रनि सीस धरे सेस बंधायो इह भय अधिक सभायौ॥ पूरन कृ
पा करी सूरज प्रभु पग फन फन प्रति धार्यो॥४॥ राग सोरठि॥ ठा
ढे देखत है व्रजवासी॥ कर जोरें अहि नारि विनय करें कहा अध
न्य अविनासी॥१॥ जे पद कमल भजन महिमा ते जन प्रहलाद ब
चाए॥ जे पद कमल रमा उर राखत परसि सुरसरी आए॥२॥ जे
पद कमल संभु की संपति ते फन प्रति प्रति धरे कन्हाई॥ जे पद
परसि सिला उद्धारी गए ग्रेह पांडव की पिरिआई॥३॥ जे पद व्रज जु
वती सुख दायक ते पद ति हूं पुर वांमन॥ सूर स्याम ते पद फन
फन प्रति निर्तत अहि कीयो पावन॥४॥ राग सोरठ॥ ऐसी कृपा
करी नहि काहू॥ खंभ प्रगट प्रहलाद बचायो ऐसी कृपा न तांहू॥१॥
ऐसी कृपा करी नहि गज कों पाव पयादे धाये॥ ऐसी कृपा करी
नहि भीखम पन तें जा सत राखी॥२॥ ऐसी कृपा करी नंदनंद सो म
नि सो ई पूरन इन पायो॥ सूरदास प्रभु धन्य कंस जिन तुम सों
कमल मगायो॥३॥ राग कान्हरो॥ सुनो कृपानिधि जिती कृपा तु

Shrimad Gokulnathji Maharaj

मया काली कों कीनी ॥ इती बड़ाई कवहूं के सव काहू कों नहि दीनी
॥२॥ जे पद कमल सुकृत जल परस्यो अजो धरें शिव सीस ॥ जे पद रा
गट धरे फन फन प्रति धन्य धन्य पा जगदीस ॥२॥ एक अंड कों भार
वहुत नहि गर्भ धर्यो जिय त्रास ॥ इहि अरु अधिक सहस्र सिर अपने
अमित अंड मय भेष ॥३॥ सुर नर असुर कीट पसु पंछी सव के सव
प्रभु तेरे ॥ सूरदास अपराध छमो अब या अपने जन केरे ॥४॥ रा
ग कान्हरो ॥ चरण कमल वंदौं जगदीस सु जो गोधन संग धाए ॥ जे
पद कमल धूरि लपटाने कर गहि कें गोपीन उर लाए ॥१॥ जे पद प
दम जुधिष्ठिर पूजे राजसूय मांझ चलि आए ॥ जे पद पदम पितामह
हू भीषम भारत में देखन पाए ॥२॥ जे पद पदम संभु चतुरानन
हृदै कमल में राखे ॥ जे पद पदम रमा उर भूखन वेद भागवत भाखे
॥३॥ जे पद पदम लोक त्रै पावन वलि राजा के पीठ धरे ॥ जे पद पदम
सूर के स्वामी काली फन पर नृत्य करे ॥४॥ राग कान्हरो ॥ वंदौं में च
रण सरोज तुम्हारे ॥ सुंदर स्याम कमल दल लोचन ललित त्रिभं
गी प्रान पति प्यारे ॥१॥ जे पद पदम सदा सिव के धन सिंधु सुता उ
र ते नहि टारे ॥ जे पद पदम तात के त्रासत मन वच क्रम प्रहलाद सं
भारे ॥२॥ जे पद पदम फिरत वृंदावन अहि सिर धरि अगनित रिपु
मारे ॥ जे पद पदम परसि रिषि पतनी अरो व्याधि अमित खल ता
रे ॥३॥ जे पद पदम फिरत पांडव गृह धूत भए सव काज सवारे ॥ ते
पद पंकज सूरदास प्रभु अव काली फन फन प्रति धारे ॥४॥ राग
कान्हरो ॥ सिर धर सुजस धर मुरली धर धरनी धर ॥ माधव पीतांव
र मुकट धर गोप धर डिग धर ॥१॥ कंवु कंठ धरि कौस्तुभ मणि ध
र वनमाला धर मुक्त माल धर ॥ सूरदास के प्रभू जगत धर दुष्ट
कंस के सधरि काली फन चरण कमल धर ॥२॥ राग कान्हरो
गरुड त्रास मन ने जो उह्यां आयो ॥ तो प्रभु चरण कमल फन फन प्र
ति अपने सीस धरायौ ॥१॥ धनि रिषि स्राप दियो खगपति कों ह्यां
त वर ह्यौं छिपाई ॥ प्रभु वाहन गरुड भाजि वच्यौं अहि ना तर ले तो
पाई ॥२॥ यह सुनि कृपा करी नंद नंदन चरण चिन्ह प्रगटाए ॥ सूर
दास प्रभु अभय ता हि कीनी उरग री पै पौहे चाए ॥३॥ राग कल्या
न ॥ जय जय धुनि अमर नभ कीनो ॥ धन्य धन्य जगदीस गुसाई
अपनो कर निहि लीनो ॥१॥ अभय कियो फण चरण चिन्ह धरि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू॰सा जांनि आपनों दास ॥ जलतें काढि कृपा करि पठयौ मैं रि गरुड़ की त्रा
५५ स ॥ २ ॥ अस्तुति करत अमर गन बहु र्यौ गए आपने लोक ॥ सूर स्यां
म मिलि मात पिता कों दृष्टि कियो तन सोक ॥ ३ ॥ रा ॥ न ॥ र ॥ लीनों ज
ननी कंठ लगाय ॥ अंग पुलकित रोम गदगद सुख स्रम सूत बहा
य ॥ १ ॥ मैं तुमैं बरजति रही हरि जमुन तट जिन जाय ॥ कह्यौ मेरो कि
यौ न कान न गये खेलन धाइ ॥ २ ॥ मैं कह्यौ निसि स्वप्न तो सौं प्रग
ट भयो सु आय ॥ कंस कमल मंगाय पठए तात गये डराइ ॥ ३ ॥ ग्वा
ल संग मिलि गेंद खेलन आय जमुना तीर ॥ काहू लें मोहि डारि दीनों
कालि धार ह नीर ॥ ४ ॥ यह कही तब उरग मोसों कीन पठायो तोहि
मैं कह्यौ नृप कंस पठायो कमल कारन मोहि ॥ ५ ॥ यह सुनत उरग क
मल दें मोहि लीयो पीठ चढाइ ॥ सूर यह कहि जननि बोध्यो तुमैं दे
खौ आइ ॥ ६ ॥ रा ॥ गौ ॥ री ॥ ब्रजवासी न सौं कहत न[...]हरखाई ॥ जमुना ती
र आजु सुख कीजें कंस चढे ब्रज ऊपर धाई ॥ कमल मंगाय
लिये तब ऊपर कोरिक मलत बारि एक ठाई ॥ बहुत विनय क
रि पाती पठाई नृप लीजे सब पोहोंप गनाई ॥ २ ॥ तैसी मो कों आ
ग्या दीजें बहुत धरे जल मांझ [...] आई ॥ सूरदास प्रभु तुव प्रताप
तें काली आय गयो पहुंचाई ॥ ३ ॥ रा ॥ गौ ॥ र ॥ ठ ॥ सहस सकट भरि क
मल चलाई ॥ अपने समाचार और गोप जे तिन के साथ पठाइ
१ ॥ और बहुत कारन दधि माखन अहिरन कांधें जोरि ॥ नृप के
हाथ पत्री दीजो विनती कीजो मोरि ॥ २ ॥ कोरिक मल आपु नन्द
प मांगे तीनि कोरि में पाये ॥ नृपनि हमें अपनों करि जांनों तुम
लायक हम नाहीं ॥ ३ ॥ सूरदास कहियो नृप आगें तुम में छांडि क
हां जाई ॥ ४ ॥ रा ॥ गौ ॥ ड ॥ म ॥ ला ॥ र ॥ कमल के भार सकट नि भार दधि
मार लाये सब ग्वारन पद्वार आये ॥ तुरत ही भोर गन कौरि सक
ट नि जोरि भए ठाडे पौरि नव सुनाये ॥ १ ॥ सुनत यह बात उन रात
औ दुरात मन नमहुं लत निकसि नृप आप आये ॥ देखि दरखार
सब ग्वार नहि करूं पार कमल के भार सकट नि सजाये ॥ २ ॥ अति
ही बक्रत भयो ज्ञान हरि ही लयो सोच मन में ठयो कहां कीनों
गोप सिर मोर नृप और कर जोरि करि पौह्रीप के काज नृप पत्र
दीनों ॥ ३ ॥ पहुं कह्यौ नंद नृप बंदि दही ह्रदेप गयो मम पुत्र तू हिला
म लीनों ॥ उठ्यों अकुलाइ अरपाइ तुरत नहि गयो पौहोंचायत तब आ

Shrimad Gokulnathji Maharaj

दूरीनों ॥ ४ ॥ यह कह्यौं स्याम वलिरांम लीजों नाम राज कौं काज इ
महि कीनों ॥ औरें सब गोप आवत जान नृप वान कहै तन मन सू
मोहि नवीनों ॥ ५ ॥ रा ॥ मलार ॥ ग्वालन हरि की वात सुनाई ॥ यह
सुनि कंस गयो मुरझाई ॥ १ ॥ तब मन ही मन कर त विचारा ॥ यह
कोऊ नहीं भलों अवतारा ॥ २ ॥ पासों मेरों नहीं उवारा ॥ मोहि मारि
मारें परिवारा ॥ ३ ॥ दैत्य गये ते वहुरि न आये ॥ काली नें एकौ बचि
आए ॥ ४ ॥ ताही पर ध्यै कमल लिवाये ॥ सहस सकट भरि ग्वालप
ठाए ॥ ५ ॥ एक ग्वाल में उन हि वितायौ ॥ कोटि ग्वाल मम सदन वला
यों ॥ ६ ॥ ग्वालन देखि मन ही मन कांपे ॥ सुनि मन में यह अंकुर थापे
॥ ७ ॥ आसु ही आपुन पानि थल तपागो ॥ सूर देखि कमलन उठि भा
ग्यो ॥ ८ ॥ रा ॥ नट ॥ भीतर लए गोप बुलाई ॥ इंद्रै दुख सुख ही लिखली
कर व्रज ही रिये पठाई ॥ १ ॥ तं स कौं सिरोपाव दीनों गोप सव हि
पहराइ यह कह्यौ वलिराम स्यामहि देखि हों दे पठाइ ॥ २ ॥ अति
ही पुरुषारंथ कियौं उन कमल वेई ल्याइ सूर प्रभु कौं देखि हों में
एक दिवस वुलाइ ॥ ३ ॥ रा ॥ गौंड मलार ॥ कमल पोहो चाय सव गो
प आए ॥ गये जमुना तीर भई अति ही भीर देखिनं दनी धनुर मखें बु
लाये ॥ १ ॥ दियौं सिरपाव नृपराइ में हरि कौं आप सव पहरा
वनी हरि खाए ॥ स्याम वलिरांम कौं नांम जव ही लियो सुनत नग
यौं सु कि वे कमल ल्याए ॥ २ ॥ अति ही सुख पाइ कौं लियौं सिरना
यकें हरष नंदराय के मन वढाए ॥ सूर नंद सुवन देखें एक दि
न देखि हों पहुप लें धाइ सुख उहि वुलाए ॥ ३ ॥ रा ॥ धनाश्री ॥ यह
सुनि नंद व हो सुख पाए ॥ कमल पठाए नृप नें लीनें देखन सु
वन वुलाए ॥ १ ॥ सेवा वहुत मानि है लीनी व्रज नारीन मन हर
ख वढाए ॥ वडी वात भई कमल पठाए मनों जिन सुनत ते आपुना
ल्याए ॥ २ ॥ आनंद करत जमुन तट व्रज जन खेलत खात हि
दिवस विहाए ॥ इक सुख स्याम वचे काली तें इक सुख कंस हि क
मल चलाए ॥ ३ ॥ हमसे तकां नृ वलिराम सुनत यह हम कौं देख
न नृपति मगांए ॥ सूरदास प्रभु मात पिता हि तें कमल को रिदें व
जहि चाए ॥ ४ ॥ संषय काली दमन लीला ॥ रा ॥ विलावल ॥ तु
म जाहु वालिक छांडि जमुना मांई मेरों जागि है ॥ अंग कारों मु
ख विसामें दृष्टि परों तुहि लागि है ॥ १ ॥ तुम आए वालक जुवा से
लें आए दूर दूरा दूयां ॥ लेहु मि सुहेराय दार थ जागि हैं मेरों सा
इयां ॥ २ ॥ नाहि नागि निजु वाषे लो नारी दूर न दूरा इयां । केसकार

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. ५६

नगेंद खेली कमलकारन आइयां ॥ ३ ॥ नवधाइ धाइयो जः जगा
योंमनों छूटेहू तियां ॥ सहस्रफनफुंकारछांडी जाइ काली नाथि
यां ॥ ४ ॥ जबनाथि काली लै चले नागिनी कह्यों एवी रहो ॥ अबकें
चिराय हैं पति हि जे करें तुमरी सेव हों ॥ ५ ॥ नवलालपैकंजकियो
वाहरभयों व्रजमें भावना ॥ मथुरा सुनगरी हू कंसराजा सूरमन
हिंविधावना ॥ ६ ॥ राग देवगंधार ॥ काली विषगंजन दह आये ॥ देखे
मृतक बछ बालक सब कृपाकटाक्ष जिवाए ॥ १ ॥ बहुउन पान हो
त गोकुलमें चिंता रहोभुलाई ॥ बड़ो बेर भई अजहूं नै आए गहहक
तकथुन सुहाय ॥ २ ॥ नंदादिक गोप गोपी मिलि चले सकल हीं धा
य ॥ हृदसे जाइ उरगालपटाने प्रान तजन अकुलाइ ॥ ३ ॥ अतिगंभीर
धीर निज जानत संकरषन के भाइ ॥ बसकीयों नाग सूरदास प्र
भु आनंद उरन समाइ ॥ ४ ॥ राग आसावरी ॥ सबै व्रजजमुना के गायों
तीर कालीके सिर ऊपर निर्तत संकर्षन को बीर ॥ १ ॥ उरगनारि आ
गें भई ठाढी नैनन निढारति नीर ॥ पतिकों दान देहु व्रजनायक नि
हूलोक धरि धीर ॥ २ ॥ पहरें चीर कंठ आभूषण सोभित स्याम सरीर
सूरदास प्रभु कों व्रजवासी [illegible] अंकभरत अहीर ॥ ३ ॥ अपुबड़ी
काली लीला ॥ राग बिलावल ॥ नारद कहि समुझाइ कंस नपरा
जकों ॥ तव पठयों व्रजदूत [illegible] के काजकों ॥ टेक ॥ बारबार रिषिरा
जकंस मुख अस्तुति गानी ॥ तब पठयो व्रजदूत सुनी नारद मुख
बानी ॥ धन्य धन्य रिषिराज तुम भलो मंत्र दीयो मोहि ॥ दूत चला
यों तुरत ही अबहि जाय व्रजजोहि ॥ १ ॥ यह कहियों तजाइ कमल
नृपकों [illegible] आए ॥ पत्र दीयो लिखि हाथ कह्यों बहुभांति जनाए
काली कमलन हि आवही तुमकों नाही चैन ॥ सिरन बाइक जो
रिकें चल्यो दूत सुनि बैन ॥ २ ॥ तुरत पठायो दूत नंद घर ही में आयो
कमल पोहोप को भार कंस नप बेगि मगायो ॥ कालिहिं पोहोचे
आइकें तब बसिहो व्रज लोक ॥ गोकुल में जो सुख कियो ते कारि दे
हों सोक ॥ ३ ॥ जो न पठावहु पोहोप कहोगे तैसी मोकहुं ॥ यह जानि
हूं गोपन से हिन धरिन्पाऊं तो कहुं ॥ बोलि मोहन नंद रहूं न कोप
कीं मगाउं कालि ॥ पहुप बेगि पठावनें जो यावसों व्रजपाल
४ ॥ यह सुनि नंद डराइ अति हिमनमन अकुलाने ॥ यह कासन कौं
होइ काल अपनो कोजानें ॥ औरम हरि सव बोलि कें कैसें कं
हूं पाइ ॥ कालि प्रान व्रजमारि हैं बांधि सबन ले जाइ ॥ ५ ॥ बलि मोहु
न कों नाउ धरयो कहि पकरि मगाउं ॥ ताते अति भयो सोच लगन

Shrimad Gokulnathji Maharaj

मुनिमोहिडराउं॥ यहसुनिसिरनाएसवैमुखहिनआवनवात
वारवारनेरवकहतहैहोयहलरिकनपरघात॥६॥ केवालक
नभगायजांहिलैआनभूमिपर॥ वरुहमकोंलैजाय स्यांमव
लिरांमवचैंघर महरिसवैव्रजनारिसोंपूछनिकोंनउपाइ
जनमहीतैंकरवटटरीअवकेनाहिविचाइ॥७॥ कोउकहैंद्रुह
ह्मनतृपतिजेतोधनचाहैं॥ कोउकहैंजेमसरणसवैमिलिवु
धिअवगाहैं॥ इहैंसोचसवपागिरहेकहतनहीनिरवारि॥ व्र
जभीतरनंदभवनमेंहोघरघरयहैविचार॥८॥ अंतरजांमी
जांनिनंदसोंपूछनवाता॥ कहांकरतहोसोचकहोंकछुमो
सोंताता॥ कहांकहोंमैंरलाडिलेकहूनवडोसंताप॥ मथुराप
तिकेजियकछूतुमपरउपज्योपाप॥९॥ कालीदहकेपोहोप
मांगिपठ्येहमसोंउन॥ तवतेमोमनसोचजवहितैंवातपरी
सुन॥ जोपठवैनहिकालिहीगोकुलखालनमारि॥ मोसमेतदो
उवंधुतुमकालिहीलेइवधाइ॥१०॥ यहकहिपठ्योकंसतवहि
तेंसोचपह्योमोहि॥ प्रथमपूतनाआइसवहुनदुखदैंसुगईतोहि
तृनावर्तकीघाततैंवहुतनवच्योसवपाइ॥ सकटाकेसींतेंवच्यौ
अवकोकरैसहाइ॥११॥ अघासुरतेंवच्योवहुतनदुखसहोंक
न्हाई॥ एतीकरवरहैंटरीलेनकीयोंसहाई॥ वकासुरह्योंमुखवाइ
तहांभयोधर्मसहाई॥ तवतेंअवगाढीपरीमोकोंकछुनसुहाई
१२॥ वावातुमहिकहूनतोहिस्योंकोंनउवारें॥ सोईव्रजभीतरअग
टकैसगहिकैसपछारें॥ यहव्रजवहीहरिसोंसुनीनंदमनहिपा
तियाइ॥ गनिनगिरजोसंगारह्योसोकपिलेइसहाइ॥१३॥ नंदहि
यहसमुझाइकांन्हउठिखेलनधाए॥ जहांव्रजवालकहुतेतहां
पुनिआपुनआए॥ गोपसुतननसोंयोंकह्योंखेलनगेंदमगाइ
श्रीदामायहसुनतहीघरतेल्याएजाइ॥१४॥ सवैपरसपरमारख
रैंकोउकांनिनमांनें॥ कोनवडेकोछोटभेदभेदानहिजांनें॥
खेलतजमुनातटगयेआपुहिल्याएटारि॥ सीदामाकेहाथतेंद
ईगेंदयहडारि॥१५॥ श्रीदामागहिफेंटकह्योंहमतुमएकजोटा
कहांभयोंजोनंदवडेतुमतिनकेढोटा॥ खेलतमेंकहांछोटवडु
हमहूमहरिकेपूत॥ गेंददीएहीपेंवनेंछांडिदेहुमतिधूत॥१६॥
तुमसोंधूतोकहांकरोंधूतोंनाहिदेष्यों॥ प्रथमपूतनानारिकाग
सकटासुरपेष्यो॥ तृणावर्तपटकोंसिलाअघावकासिंघारि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

मू.सा. तुमनारिन संगहीरहे अवधूतन कहत समारि ॥ १६ ॥ कमल पठाऊं को
५८ रिकंसकों रोषनिवारों ॥ तुम देखत पुनि जाहु कंस जीवत धरि
मारों ॥ फेटलई तब फेंटकि कें चढिकरंवपरजाउ ॥ सखा सबें ठाढे
हुसत मोहन गए हें पराउ ॥ १७ ॥ सीदामा चले रोइजाय कहि हों
नंद आगे गेंद लेहु तुम आइ मोहि उर पावन लागे ॥ यह कहि
कूदि परे सलिल की नैन रवर साज ॥ कोमल तन धरि कें गये
जहां सोवत अहिराज ॥ १८ ॥ येहि अंतर नंदघरनिक हों हृदि भू
खि हैं ॥ खेलत ते अब आइ भूख कहि मोहि सुने हैं ॥ अति आतु
र भीतर चली भोजन साजन आप ॥ छीक सुनत अपसगुन की
कहां भयो यह पाप ॥ १९ ॥ अजिर चली पछितात छीक कों दोष
निवारें ॥ मंजारी गई काटि पंथ निकसत ही द्वारें ॥ जननी जिय
व्याकुल भई कान्ह अबेर लगाइ ॥ कुसगुन आगें हु तभए कु
सल रहें दोउ भाइ ॥ २० ॥ स्यांम परे दह कूदि मुसनजिय गयों जना
इ ॥ मातु आए नंद गेंद पूछत दोउ भाई ॥ नंद घरनि सों यह क
हति मो कों लगत उदास ॥ येहि अंतर हरि तहां गए जहां काली को
वास ॥ २१ ॥ देख्यों पन्नगजाइ आपुहि निर्भय भये सोवत ॥ बेठी त
हां अहिनारि डरी बालक कों जोवत ॥ भागि भागि सुत कौन को
अति कोमल तेरो गात ॥ एक फूंक कों नहीं तू विषज्वाला अति
तात ॥ २२ ॥ नव हरि कियें सो अचारि नारि पति देहु जगाई ॥ आयो रे
खन याहि कंस मोहि दियो पठाई ॥ कंस कोटि जरि जाहिगे विष
की एक फुंकार ॥ कह्यों मानि मेरो जाहि तू अति बालक सकुमा
र ॥ २३ ॥ येहि अंतर सब सखा जाय ब्रज नंद सुनायों ॥ हम संग खेल
त स्यांम जाय दह मांहि समायों ॥ बूडि गयो उछ कों नहिं या वानहि
वडी वेर ॥ कूदि परे हों चढि करम ते खबरि न लेत सवेर ॥ २४ ॥ आह
आह करि नंद सुनत दोरे जमुना जित ॥ जसुमति सुनत हि वात च
लि सो वन तुरत हिं तित ॥ ब्रजवासी नरनारि सब गिरत परत च
ले धाउ ॥ बूड्यो कान्ह सबसुन्यो अति व्याकुल मुरझाइ ॥ २५ ॥ ज
हां तहां परी पुकार कान्ह बिनु भए उदासी ॥ कौन काहि सों कहत
अतिहि व्याकुल ब्रजवासी ॥ नंद जसोदा अति विकल परत जमु
न में धाउ ॥ ओरगोप उपनंद मिलि वांह पकरि लें आइ ॥ २६ ॥ धेनु
फिरति बिललाति बछ नहि कोऊ लगावें ॥ नंद जसोदा कहत
कान्ह बिनु कोन चरावें ॥ यह सुनि ब्रजवासी सकल परे धरनि ।

मुरझाइ॥ हायहायकरिकहतसबकांनूरह्योंकितजाइ॥२७
नंदजुकारततरोइदुखुदईमोकोंछांड्यो॥कछुदिनमोहलगाइ।
लालजलभीतरमाड्यो॥योंकहिकेंधरनीगिरतज्योंतरुका
टिगिराइ नंदघरनियहदेषिकेंकांनूहिटेरिबुलाइ॥२८॥नि
ठुरभएसुतआजुतातकौछोहमआवत॥यहकहिकेंअकु
लाइजलहिभीतरकोंधावत॥गिरतधायजमुनासलिलगहि
आनतिब्रजनारि॥नेंकुरह्योंसबमरेंगीकोहूंजीवनिहारि॥२९
स्यांमगयेरहबूडिअषाधगजीवनजगकौ॥सिरफोरतगिरि
जातभूषणतोरतअंगअंगकौ॥मुरझिपरीततसुधिगईप्रांनर
ह्योंकहुंजाइ॥हलधरआएधाइकेंजननीगईमुरझाय॥३०॥नाक
मूंदिजलसींचिजननिकहिकहिबहुटेह्यौं॥बारबारझकझोरि।
नेंकुहलधरतनहेर्यो॥कहतउठीबलिरांमसोंकिततहितज्यौं
लघुभ्रात॥कांन्हरजुमबिनुरहतनहिंतुमसोंबोरहिजात॥३१
अबतुमहूंजिनिजाहुसबरोइकदेहुपुकारा॥कांन्हहिल्यावेंजाइ
आजुअबसेरकराई॥छाकपठाउतजोरकेंमगनसोकसरसां
ज॥प्रानकछुखापोंनहींभूखेंह्वैगोहसांझ॥३२॥कबहूंकहतिघ
रगयेकबहूंबनगयेवतावत॥कहूंखेलतहोंलालटेरियोंक
हतबुलावत॥जागिपरीलखिमोहतेरोवंतदेखेलोग॥नवजां
न्योंहरिदहगिरेउफनोंपहुरिविजोग॥३३॥धगधगनंदहिका
ह्योंओरकेंतेहिलीहों॥मरननाहिंमोहिंमारिबोहेगिब्रजब
सिबोलेंहों॥सोसदषमेंमरनसुखमनकरिदेषोग्पान॥व्या
कुलधरनीमेंपरेनंदभएबिनुप्रान॥३४॥हरिकोंअग्रजबंधुतु
रतहींपिताउठायों॥माताकोंपरमोधिदहूंनधीरजधरवायों
मोहिंदुहाईनंदकीअबहींआवतस्यांम॥नाथनागलेंआइहें
तबकहियोंबलिरांम॥३५॥हलधरकह्योंसुनाइनंदजसुमति
ब्रजबासी॥तुष्यामरतबेकाजमरेंकोंबेअविनासी॥आदिपु
रुषमेंकहततेंहोंगयोंकमलकेकाज॥गिरधरकोंडरजिनकरों
उहेदेवनसिरताज॥३६॥उहअविनाशीआदिकरहुधीरजअ
पनेमन॥कालीछेरनाकलियेंआवननितेनफन॥कंसहिक
मलपठाइहेंकालीपठवेंदीप॥एकघरीधीरजकरोवेंठोंसत
तरुनीप॥३७॥फंनागिनसोंकह्योंस्यांमअहिकोनजगावें॥बा
लकबालककहतिकहांपतिकोंनउठावें॥कहांकंससकहांउर

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. गयहू अवहि रिसाउ तोहि ॥ ईंजगायमें कहत हैं तू नहि जानत मो २८
५८ हि ॥ ४४ ॥ छोटे मुख बड़ी बात कहत अवही मारि जेहैं ॥ तो चितवें क
रि क्रोध अरे इन नें जारि जे हैं ॥ छोह लगत तोहि रे रिबकें काकों
बालक आहि ॥ खगपति सों समर वर करी तब पुरों को आहि ॥ अरे
बपुरों मो सों कहति तोहि बपुरी करि डारों ॥ एक लात सों चापि
नाथ तेरे कों मारों ॥ सोवत काहू न मारियें चलि आई यह बात
खगपति कों में ही कह्यो कहा कहत तू बात ॥ ४५ ॥ तुमहि विधा
ता भए औरे करता कोऊ नाहि ॥ अहि मारोगे आपु तनक से तन
क सी बांहि ॥ कहां कहें नहि कहिबनें अति कोमल सकुमार ॥ रे
हूं अबहि जगायकें जरि बरि ह्वेहों छार ॥ ४६ ॥ तू धों रे हि जगाइ
तोहि रूप एक छु नाहि ॥ परी कहां तोहि पार पाय अपने जरि
जाहि ॥ हम कों बालक कहति हैं आपु बड़े की नारि ॥ बारति हि
बिनु काज ही वृथा बढावति रारि ॥ ४७ ॥ तुम ही सिहु जगाइ बहुत
जो करत ढिठाई ॥ पुनि मरिहैं पछितायगी अपि तु तेरे भाई ॥ अ
जहूं कह्यो करि जाहि तू मरिलैहें स्नान कोन ॥ पांच बरष के सांन
कों आगें तो कों होन ॥ ४८ ॥ फिर ... नारि रंगारि जाइ अहि आपु
जगायो ॥ पग सों चापी पूछ ... औ मानन भुलायो ॥ चरण मस
किधरनी रमें उरगगयों कु मिलाय ॥ काली मन में यह कह्यो य
ह आयो खगराउ ॥ ४९ ॥ देख्यो नेंन उघारि तहां एक बालक ठाढो
विषधर फूटवो पूछ पटकि अति तामस बाढ्यो ॥ सहस सों फण क
रिपु करे विष ज्वाला की झारि ॥ सहसों फण आघात करि नेकु न
तिनहि विकारि ॥ ५० ॥ नवकाली मन कहत पूछ चापी इन पग
सों ॥ अति हि उठ्यो अकुलाय रह्यो हरि वाहन खग सों ॥ यह बालक
धों कोंन कों कीनों जुद्ध बनाइ ॥ रए घाउ बहुतें कियो कछु न ल
ग्यो जरि जाय ॥ ५१ ॥ पुनि देख्यो हरि वोर पूछ चापी इन मेरी ॥ मन में
करत विचार लेहु में या कों घेरी ॥ रसपह्यो अहि जांनि कें गयों
अंग लपटाय ॥ काली नवगर वित भयो प्रभु दीयों दाउ बताय
॥ ५२ ॥ कहत उरग की नारि गर्व अति ही करि आयो ॥ आयपों हे
यो काल पगन अपने चलि आयो ॥ अहि नारि न सों यों कही मो
सम सर को ऊ नांहि ॥ एक फूंक विष ज्वाल की जलउी गुरुज छिना
हि ॥ ५३ ॥ गर्व वचन प्रभु सुनत तुरत ही तन विस्तार्यो ॥ इय ह
य करि उरग बार ही बार पुकार्यो ॥ सरन सरन अब मरत हैं मैं २७

Shrimad Gokulnathji Maharaj

नाहिंजांन्योंतोहि॥ चरपरातअंगफरनहैं।गसिआरिअवमोहि
धुवे॥सरनसरनधुनिसुनतलियोंप्रभुतनसकुचाई॥ छमोमोइ
अप्राधनजानेंकरीढिठाई॥ब्रजजनस्यामअवनारभयोमेंजानी
प्रभुआंजु॥बहुतनकियेफणघातमेंबदनदुरावततलाज॥५०॥
रह्योंगरुडकेत्रासआनियेहिठोरगुसांई॥बहुतनकृपामोहिकरी
दरसदीयोंजगसांई॥नंमफणिफणपरचरेंकृपाकीजदुराइ
फणफणपरफिरिचरणधरिनिरततहरखबढाइ॥५१॥धन्य
कृस्नधनिउरगजांनिजिनिकृपाकरीहरि॥धनियहपावनना
नीरधन्यब्रजवासीनारिनर॥धन्यकेंसधनिकमलयेधनिकृ
स्नाअवतार॥वडीकृपाउरगहिकरीफणप्रतिचरणविहार
॥५२॥शेषकरतजियगर्वअउकोंभारसीसधरि॥पूरणब्रह्मअनं
तनामकोंसकेंपारकरि॥फणफणप्रतिअतिभारभरिअमि
तअंउमयगान॥उरगनारिकरजोरिकेंकहतअसोंवान॥५३
देखतब्रजनरनारिनंदजसोमतिसमेतसब॥संकर्षनसोंक
हतिसुनोंसुतकान्हहीअब॥पेठिअंतरजलकमलविचउठ्यों
कष्णअकुलाइ॥रोवतनतेंबरजेसवेंत्योंहिनअग्रजभाइ॥५४॥आंव
तहैंवेस्यामपोंहोंपकालीसिरतीनें॥मातपिताब्रजदुखितजा
निहरिदरसनदीनें॥निर्ततकालीफणनिप्रतिदिवदुंदभीवजा
इ॥नटवरवपुकाछेनिरसवदेख्योउहभाइ॥५५॥आवतदेखे
स्यामहरखकीनेंब्रजवासी॥सोकसिंधुगयोंउतरिसिंधुआ
नंदप्रकासी॥जलबूडततनेंकामिलीज्योंतनहोंतअनंद॥ त्यों
ब्रजजनहुलससवेंआवतहैंनंदनंद॥५६॥मुनिदेखतपितुमात
रोमगदपुलकितभए॥उरउपज्योंआनंदप्रेमजललोचनसवें
छाए॥देवदुंदुभीवजावहीफणपरनिर्ततस्याम॥ब्रजवासीसव
कहतहैंधन्यधन्यवलिरांम॥५७॥उरगनारिकरजोरिकरतिअ
स्तुतिमुखठाढी॥गोपीजनअवलोकिरूपउहअतिरुचिवाढी
वडीकृपायांउरगकोंऐसीकहूंनपाइ॥सुरअरवरललनासहि
तजेजेधुनिमुखगाइ॥५८॥कृपाकरीप्रह्लाददखंभतेप्रगटभ
येजव॥कृपाकरीब्रजराजगरुडतजिधायगयेतव॥द्रुपदसुता
कोंकरिकृपावसनसमुद्रबढाइ॥नंदजसोदाजोंकृपासोयहका
लीपाइ॥५९॥तवकालीकरजोरिकह्योंप्रभुगरुडत्रासमोहि॥अव
करिहैंदंडोंतनेंनभाजिवदेखिहैंतोहि॥चरणचिन्हदरसनकर २८

स्कं.भा ५९ तगहिरहिहैं तबपाइ॥ उरगद्वीपकों करिविदा कह्योकरोंसुख
जाइ॥ ६१॥ प्रभुयातेंसुखकह्यौचरणजोफणफणपरसे॥ रमाहृ
दयजोबसतसुरसुरीसिवसिरसरसे॥ जन्मजन्मपावनभयौ
फणप्रतिचिन्हधराय॥ पाइपह्योउरगिनिसहितचल्योद्वीप
समुदाय॥ ६१॥ कालीपठयोद्वीपसुरनिसुरलोकपठाए॥ आपु
नआयेनिकसिकमलसबतरहिधराए॥ जलतेंआएस्या
मतबमिलेगोपसबधाइ॥ मातपितादोउधायकेंलीनेकंठ
लगाइ॥ ६२॥ फेरिजन्मभयोकान्हकहतलोचनभरिआए
जहांतहांसजनारिगोपआतुरह्वैधाए॥ अंकमभरिभरिलेत
हैंमनुनिधनीधनपाइ॥ मिलीधाइरोहिनिजननिचुंबतिले
तबलाइ॥ ६३॥ सखारोहिकेंमिलेगयेहरिहमपरिसकरि
धनिमाताधनिपिताधन्यसोदिनजेहिअवतरि॥ तुमब्रजजा
जीवनप्रानतहोंयहसुनिहंसेगोपाल॥ कौतिकचाहिकहमते
तुमखेलतयहख्याल॥ ६४॥ कालील्याय[illegible]कमलनेहिप
रधिल्याए॥ नैसेंकहिगयेस्याम[illegible]सोहमेंदिखाए॥ कंस
महोंनिहचेंभयोहमजांनीब्रजराज॥ सिंहनकोंछोनाभलो
कहांबडोगजराज॥ ६५॥ हरिहलधरतबमिलेहसेमनहिम
नहेंऊ॥ बंधुमिलतसबकहतभेस्नानेनहिकोऊ॥ मातपिता
ब्रजलोकसोंहरिकह्योनंदलाल॥ आजुरहोसबनिसिइहां
मेंटोंदुखजंजाल॥ ६६॥ सुनिसबहीसुखकरयौ आजुबसियेज
मुनातट॥ सीतलसलिलसुगंधपवनसुखतरबंसीवट॥ नं
दघरतेंमिष्टांनबहुषटरसलएमगाइ॥ महरिनंदउपनंदने
सबकोंदएपठाइ॥ ६७॥ दूतक्कीनोंसबधूरितुरतसुखदीनकन्ह
ई॥ दूतषभएब्रजलोगकंसकोंडरबिसराई॥ कमलकाररब्रज
मारतकेतेलेइगनाइ॥ नृपराजकोंअबडरकहांउपज्योसिंह
कन्हाइ॥ ६८॥ नंदकह्योकहिगरबकंसकोंकमलपठावहु॥ औ
रकमलजलधरोंकमलकोटिकछेआवहु॥ पहकहियोंमे
रीकहीकमलपठाएकोरि॥ कोरिकहेंजलमेंधरेयहविनती
एकछोर॥ ६९॥ अपनेसमजेगोपकमलतेहिसाथपठाए॥ म
नसबकेआनंदकांन्हजलतेंबचिआए॥ खेलतखातअन्हात
हीबासरगयोंबिहाइ॥ सुरस्यांमब्रजलोककोंजहांतहांसुखदा
इ॥ ७०॥ इतिश्रीभागवतेदशमस्कंधेषोडशोध्यायः॥ १६॥ अथ

Shrimad Gokulnathji Maharaj

बानलपांनकरन ॥ राग मारू ॥ कमलनैनकरुभरेव्याकुलमां
नों ॥ स्यांमकेवचनसुनिमनहींमनरह्यौंगुनिकाठज्योंभयोंक
हूंतनभुलानों ॥१॥ भयोंवेहालकेग्वालएदुरगतेवाविफिरि
जहिंआयों ॥ कह्यौंदावानलहिंलखोंनेरेवलहिंभस्मकरिद्यो
घघरहूंकहिंपठायों ॥२॥ चलोरिसपाइअतुराइतवधायकेंलो
कहुंजेजवनसहितसबजराऊं ॥ नृपतिकेलेंप्रांनमनुकियों
अभिमांनकरतअनुमांनचहूंपासधाऊं ॥३॥ वृंदाविपनआ
दिव्रजआदिगोकुलसहिततेरउपनंदसबग्वालजारों ॥ व
लोमगज्जातकहिंवानइतरातअतिसूरप्रभूसहितसंघार
डारों ॥४॥ राग कांन्हरों ॥ दसहुदिसातेजरतदावानलआवत
हैंव्रजजनपरधायो ॥ ज्वालाउठीअकुलाइवरावरिघातअ
पनीकरिसबपायों ॥१॥ वीरालेंआयोंमनमुदितआरदक
रिनृपकंसपठायों ॥ जाकिकरोंपरलयछिनमांतरव्रजवपुरा
केतवकरहुवायों ॥२॥ धरनिअकासभयोपूरननेंकनहीं
कहूंसाधिवचायों ॥ सूरस्यांमवलिरांमसंहारनगर्वसहितआ
तुरहेंआयों ॥३॥ राग कांन्हरों ॥ दावानलव्रजजनपरधायों ॥ गो
कुलव्रजवृंदावनतनदुमवीहूनहैंचहुंपासजरायों ॥१॥ घेरत
आवतदसोंदिसातेअतितनकीनेक्रोध ॥ नरनारीसबदेखि
चकृतभयेदावानलपांचहूंकोर ॥२॥ वहुतोंअसुरघातकि
येंआवतधावतपवनसमाज ॥ सूरस्यामव्रजकहतयहूउबो
दावानलआज ॥३॥ राग कांन्हरों ॥ आयगईदोंअतिहिंनिकट
हीं ॥ यहजांनतअववृजजनवचिहैंकरततसवैचलियेंजल
तटहीं ॥१॥ करिविचारउठिचलतवकहतिहैंजोरदेंघोंवहुपास
चकृतभएनारीनरजहांतहांभरिभरिलेतउसास ॥२॥ फरफ
रातभहरातलपटअतिदेखियतनहिंउवार ॥ देखतसूरअ
गिनिअधिकानीनभलोंपोंहोंचीधार ॥३॥ राग कांन्हरों ॥ व्रज
केलोगउठेअकुलाई ॥ ज्वालादेखिअकासवरावरिदसहूंदि
सानचहुपारपाई ॥१॥ फरफरातवनपातगिरतहैंधरनितरक
तएकसुनाइ ॥ जलवररवतगिरतरवांचेअववेकैसेंगिरिहैंत
सहाइ ॥२॥ लटकीजानिजरिजरिवेलीजरपटकतवासकास
कुसनाल ॥ उचरतिभरिअंगारगगनलोंसूरनिरखिव्रजजन

॥सू॰सा॰ बेहाल ॥३॥ राग कान्हरो ॥ नंद घरनि यह कहत पुकारें ॥ कोउ बरख
॥६०॥ त कोउ अग्नि जरावत दई पहोहूं खोज हमारें ॥१॥ तब गिरिवर
कर धर्यो कन्हैयां अब न बांचिहें मार तजारें ॥ जेंवन करन चली
तब भीतर छीक परी तिय आजु सबारें ॥२॥ ताको फल तुरत ही
कपायों सो उ बहो भयो धर्म सहारें ॥ अब सब को संघार होत है
छीक कियें एक सविचारें ॥३॥ कैसें हू ए बालक रेउ उबरें पुनि
पुनि सोच घनारे ॥ सूरस्याम यह कहत जननी सों रही मैया
धीरज धारें ॥४॥ राग गोंड मलार ॥ भहरात झहरात दावानल
आयों ॥ घेरि चहूं ओर करि सोर बन कों दह्यों धरनि आकास चहूं पा
स छायो ॥१॥ बरत बन बास भहरात कुस कांस जरि उडत तिहिं फा
स अति प्रबल धायो ॥ झपटि झपटत लपट पटक तत फूल फूटत
फल चटक लटकि लटनहु निचायो ॥२॥ अति अगनि झार भं
भार धुधकार करि उचट अंगार छिछार छायो ॥ बरत बन पात
भहरात झहरात अररात तरु महा धरनी गिरायो ॥३॥ भए बेहा
ल सब ग्वाल ब्रजनिधि रक्षक को राखि गोपाल कहि कहि पुकारयों
नैन के सी सकट बकी बक अघासुर बांम कर राखि गिरि लियों
उबारयों ॥४॥ नेंक धीरज धरो जिय कोउ जिनि डरो कही यह हटे
रि लोचन मुदाए ॥ [illegible] भीरि लियों सकनाइ मुखमें दियो सूर प्र
भु पियो ब्रजजन बचाए ॥५॥ राग गोंड मलार ॥ दावानल अचें ब्र
ज जन बचायो ॥ धरनि आकास लों ज्वालमाला प्रबल देखि च
हूं पास ब्रजवास आयो ॥१॥ भए बेहाल सब देखि नंदलाल तब
हसत ही ख्याल नंदलाल कीनो ॥ सबनि मूदे नेंन ताहि छिनलियों सें
न तबाज्यो नीर देें अचें लीनों ॥२॥ लखें अब नेंन भरि बुझि गई हसि
हसि कहत गुपाल ॥ सुनों सूर बेनों सर बगोहूं ऐसें प्रभु के ख्याल
॥३॥ राग बिलावल ॥ ताके सरन सहाय कन्हाई ॥ ताको कहा नहीं डर
भाई ॥१॥ बन घर जहां तहां संग डोलें ॥ खेलत साथ सबनि सों बो
लें ॥२॥ जाको ध्यान न पावें जोगी ॥ सो ब्रजमें माखन को भोगी
॥३॥ जाकी माया त्रिभुवन छावें ॥ सो जसुमति के प्रेम बधावें ॥४॥ सु
निजन जाको ध्यान न पावें ॥ ब्रजजन लें लें नाम बुलावें ॥५॥ सूर
नाहि सुर अंबर देखे जीवन जन्म सुफल करि लेखे ॥६॥ राग कां
न्हरो ॥ ब्रजबनिता सब कहत परस्पर ॥ नंद महरि को सुत बडवीर

Shrimad Gokulnathji Maharaj

देखोंधोंइहिकों पुरुषारथ्य अति कोमल देहें स्याम सरीर ॥२॥ गयों
पताल उरग गहि ल्यायों आनें नाथ सकम जलराय ॥ कमलका
जन पमार तहां कौं तिज लज निहिरिए पठाइ ॥२॥ दावानलन
मधरानें वरावारि दस हूं दिसा तें लीनें घेरि ॥ नेंन मुदाइ कह्यं दु
नकीनों कहूं नहीं जो देखें हेरि ॥३॥ एउ जपान मिटत इन हीं में कं
सकह्यां वपुराईं छार ॥ सूरस्याम अव नारव डोंव्रज राईहें कंसतों
संसार ॥४॥ रागसोरठि ॥ अति सुंदर नंद महरि हुटोंना ॥ निरखि
निरखि व्रजनारि कहत सव यहु जांननत कछु टोंना ॥१॥ कपट
रूप की तियानि पानि नव ही रहें अति छोंना ॥ छार सिला पर प
टकि तनाकों छें आयों वह वोंना ॥२॥ अघावकासुर तवहि सषा
हों प्रथम कियों वन गोंना ॥ सूरप्रगट गिरधरयों वांमकर हम
जानें वलि वोंना ॥३॥ रागमारू ॥ दावानलनर तव्रजजन उवारे ॥ पें
ठि गये जल गहि ॥ उरग कों नाथि ल्यों प्रगट फन नि प्रति
चरण धारें ॥१॥ देखि मुनि लोक सुरलोक वेंकुंठ जस सो मति हित
वस मुरारी ॥ तहां तहीं कर तन अस्तुति सुख निरखत नाथ धन्य जय
सब्द निहूं भवन भारी ॥२॥ सुखकि सौं जमुना तट एक दिन रेंनि
वसि प्रात ही गई ब्रज गोपनारी ॥ सूरप्रभु स्याम वलिराम नंद
धांम गए मात पितु घोष जन सुखकारी ॥३॥ रागकल्यान ॥ ज
व सव गाय भई एक ठाउं ग्वालन घर को घेरि चलाई ॥१॥ मध्य
में नव उपजी आगी ॥ दस हूं दिसा जरन सब लागी ॥२॥ न्वाइ रत
हरि सरनें आए ॥ सूर राखि अव त्रिभुवनराए ॥३॥ रागसारंग ॥ अ
व कें राखि लेहु गोपाल ॥ दस हूं दिसा दुसह दावानल उपजी है
इहि काल ॥१॥ पटकत वांस कांस कुस न चटक लटक तनाल न
माल ॥ उचरत अति अंगार प्रफुटित लपट तफपट कराल ॥२॥
धूम कें धवारी धरे अंवर चमकत उल्मक जाल ॥ हिरन वराह मो
र सास सपिक जरत जीव वेहाल ॥३॥ जिनि उर पों अवक आंखिन
मूंदौं हसि वोले नंदलाल ॥ सूरअगनि जव वदन समांनी अभ
य कियें व्रजवाल ॥४॥ रागसारंग ॥ जमुना तट सोभर मुनि राजें
करें तपस्या हरि मन लाई श्री हरि तहां विराजें ॥१॥ तहां एक दिन
मुनि कें आश्रम निगगरुड तहां चलि आयों ॥ छुधावंत हैं मीन प
कारिकें तहां वैठि तिन खायों ॥२॥ मुनि वरजें वहु विधि वांनी कहि
सो तिन कह्यों न कीनों ॥ कोधित है सोभर मुनि तव ही आप गरुड

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥स्कं०भा० कोंदीनों ॥३॥ अवयेहि आश्रम आवहु कवहूं तौतुरत हि जरि जाहूं
॥६२ सुनत गरुड उठि गयो तुरतहीं मुनि हिय अति दाहूं ॥४॥ सोयहवा
त और नहि जानें कालीयह मुनि पायो ॥ रमनदेस गरुड तव आ
यो वहु तव वहु दुखपायो ॥५॥ तव सर्पन मिलि मासमास प्रतिवल
हि देतियाहि भांति ॥ कालीकों समय जव आयो सो नहि मानी वा
त ॥६॥ तव हि गरुड सों जुद्ध कियो वहु काली अति हि रिसायो ॥
कालीमुख वहु कायौ तिनकों गरुड क्रोध करि धायो ॥७॥ मार्यो
वाहि पंखन करि तेहीं विकल होय तव भाज्यो ॥ लेयरि करुनसु
नामें धसि के तहां तियन जुत राज्यो ॥८॥ हरि तोहि दंड दे ययहमा
री अव न गरुड तो हि मारें ॥ चरणचिन्ह धरि किये विदा तेहि ज
ल निर्मल करि तुरे ॥९॥ गरुड देखि विसरनायो कालि हि मन अति
हर्ष वढायो ॥ सूरदास हरि पदकी महिमा जांनि सारण नको आ
यो ॥१०॥ राग कान्हरो ॥ याहि विधि सांझ भई जमुना तट ॥ परमें अनुथ
हकीनों कालीय हलीला देखत सुर ॥ भोजन साज लीए
मगायके तहां रहे सब संग ॥ कीनों विविधि भांति सब भोजन व
लिमोहन भरि रंग ॥२॥ सेन विश्राम करि सब सुख ... के सइहूं
दुखपायो ॥ कालीको परसंग सुन तहीं करमी उतपछितायो ॥
३॥ तव एक असुर आयो तिरनायोन यमन सो चनकरिये ॥ सवव्र
जवासी हें जमुनातट तिन हि मारि दुखहरिये ॥४॥ लेंवीरा चाहों
रिस तेहें अगिनि लगा वन आयो ॥ जागे गोप अगनि ज्वाला लखि
कृष्ण हरे कहि धायो ॥५॥ सुनत टेरि वानी निजजनकी सव
हीनें नमुरायो ॥ अगनि पान करि तुरत भजन वस दुखकी ऐसन सा
यो ॥६॥ हरखे सवें परम सुख पायो जसुमति मन हरखायो ॥ सूरद
स प्रभुके गुणगावत भव दुखसकल नसायो ॥७॥२६॥ इति श्रीभागव
ते महापुराणे दशमस्कंधे सप्त दशोध्यायः ॥१७॥ अथ प्रलंववध
राग भैरों ॥ एकदिवस प्रलंव दानव कोंलीनो कंसबुलाई ॥ क
ह्यो जाइ मारो नंदढोटा देहों वहु तव ढाई ॥१॥ माया वपु धरि गोप
पुत्र के चल्यो सुब्रज समुदाई ॥ वलिमोहन खेलत ग्वालन संग
देख्यो तिनकों आई ॥२॥ ग्वालरूप के मिल्यो निसाचर हलधर सें
नव नाई ॥ मनमोहन मनमें मुसिकाने खेलत भली जनाई ॥३॥
द्वेंवालक द्वें ठाढे सखाने खेलि रच्यौ व्रज खोर ॥ औरसखा स
व जुरि जुरि ठाढे आप रहनुज संगजोर ॥४॥ तवप्रलंव वडे नन्दका

द्यौं लें गयो पीठि चढाय ॥ उतरि परे हरि ताऊपरतें कीनों जुद्ध बनाइ ५
औरस मलखसवरो वन धाए आय गये नर नारि ॥ धाए नंद जसोदा धा
ए नित प्रति कहा गुहारि ॥ ६ ॥ ग्वाल रूप संग खेलन होइ कलें गयो
कांधें डारि ॥ ना जानों ये आहि धों को बहु ग्वाल रूप वपु धारि ॥ ७ ॥ ज
सुमति तब अकुलाइ परी धरतन की सुधि बिसराई ॥ नंद पुकार
त आरत व्याकुल टेरत पिरतिक न्हाई ॥ ८ ॥ दैत्य संघारि कृस्न जहां
आये ब्रजजन मरत जिवाइ ॥ टेरि मिले उर लाइ नंद सुत मिली
जसोदा माइ ॥ ९ ॥ खेलत रह्यो संग मिलि लें उडि गयो अकास ॥
आपुन ही गिरि परयो धरनि पर में उबरयो तिहि पास ॥ १० ॥ डरडरा
त जिय बात कहत हरि आए हैं उठि पास ॥ सूरस्याम घर जसुम
ति लें गई ब्रजजन मन हि हुलास ॥ ११ ॥ २ ॥ राग धनाश्री ॥ जसोदा पू
छति फिरति गुपाल हि ॥ सांझ ही की बिरियां भई सजनी में डरपति
जंजाल हि ॥ १ ॥ जब तें तनो वर्त ब्रज आयो तब हि सों हि जिय संक
बेन न होत फल एकौ मानक रत अनंक ॥ अहि अंतर बालक
सब आए नंद करत गुहारि ॥ सूरस्याम मो आंनि कोंन धों लें गयो
कांधें डारि ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ आजु बंसी याव हुत वचोरी ॥ खेलत
रह्यो घोख के बाहिर कोऊ आयो सिसु रूप रचोरी ॥ १ ॥ मिलि गयो
मनो सखा की नाईं लें चढ़ो हरि कंध सचोरी ॥ गगन उडायगा
यो लें स्याम हि आंनि धरनि पर आप रचोरी ॥ २ ॥ धर्म सहाइ हो
त हैं जहां तहां श्रम करि पूरब पुन्य पचोरी ॥ सूरस्याम अब के
बचि आए ब्रज घर घर सुख सिंधु मचोरी ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ बडे
मांगि हैं महरि महरके ॥ लें गयो पीठि चढाइ असुर इक कहां क
हां उबरन पाहरि के ॥ १ ॥ नंद घरनि कुलदेव मनावत तुमें लाज सु
त पहराघरके ॥ जहां तहां तुम हि सहाइ सदा हो जीवन है यह स्यां
म सहरके ॥ २ ॥ सुख भए नंद करत बधाई द्विज नरेत न कहां कहें
म रिके ॥ पंच सबद धुनि बाजत गावत नाचत मंगल छार छके
३ ॥ अंकम भरि भरि लेत स्याम कों ब्रज नर नारि अति हि मन ह
रखे ॥ सूरस्याम संतन सुखदाइक असुरन के उर सालक वरि
कें ॥ ४ ॥ राग मारू ॥ खेलत हरि जानकि तपारे ॥ जब तें जन्म भ
यो हैं तेरो तव हां तें यह भांति ललारे ॥ १ ॥ कोऊ आवति जुवती
मिसकरि कें कोऊ लें जात वनास कलारे ॥ अब लों बचे कृपा रे
वन की बहुत गए मरि सत्रु नुसारे ॥ २ ॥ हाहा करत पायत नेला

Shrimad Gokulnathji Maharaj

भू.सा. गनअरुबालिनि हरिजाहु मेरे बारे ॥ सुनों सूरज सुमति सुत बोधत
२७ ६२ विधि के चरितन सबें हें न्यारे ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ रितु ग्रीषम बसंत सम
लागत यह अद्भुत श्री वृंदावन छबि कालअकालन जागत
१ ऊंचे द्रुम जुरि रहे सबनन भांतिन में लपटी बेलि ॥ तनीं चें द्रुम
छोटे चहूं दिस रहे सघन एक मेल ॥ २ ॥ गिरि गोवर्द्धन ते झरना अ
निझरत अमृत सम नीर ॥ सीतल मंद चलत सुगंध लें मन कौं ह
रत समीर ॥ ३ ॥ हे सकल तरु कमल सरोवरि बहुत कुसुमन हीं
मोहें ॥ अति आह्लना भूमि सीतल तहां मधुकर धुनि मन मोहें
४ कोकिल कीर मोर सारस पिक अति सुख बानी बोलें ॥ तहां
विहरत बलदेव सहित हरि क्रीडत सखा कलोलें ॥ ५ ॥ अति गं
भीर मनोहर जमुना लहरिन लेत सुहाई ॥ धेनु चरत अति हीं सु
ख पावत श्री जमुना जल पाई ॥ ६ ॥ पल्लव फूल चंद्रका मस्तक नेन
वन धातु हि लावें ॥ कबहू सखन संग नाचें दोउ कबहू सग मिलि भा
वें ॥ ७ ॥ यहि विधि बन विहार मन मोहें असुर एक तहां आयो ॥ सूर
दास बलदेव हत्यो तें हि गिरि प्रलंब मरायो ॥ ८ ॥ राग सारंग ॥ त
हां एक असुर प्रलंब महाबल सखा रूप धरि आयो ॥ हरि तें हिलों
निखिल एक ठांनों चढा चढी स भायो ॥ १ ॥ राम स्याम दोउ सुखि
यां कें सखा वारि तिन बरीलो हरि सो कांधें चढाइ कें बट भंडीर त
र कीनों ॥ २ ॥ श्रीदामा अरु वृषभ सखा सब राम और के जीते
आपुन हरि कीनों यह कौतुक राम हूं सनन सब मीते ॥ ३ ॥ हरि पें श्री
दामा तब लीनों बल प्रलंब पर सोहें ॥ भद्रसेन पर वृषभ विराज
त विश्रु धन के मन मोहें ॥ ४ ॥ तब प्रलंब बट आगें धायो न भलो
तन बिस्तारयो ॥ भृकुटी डोर भयंकर कारो नेंन अग्नि सम बारयो
५ ॥ देवि विरंच सन कामन पाई आपुन फेरि सम्हारयो ॥ एक मुष्टिका
मल्लक दृष्टों मारि धरन पर डारयो ॥ ६ ॥ मिले सखा अरु कृष्ण तु
रत हीं भले भलें कहि भाष्यौ ॥ सूरदास हरि के गुण सुमिरन गा
इ गाइ उर राख्यौ ॥ ७ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे अष्टा
दशोध्यायः ॥ १८ ॥ राग रामकली ॥ कबकी टेरति कुवर कन्हाई ॥ ग्वा
ल सखा सब टेरत ठाढे अरु अग्रज बलभाई ॥ १ ॥ दाऊ सुत मइ हां
न आवत करों मुरारी आइ ॥ माता दुहूं कर देत बनदीनी जल
झारी भरि ल्याइ ॥ २ ॥ उत्तम विधि सों मुख पखरायो पुनि लें बसन अ
गोंछि ॥ दोउ भैया कछु करों कलेऊ लें बलाइ कर औंछि ॥ ३ ॥ सूर

Shrimad Gokulnathji Maharaj

मांखनदधितुरतजमायोंमधुमेवामिष्टांन॥ सूरस्यांमबलिरांमसंग
मिलिहृचिकरिलागेखांन॥४॥ राग नट॥ चलेबनधेंनुचराबनकांन्ह
गोपबालककछुसयानेनंदकेसुतनन्हांन॥१॥ हरखसोंजसुमति
पठाएस्यांमममनआनंद॥ गायगोसुतगोपबालकमध्यश्रीनंद
नंद॥२॥ सखाहरिकोंयहसिखावतछांडिजिनजाहुभाइ॥ सघन
वृंद्रावनअगमप्रतिजाउकहूंभुलाइ॥३॥ सूरकेप्रभुहसतमनमं
नसुनतहीयहबात॥ नेंकहूंनहिंसंगछाडेंवनहिंवोहेंतडरात॥४॥
राग धनाश्री॥ हरिदेतसवेंवनबालक॥ आनंदसहितजानहरिखे
लतसंगमिलिपसुपालक॥१॥ कोउगावतकोउवेंनुवजावत।
कोउनाचतकोउधावत॥ किलकतकांन्हदेखियहकोंतुकहरखि
खिसखाउरलावत॥२॥ भलीकरीतुममोकोंल्याएमैयाहरखि
पठाए॥ गोधनवृंदलियेंब्रजबालकजमुनातटपोंहोचाए॥३॥
चरतधेनुअपनेअपनेरंगवननिसघनतमारी॥ सूरसंग
मिलिगायचरावतजसुमतिकोंसुतवारो॥४॥ राग देवगंधार॥
द्रुमचढिकाहेनटेरोंगेया॥ धाइजानिसुवनिआगेंजेवृषभानु
हेंरैया॥१॥ घिरनिघिरततुमहीविसराधवमिलितनुवेठिरहे
बिडरातिफिरतिसकलवनभीतरएकेंएकभई॥२॥ छांडिखेल
सबदोरिजातहेंवोल्योजेंपाचिसई॥ सूरस्यामप्रभुप्रेमसमम्हके
मुरलीसुनिसबआयगई॥३॥ राग मारू॥ कहिकहिबोलतधो
रीकारी॥ देखोंधनमांगिगाइनकेंप्रीतिकरतवनवारी॥१॥
मोटीभईचरतिवृंदावननंदसुवनकीपाली॥ काहेनदूधदेहि
ब्रजपोखेसुलोकमलकीलाली॥२॥ वेनुश्रवणसुनिगोवर्द्धन
तेतनदंततनधरिचाली॥ वेगिहीआइसूरप्रभुपेंतेवोरहेजे
पाली॥३॥ राग गोरी॥ सांवरोंमनमोंहनमाई॥ देखिसखीवनतें
ब्रजआवतसुंदरनंदकुवारकन्हाई॥१॥ मोरचंद्रसिरमुकटबि
राजतमुखमुरलीधुनिसहजसुभाई॥ कुंडललोलकपोलन
छबिमधुरीबोलनिवरनीनजाई॥२॥ कुंचितकेससुदेसकमा
लपरमधुपनकीमालापहराई॥ मंदमंदमुसिकांनमनोघन
दामिनिदुरिदुरिदेतदिखाई॥३॥ लोचनललिततलाटभ्रकुटीबि
चमृगमदकीरेखबनाई॥ मनुमरजादिउलंघिअधिकवला
उमगिचलीअतिसुंदरताई॥४॥ सोभितसूरनिकटनासाकेअ
नुपमअधरनिकीअरुनाई॥ मानोंसुकसुरंगविंबफलचाखन

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा.
६३

कारनचोंपिचलाई॥५॥ राग केदारो॥ देखिरीदेखिआनंदकंद।चा-
लतचातकप्रेमघनलोचनचकोरनिचंद॥१॥ चलतकुंडलगंडमं-
डलकलकपोलकलोल॥ मांनोंनिधिआननअधरकरमुरलि
कादुहिभाइ॥२॥ मकरसरक्रीडनसखीमनुविविधिडहडहोल
मनोंउभयअभोजभाजनलेतसुधाभराइ॥३॥ स्यांमगातदुकू-
लदुतिमिलिलसततुलसीमाल॥ तडितघनसंजोगमांनोंस्रे-
णीकाशुकजाल॥४॥ अलकअवरलचारुहासविलासभ्रकुटी
भंग॥ सूरप्रभुकीनिरखिसोभाभईमनसापंग॥५॥ राग गोरी
रजनीमुखवनतेआवतभावतिमंदगयंदकिलटकनि॥ बा-
लकहंदविनोदहसावतकरतलबलकुटधेंनुकीहटकनि॥१॥
विगसतिगोपीमनोंकुमरसरूपसुधालोचनपुटगटकनि
पूरनकलाउदितमनुउडपतितिहिछिनविरहतिमरकीफट-
कनि॥२॥ लजितमनमथनिरखिविमलछबिरसिकरंगमोंह-
नकीमटकनि॥ मोहनलालछबीलोंगिरधरसूरदासबलि
नागरनटकनि॥३॥ राग गोरी॥ गायचरावतब्रजमेंडोलत॥ नादि
नरांमस्यांमग्वालनसंगखेलतहसतकलोलत॥१॥ गाइनकी
सबसुधिबिसरांनीखेलसवनसबकोई॥ चरतगाईमुंजावना-
भीतरआतिगहवरहेंहोई॥२॥ तहांअगिनिलागीदावानलगाय
देखिडकरांनी॥ रांमस्यांमग्वालनसंगखोजतसोचतहियदुख
मांनी॥३॥ देखिनिकलेअरुखुरखोजततबगाइनकेढिगआए
हरिटेरतबसीनोवरकरलेंयहविधिगायबुलाए॥४॥ सुनतबच
नदौरीसबआईप्यासलगीतबभारी॥ सखाआगितप्यासेअति
ढंकेंहरिकीओरनिहारी॥५॥ बहुरिसतेदावानलप्रगट्यौंदे
खतगोपडरानें॥ अहोकृष्णहमसरनितिहारीआगिजरतहम
जानें॥६॥ सुनतदीनवांनीग्वालनकीहरिकहीडरोनमनही
नेंनमूदिलेहुपाहीछिनसुनतमूदिदृगसबही॥७॥ तिहिछि-
नअगिनिपांनकरिमोहनदुखनासकहदिजोई॥ गायगोपसंग
आयजमुनतटपानकियोंजलसोई॥८॥ सबआसनहोयच
लेग्रहतबसांझजांनिमनमांही॥ गावतबेंनुबजावतगावत
नाचतब्रजजनदेखतधांही॥९॥ जसुमतिअतिप्रफुलितढेंदौ-
रीलीनोंगोदचढाई॥ सूरदाससुखदियोसबनकोंरांमस्यांम
दोउभाई॥१०॥ इतिश्रीभागवतेमहापुराणेदशमस्कंधे[illegible]कोनविं

Shrimad Gokulnathji Maharaj

श्री॥ नमो श्यायः॥ पद॥ राग विलावल॥ जागियेंगुपाललालअंस
मालमिटौंअंधकालउठौंजननीमुखदिखाई॥ मुकलित
भएकमलजालकुमुदवृंदवनविहालमेटौंजंजालत्रिवि
धितापतननसाई॥१॥ ठाढेसवसखाद्वार,कहतनंदकेकुमार
टेरतहैंवारवारआइयेंकन्हाई॥ गैयनभईवडीवारभरिभरि
पयथननिभारवछरागनकरेंपुकारतुमविनजदुराई॥२॥
तातेयहअटकपरीदुहनकाजसोंहकरीउठिआवहुकौन
हीवोलतवलिभाई॥ मुखतेपटझटकिडारिचंदवदनदेंउघा
रिजसुमतिवलिवारवारलोचनसुखदाई॥३॥ धेनुदुहवचले
धाइरोहिनीलईवुलायदोंहनिमुहिदेंमगायतवहीलेंआ
ई॥ वछरारियोंथनलगाइदुहतवेंठिकेंकन्हायहसतेनंद
रायतहांमाततरोउआई॥४॥ दोहनीकोंदूधधरिसिखवतनंद
वारवारयहछविनहींवारपारनंदघरवधाई॥ तवहलधर
कहयौसुनाइधेंनुवनचलौंलिवाइमेवाहूमगाइविविधि
रसमिठाई॥५॥ नेवनवलिरांमस्यांमसंतनकेसुखधामधेनुका
जनहीविरामजसुदाजलल्याई॥ स्यामरामसुखपखारिग्वाल
वाललेंहुंकारजमुनातटमनविचारग्पानहुकराई॥६॥ अंग
वेंनुनादकरतमुरलीमधुरधरतजाननमनहरखग्वाल
गावतसुघराई॥७॥ राग मारू॥ शोभावर्णनं॥ तरुतमालतरेंत्रि
भंगीकान्हकुवरमटसांवरेवरण॥ मोरमुकटपीतांवरवनमा
लविराजतरोसितनजजनमनहरण॥१॥ सखाअंसपरभुजदी
नेलीनेमुरलीअधरधरनविश्वंभरन॥ सूरदासकमलनेंनकों
कोंनकीनेवसविलोकनिश्रीगोवर्द्धनधरन॥२॥ राग विलाव
ल॥ स्यांमहृदेंपरमोतिनमाला॥ थकितरहींनिरखतव्रजवा
ला॥१॥ श्रवणथकितसुनिवचनरसाला॥ नेंनथकितदरसन
नंदलाला॥२॥ कंबुकंठभुजदंडविसाला॥ केयुरककेंचननग
झाला॥३॥ पल्लवहस्तमुद्रिकाराजें॥ कौस्तुभमणिहृदयस्थल
छाजें॥४॥ रोमावलीवरनीनहिंजाई॥ नाभिस्थलकीसुंदरताई
॥५॥ कटिकिंकिनीचंद्रमणिसंजुत॥ पीतांवरछविकटिअद्भुत॥६॥
जुगजंगकीपटतरकोंहै॥ तरुनीमनधीरजकोंमोहै॥७॥ जांनि
जानुकीछविनससापें॥ नारीनीकेंवुद्धिविचारें॥८॥ रतनजरि
तकंचनकलनूपुर॥ मंदमंदगतिचलतमधुरसुर॥९॥ जुग

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू॰सा॰ लकमलपरनवमणिशोभा॥ संतंनमनसंततजिहिलोभा॥८॥
६५ जोनिहिअंगासुनहूंभुलानी॥ सूरस्यांमगतिकाहूनजांनी॥९॥रा
गगुजरी॥ नंदनंदनमुखदेषोमाई॥ अंगअंगछबिमनोंउदेरविस
सिअरुअमरलजाई॥१॥ खंजनकंजकुरंगमीनदृगनिरखतअ
तिरुचिपाई॥ कुंडलकरनकपोलकिरनछबिबिलसतवदन
सुधाई॥२॥ नासाकीरकपोतग्रीवछबिदाडिमकनचोराई॥ दे
ऊओरसंगवाहनचढिआएमुरलीदेतदुहाई॥३॥ मोहिपिरथ
वृविपनविहंगमव्योमविमानथकाई॥ कुसमांजलिवरखत
सुरसिक सूरदासबलिजाई॥४॥रा॥ सारंग॥ देखोंमाईसुंदरता
कोसागर॥ बुधिविवेकबलपारनपावतमगनहोतमननाभ
ग॥१॥ तनअतिस्यांमअगाधअंबुनिधिकटिपटपीततरंग॥ चि
तवनचलतअधिकछबिउपजतभौरपरतसबअंग॥२॥ नेंन
मीनमकराकृतकुंडलभुजभरिसुभराभुजंग॥ मुकतामाल
गरेंमनुसुरसरिदेंसरितालीयेंसंग॥३॥ कनिकखचितकिंकि
निमणिभूषणअवलोकनिसुभरेन॥ उरभ्रमसरनिमधिअ
गटकियेंमनुससिअरुसुधामेमत॥४॥ देखिसरूपसकल
गोपीजनरहींविचारिविचारि॥ तदपिसूरतरिसकिनतेउरहीं
प्रेमपयोनिधिहारि॥५॥रा॥ धनाश्री॥ हरिमुखकिधोंमोहनीमाई॥ बो
लतबचनमंत्रसेंमानतगतिमतिजानिभुलाई॥१॥ कुटिल
अलकराजतभुवऊपरजहांतहांजुरहीवगराइ॥ स्यांमफांसि
मनफंदेरह्योमानोंअवसमसुरझोचतुराइ॥२॥ कुंडललोलकपोल
नझलकतइनकीभांतिमेंपाई॥ सूरस्यांमजुबनीमनमोहतऐसें
गाकरतसहाई॥३॥रा॥ केदारो॥ कैसीकैसीबातेंकरतकहेंतन
आवेंरी॥ स्यांमसुंदरपियप्यारोजोयअतिभावेंरी॥१॥ तानतर
गनिअंगनिरसिककरिझावेंरी॥ जंगमथावरकरेथावरहीच
लावेंरी॥२॥ नवमुरलीधरअधरसुधारसऊंचेसुरलेंगावेंरी
व्योमजानुपतिगनिवसनविसरावेंरी॥३॥ लहरिछुभिवज
लनिधिसनमुखधावेंरी॥ नंदलाललालचीललनाकोलल
चावेंरी॥४॥ कामिनिधीरजधरेंसुकोंनकहावेंरी॥ सूरदासप्रभु
पियप्रेमहृदयमसपावेंरी॥५॥रा॥ सारंग॥ अतिविसालहरि
लोचनलोल॥ चितेंचितेंअरुचारुविलोकनिमनुमांगतहेंओ
ल॥१॥ अरुनअधरनासाअतिसुंदरकुंडलचलतसुदेसकपो

Shrimad Gokulnathji Maharaj

ल॥ मुरलमुसिकांनिअधिकं छबिउपजत श्रवनसुनतअतिमी
ठबोल॥२॥ चितवतरहत चकोरचंद्ज्योंगोपीपलनलगावत
डोल॥ सूरदासहरिदरसनकारणदासीसकलभईबिनमोल
३॥रा॥ग॥नट॥ कटितटपीतबसनसुदेस॥ मांनोंनवघनदामिनी
बिचारहेंसहजसुवेस॥१॥ कनकनिमेखलाराजतसुबलसी
वलअंग॥ मांनोहंसरसालपंगतिनारिबालकसंग॥२॥ सुभ
गकटिकाछनीकाछेंराजतजलकेसरखंड॥ सूरप्रभूअंग
निरखिमाधुरीमदनतनपरयौदंड॥३॥रा॥ग॥मो॥र॥ठि॥ देखिसखी
मोहनमनचोरत॥ नैंनकटाक्षबिलोकिमाधुरीसुभगभकु
टीतनमोरत॥१॥ बंदनखौरिलिलाटकेनिरखतिअतिसुख
दाई॥ मानोंअर्द्धचंद्रतटअहिनीसुधाचरावनआई॥२॥ मलय
जभालभ्रकुटीरेखाकीकबिउपमाइकलावत॥ मनोंएक
संगगंगजमुननभनिरधीधारबहावत॥ भ्रकुटीचारुनि
रखिब्रजसुंदरियहमनकरतबिचार॥ सूरदासप्रभुसोभा
सागरपावतकोउनपार॥४॥रा॥ग॥बिला॥वल॥ देखिसखीहरि
अंगअनूप॥ जानुजुगलजुगजंघाबिराजतकोबरनेंयहरू
प॥ लकुटलपेटिलटकिभएठाढ़ेएकचरणधरिधारें॥ मनों
नीलमणिखंभकांमरचिएकगलपेटिसुधारें॥१॥ कबहूंलकु
टतेजानुफेरिलेंअपनेसहजचलावत॥ सूरदासमांनोंकरुणा
करिबारंबारबुलावत॥३॥रा॥ग॥गौ॥री॥ हरिप्रतिअंगनागरिनि
रखि दृष्टिरोमावलीपररही बनतनाहिनयरखि॥१॥ कोउक
हतयहकामश्रेणीकोउकहतनदहीजोग॥ कोउकहतिअलि
बालपंगतिजुरीएकसंजोग॥२॥ कोउकहेंयाहिकांमपठ्यो
उसेजिनयहकांहु॥ स्यामरोमावलीकीछबिसूरनेहीनिबाहु
॥३॥रा॥ग॥क॥ल्या॥ण॥ रोमावलीरेखअतिविराजत॥ सूछमरेखधू
मकीधारानवघनऊपरराजत॥१॥ भृगुपदरेखस्यामउरअंत
रकहांकहींजोछजति॥ मनोंमेघभीतरससिकीदुतिकोटि
कांमतनलाजति॥२॥ मुकतामालनंदनंदनउरअर्द्धसुधानिधि
कांति॥ तनश्रीखंडमेघउज्वलअतिदेखिमहाबलभांति॥३॥
बरहीमुकटइंद्रधनुमांनोंतडितदसनछबिलाजाति॥ इकट
कबिलोकेसूरप्रभुनिमखनकीकहांहूजनि॥४॥रा॥ग॥आ॥सा
वरी॥ नहनेंनागिसबकहतनिहरि॥ रोमावलीअनूपबिराजत

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा.
६५

जमुनाकीअनुहारि ॥ ५ ॥ उरकलिंदतेंधसिजलधाराउदरधरनि
परवाह ॥ जातचलीधाराद्वैअधकोंनाभिह्रदंअवगाह ॥ २ ॥ भुजा
दंडतटसुभगघाटघटिवनमालातरुफूल मोतिनमालदुहूं
घांमानोंवहीलहरिरसफूल ॥ ३ ॥ सूरस्यांमरोमावलिकीछवि
देखतकरतविचार ॥ बुद्धिरचतितरिसकतनसोभाप्रेमवि
वसब्रजनार ॥ ४ ॥ राग विहागरो ॥ स्यामभुजाकीसुंदरताई ॥ चं
दनखोरिअनूपमराजतिसोछविकहीनजाई ॥ १ ॥ अतिवि
सालजानुलोंपरसतएकउपमामनआई ॥ मनोंभुजंगग
गनतेउतरतिअधमुखरह्योझुलाई ॥ २ ॥ रतनजटितपोंहोंची
कराजतअंगुरीसुंदरभारी ॥ सूरमनोंफणिपरमणिसोह
तिफणफणकीछविन्यारी ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ गोपीस्यांमरंग
भूली ॥ पूरनमुखचंदरेखिनेंनकुमदनीफूली ॥ १ ॥ कैंधोंनवकंज
लरखातिचातकमनलाये ॥ किधोंस्वातिवारिबिंदुसीपमुख
पाये ॥ २ ॥ रविछविकुंडलनिहारिपंकजविगसांने ॥ किधोंबक्र
वाकदेखिअतिहीरतिमांने ॥ ३ ॥ कैंधोंमृगजूथजुरेमुरलीधु
निरीझे ॥ सूरस्यांमकुंडलमुखछविकेरसभीजे ॥ ४ ॥ राग नट
तरुनिनिरखिहरिप्रतिअंगा ॥ कोऊनिरखिनवंदुभूलीको
ऊचरनजुगरंग ॥ १ ॥ कोऊनिरखिनूपुररहीथकिकोऊनिरखि
भुजजानु ॥ कोऊनिरखिजुगजंघसोभाकरतिमनअनुमान
॥ २ ॥ कोऊनिरखिकटिपीतकछुमेखलारुचिकारि ॥ कोऊनि
रखिह्रदनाभिकीछविडरोंतनमनवारि ॥ ३ ॥ चारुरोमावली
हारकीचारुउररसुदेस ॥ मांनोंअलिश्रेणीविराजतिवनीएक
हीवेस ॥ ४ ॥ रहीएकटकनारिठाढीकरतबुद्धिविचार ॥ सूरस्या
मकियोंनभतेजमुनसूछमधार ॥ ५ ॥ राग सारंग ॥ मुखछ
विकहोंकहांलोंमाई ॥ मांनोंकंजप्रकासप्रीतभएरविससि
जातछिपाई ॥ १ ॥ अधरबिंबनासाताऊपरमनुसकुचाखनबो
चिचलाई ॥ बिगसतवदनदसनअतिचमकनिदामिनिदुरि
दुरिदेतदिखाई ॥ २ ॥ सोभितश्रीकुंडलकीडोलनिमकराकृति
अतिसरसवनाई ॥ निसदिनरटतिसूरकेस्वामीब्रजबनितां
गतिमतिविसराई ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ सखारीसुंदरताकोरंग
छिनछिनमांहिपरतछविऔरेंकमलनेंनकेअंग ॥ १ ॥ परम
तिकरिराख्योचाहतहेंलागीडोलनिसंग ॥ चलततनमेषविसेष

Shrimad Gokulnathji Maharaj

जानियें भूलि भई मति भंग ॥ २ ॥ स्याम सुभग के ऊपर वारौं आली
कोटि अनंग ॥ सूरदास कछु कहत न आवे गिरा भई गति पंग ॥ ३ ॥
रा॰ गुजरी ॥ स्याम अंग जुवती निरखि भुलानी ॥ कोउ निरखति कुं
डल की आभा एते हि माहि बिकानी ॥ १ ॥ ललित कपोल निरखि
कोऊ अटकि निमिष लभई ज्यों मांनी ॥ देह गेह की सुधि नहि का
हू निरखि कोउ पछितांनी ॥ २ ॥ कोउ निरखति रही ललित ना
सिका यह काहू नहि जांनी ॥ कोऊ चकृत भई दसन चमक पर
चकचौंधी अकुलांनी ॥ ३ ॥ कोऊ निरखति रुचि चिबुक चारु की
सूर तरुनि बिततांनी ॥ कोऊ निरखत अधरन की सोभा फुरत
नहीं मुख बांनी ॥ ४ ॥ रा॰ सारंग ॥ ऐसो गोपाल निरखि तन मन
धन वारों ॥ नवकिसोर मधुर मूरति सोभा उर धारों ॥ १ ॥ अरुनत
रुण कमल नैन मुरली कर राजें ॥ ब्रजजन मन हरन बेंन मधु
र मधुर बाजें ॥ २ ॥ ललित पर त्रिभंग कंठ बनमाल सोहे ॥ कुटि
ल केस कुसम पांति उपमा को कोहे ॥ ३ ॥ चरन मुनत नूपुर ग
ति किंकिनी कल कूजें ॥ मकराकृत कुंडल छबि सूर कौंन पूजें
॥ ४ ॥ रा॰ सारंग ॥ सुंदर मुख पर बलि बलि जाऊं ॥ लावन निधि
सोभा निधि गुन निधि निरखि निरखि जीवत सब गांऊ ॥ १ ॥ अं
ग अंग प्रति अमित माधुरी प्रगटति रुचि सब ठाउं ॥ तामें मृदु
मुसिकानि मनोहर न्यारेइ कहत सब मोहन नाउं ॥ २ ॥ नेंन सेंन
दे दे चितहि हरत ता ऊपर बिन मोल बिकाउं ॥ सूरदास प्रभु म
दन मोहन छबि इहि सोभा उपमा नहि पाउं ॥ ३ ॥ रा॰ सूहो बि
लावल ॥ मैं बलि जाउ स्याम मुख छबि पर ॥ बलि बलि जाउ कुटि
ल कच बिथुरी बलि बलि जाउ भृकुटी ललाट पर ॥ १ ॥ बलि
बलि जाउ चारु अवलोकनि बलिहारी कुंडल की ॥ बलि बलि
जाउ नासिका सु बलिहारी वा छबि की ॥ २ ॥ बलि बलि जाउ अ
रुन अधरन की पर बिद्रुम बिंब लजावन ॥ मैं बलि जाउ दस
न चमकनि की वारौं तड़ित निसावन ॥ ३ ॥ मैं बलि जाउ ललित
ठोडी पर बलि मोतिन की माल ॥ सूर निरखि तन मन बलिहा
रौं बलि बलि जसुमति लाल ॥ ४ ॥ रा॰ कल्यान ॥ अलकन की
छबि अलि कुल लजावत ॥ खंजन मीन मृग जनैं नैनन की ना
चत गति हि बनावत ॥ १ ॥ मुख मुसकानि आनि उर अपने अंबु
ज बुधि उपजावत ॥ सकुचत उर पर मित बाहु बिकोंनि जहि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. जन्मगमावत ॥ २ ॥ पूजतनारीसुभगस्यामतनजहृपिजलधर
६६ धावत ॥ वसनसमांनहोतनहिंह्राटकप्रभिनपटेरेंतावति ॥ ३
मुकतादामविलोकिविलखकरिअवलिनखोनवनावत ॥ सू
रदासप्रभुललितत्रिभंगीमनमथजूथलजावत ॥ ४ ॥ इति श्री
भागवते महापुराणे दशमस्कंधे विंसध्यायः ॥ २१ ॥ मुरलीस्तुति
रागसारंग ॥ जबहरिमुरलीअधरधरत ॥ खगमोहेमृगजूथ
भुलाने निरखिमदनछविछकत ॥ १ ॥ पसुमोहेसुरभीविथ्या
कित तृनदंतनिटेकरहत ॥ सुकसनकादिसकलमुनिमोहे
ध्यांननतनकरहत ॥ २ ॥ सूरजदासभागिहेतिनकेजेयासुख
हिलहत ॥ ३ ॥ रागमारू ॥ मेरेसांवरेजबमुरलीअधरधरी ॥ सुनिसि
द्धसमाधिटरी ॥ १ ॥ सुनिथकेदेवविमान सुरवधूचित्रसमान ॥ २
ग्रहनितजतनिरासि ॥ बांहनबंधेधुनिफांसि ॥ ३ ॥ सुनिआनंद
उमगिधरि ॥ वलथकेअंचलटरे ॥ ४ ॥ चरअचरगतिविपरीति
सुनिवेनपटकलगीत ॥ ५ ॥ झरनाझरयावांन ॥ गंधर्वमोहे
गांन ॥ ६ ॥ सुनिखगमृगमौनधरें ॥ फलतृणकेसुधिविसरें ॥ ७
सुनिवेणधुनिथकिरहीं ॥ तरणितरंगहीं ॥ ८ ॥ वछ्छानपीवें
छीर ॥ पंछीमनोंमुनिधीर ॥ ९ ॥ द्रुमवेलीचपलभई ॥ सुनिपल्लव
प्रगटनई ॥ १० ॥ सुनिविटपचंचलपात ॥ अतिनिकटकोंअकुला
त ॥ ११ ॥ अंकुरितनवलकिसगात ॥ अनुरागमनहिंसुचात ॥ १२
सुनिचंचलपवनथकेंयो ॥ सलिताजलचलनसकेयो ॥ १३ ॥ सु
निधुनिचलीब्रजनारि ॥ सुतदेहगेहविसारि ॥ १४ ॥ सुनिथकि
तभयोसमीर ॥ झलतेउजमुनानीर ॥ १५ ॥ मनमोहोंमदनगो
पाल तनस्याममनैंनविसाल ॥ १६ ॥ नवनीलतनघनस्याम
नवपीतपटअभिराम ॥ १७ ॥ नवमुकटनवबनदाम ॥ लावण्य
कोटिककाम ॥ १८ ॥ मनमोहनरूपधरयौ ॥ तिनकोगर्वहर्यौ
१९ श्रीमदनमोहनलाल ॥ संगनागरीब्रजबाल ॥ २० ॥ नव
कुंजजमुनाकूल ॥ लखिसूरदासजनभूल ॥ २१ ॥ रागनट ॥ स्या
मकरमुरलीअतिहिंविराजत ॥ परसतअधरसुधारसवर
खतमधुरमधुरसुरबाजत ॥ १ ॥ लटकतिमुकटभोंहछवि
मटकतनैंनसेंनअतिराजति ॥ ग्रीवनवाइअटकिवंसीपर
कोटिमदनछविलाजति ॥ २ ॥ गोलकपोलझलककुंडलकी
यहउपमाकछुलागति ॥ मानोंमकरसुधारसक्रीडतआप।

Shrimad Gokulnathji Maharaj

आपअनुरागानि ॥३॥ वृंदावनविहरततनंदनंदनग्वालसखासं
गसोहत ॥ सूरदासप्रभुकीछबिनिरखतसुरनरमुनिसबमो
हत ॥४॥ राग सारंग ॥ तबलोंसबैसयांनरही जबलोंनवकिसो
रमुरलीधरहिसमीरवही ॥१॥ तबहीलोंअभिमांनचतुराईपति
ब्रतकुलहिचही ॥ जबलगश्रवणरंध्रमगमिलिकेंनाहींमन
हीगुही ॥२॥ तबलोंतरुणितरलचंचलताबुधिबलसकुचिर
ही ॥ सूरदासजबलोंवहधुनिसुनिनाहिनचतहीगही ॥३॥ रा
गकेदारो ॥ वंसीवनराजआजुआईरनजीति ॥ मोरीहेंअपनेब
लसबहुनिकीरीति ॥१॥ विडरेगजजूथसेलसेंनलाजभाजे
घूंघटपटकवचकोरिटूटेंजववाजे ॥२॥ काहूपतिगेहतजे
काहूतनप्रांन काहूमुखश्रवणपायोसुनतसुजसगान ॥३॥
कोऊपगपरसिगएअपनेअपनेदेस ॥ कोऊरसरंगभरेहु
तेजेनरेस ॥४॥ देतमदनमारहनमिलिरहसोंरिझाईहाई ॥ सूरदा
सश्रीगोकुलकीनेबसमाई ॥५॥ राग सारंग ॥ जबतेंवंसीश्रव
नपरी ॥ तबहीतेंमनऔरभयोसखीमोमनसुधिबिसरी ॥१॥
हौंअपनेअभिमांनरूपगुणजोबनगर्बभरी ॥ नेंकनकह्योकियों
दूतीकोंवारहीरहीअरी ॥२॥ बिनदेखेंअबस्यांममनोहरजुगभ
रिजातघरी ॥ सूरदाससुनिआरजपंथतेंकछूनगरजसरी ॥३॥
राग सारंग ॥ मुरलीधुनिश्रवणसुनिमुनिरह्योंनहिपरें ॥ ऐसी
कोचतुरनारिधीरजमनधरें ॥१॥ खगमृगपशुसुरनरमुनिशि
वसमाधिटरें ॥ अपनीगतितजिपवनसलिलउनमरें ॥२॥ मो
हनकेमनहींकोंअपनेबसकरें ॥ सूरदाससप्तसुरनिसिंधु
सुधाभरें ॥३॥ राग सारंग ॥ मुरलीअतिगरबकाहूबदतनहीआ
जु ॥ हरिकोंमुखकमलदेसपायोंसुखसाज ॥१॥ बेंठतिकरपी
ठिदीठिअधरछत्रछांह ॥ चोरविहुरराजतअतिसुरभसभा
मांहि ॥२॥ थावरजंगमजडकरतजीतअजीत ॥ सबैमेटिच
लतसखीअपनीअपनीरीत ॥३॥ जमुनाकेजलहिजलधजां
निनहिदेत ॥ सुरपुरतेंसुरविमानयहबुलायेलेत ॥४॥ मुरली
बससकलसूरखगमृगमुनिनाग ॥ श्रीपतिहूश्रीबिसारि
याहीअनुराग ॥५॥ राग कांन्हरो ॥ मुरलीमोहेकुंवरकन्हाई
अचवतअधरसुधावसकीनेअबहमकहांकरेंमाई ॥१॥
राजतिगाजतिचढीआइकरिस्वनसुनतपराई ॥ सरवसह

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा तौ धर्यौं लवाहिन कों औरन पास मरे तरि रोई ॥२॥ जिनहीं आग
६२ नि दह्यौ कुल अपनों ता तें कैसें होत भलाई ॥ अब कहूं सूर कों न
विधि कीजें वन बास आधि मांझ घर आई ॥३॥ राग कान्हरो ॥ मुरली
तऊ गुपालहि भावें ॥ सुनि री सखी जदपि नंदलालहि नाना भांति
नचावें ॥१॥ राखति एक पाय ठाढे करि सिर धरि नारि नवावें ॥ आ
पुन पौढि अधर सिज्या पर कर पल्लव वर टकावें ॥२॥ जांनि अधि
क आधीन कनाडे आनि अधिक ता सनावें ॥ अंग अंग कोमल
अंगुलिका करि टेटौ ढंक आवें ॥३॥ भकुटी कुटिल नेंन नासा पुट
हम पर कोप करावें ॥ सूर प्रसन्न जांनि एकौं छिन धरपर सी
स डुलावें ॥४॥ राग कान्हरो ॥ स्यांम तुम्हारी मदन मुरलिका नंन
कसी नेंम न मोह्यौ ॥ जे वन जीव जंत जल थल के नार स्वार सु
पोह्यौं ॥१॥ नातीरथ के तन के फल सों स्यांम सुहागिनि कीनी
नातीरथ व्रत कियौ री सुनि सब समक्षि कठिन रीनौ ॥२॥ अध
रनी में धरि गोवर्द्धन राखे कोमल पानि अधार ॥ अब हरि ल
टकि रहत नंद टेटे तनक मुरली के भार ॥३॥ हमें छुडाय अधर
रस पीवति करति चंचकता ॥ सूरदास प्रभु निकसि कुंज ते
चेरी सौतिनि भई आनि ॥४॥ राग सारंग ॥ सखी री मुरली लीजें चोरि
जिन गोपाल कियें वस अपने प्रीति सबनि की तोरि ॥१॥ छिन
एक घर भीतर निसि वासर धरत न कबहूं छोरि ॥ कबहूं कर क
बहूं अधर न कबहूं कटि में उरसत जोरि ॥२॥ ना जानों कछु मे
लि मोहिनि डारि के अंग अंग भोरि ॥ सूरदास प्रभु को मन सजनी व
ध्यौ राग की डोरि ॥५॥ राग धनाश्री ॥ यह मुरली जपि गई न तब ही
जब अपनो कुल राह कराय्यौं तब कैसें न रही ॥१॥ ऐसी चतुर ख
तुराई कीनी आप बची सब जारी ॥ कैसी मिली सूर के प्रभु कों वि
धिना की गति न्यारी ॥६॥ राग केदारो ॥ मुरली कों न सुकृत फल पा
ए ॥ अधर मधुर पीवत मोहन कों सबें कलंक नसाए ॥१॥ तन क
टोर मन गांठि हियें भई छिद्र जु साने वनाए ॥ अंतर सुन्न सदा रे
षियत हैं निज कुल बंस सुहाए ॥२॥ लघु तन एक नहीं कछु क
रनी नि रखत न हीनि काई ॥ सूरदास प्रभु पानि परसि नित का
म वल्ली अधिकाई ॥७॥ राग धनाश्री ॥ मुरली अधर धरी बलवी
र ॥ नाद सुरवनि ताबि मोहि अरु बिसारे चीर ॥१॥ धेंनु मृग तन त
हेंत जिके व छ नयौं वन षीर ॥ खग नेंन मूंदि समाधि धरि मनु

Shrimad Gokulnathji Maharaj

करतमुनितपधीर॥२॥कुलतिनहीतुमकौलज्जानहिवहतिमंद
समीर॥मुरमुरलीसबहूमुनिकेंपाकितजमुनानीर॥३॥ राग धना
श्री॥ बांसुरीरीजियेंब्रजनाथ॥ कालिसखीयेहिठौरबांसुरीभू
लिबिसारी॥ तुमहीलेंगईधांमवातहमसुनीतिहारी॥ तुमरेको
मनआवहीबंसीहमरीदेहु ऋतिआतुरह्वेंमांगहीतुमनाहितु
नाहिकरों॥१॥ एजीबंसीकैसीहोयनहीहमनेंननदेखी॥ पिता
तिहारेसाधकोनतुमपिरोंअवेखी॥ इतउतखेलततुमपि
रोंउत्तहीभूलिगये॥ सानसमझावाकीसोंहमनाहिजुनाहिले
ये॥ बांसुरीकैसीहैब्रजनाथ॥२॥ एजुबंसीहमरीदेहुकाहेकों
रापिबढावों॥ समझिबूझिमनमाहिकाहेकोंलोगहसावों॥
लोगहसेंचरचाकरेंदेखोमनहिविचारि॥ यहबंसीनिरमो
लकीतुमदेतीक्यौंनगमारि॥३॥ एजुहमसोंकहतगवारिआ
पनीकरतवडाई॥ मारेंभुलचागालतोरबाबाकीजाई॥ तुम
सेकितेकग्वारियामांगतहमपेंदांन॥ चतुराईसबछाडियो
लालाजायखरावोगाउ॥४॥ एजीयाबंसीकौसारकहातुम
ग्वालिनिजांनों॥ तीनिलोकपरतारतासोंमेरोमनमान्यो॥ या
बंसीखोजतपिरेंसिवविरंचिमुनिनाथ॥ परचायोपरचेनहीं
तुमकहांनचावतहाथ॥५॥ एजुरहोरहोलंगरढीठकांन्हतो
हिकोंनपतीजें॥ गोरसघातकहूंअन्तदोषहमकोंनहिदीजें
लेंलकुटीमुखमेंधरोबंसीवाकोनाम॥ जाघरऐसेंपुत्रहें
लालाउजरोउनकेगांम॥६॥ उजरोंभावेंवसोंतुमेंकहाचाह
हमारी॥ तुमसीहेंलषचारिनेंदघरगोवरहारी॥ एकलखमे
रेसंगफिरेंलखआवेंलखजाइ॥ लखठाढीदर्शनकरेंलख
खडीखडीललचाइ॥७॥ सुघरसयानीनारिहाथगहिबंसी
ल्याई॥ पूरनपरमानंदसांवरेमुखहिबजाई॥ लेंबंसीग्वालिनि
मिलीघूंघटवदनछिपाय॥ सूरदासप्रभुहारिग्वालिनिजीत
जाघरेंराइ॥८॥ श्रीवृंदावनविहारसुरवनितावचन॥ राग सा
ग॥ हमनभईवृंदावनरेणु॥ जहांचरणडोलतनंदनंदनदिन
प्रतिचारनधेंनु॥१॥ कहांभयोंयादेवजनमतेंअरुऊंचोपदकि
योजुअैन॥ सबजीवनकोंयहएकफलछिनवकमिलेंजोकरें
सेंन॥२॥ हमतेंपरमधन्यद्रुमवनवालकवछविषानहवेंन॥
सुरसकलखेलतहसिबोलतग्वालसंगमधिपीवतधेंन॥३॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा
६८

रा।ग।बि।ला।वल ॥ गोकुलगाउरसकोंरसीलों ॥ मोंहनरेंछिपिमिसेंदुरखंजी
लों ॥ १ ॥ मोरमुकटकुंडलबनमाला ॥ याछबिसोंठाढेनंदलाल ॥ २
करमुरलीपीतांबरसोहे ॥ चितवनहीसबकोंमनमोहे ॥ ३ ॥ छंद ॥
मनमोह्योइनसांवरेहेंचक्रतसीडोलतफिरों ॥ औरकछुनसु
ह्लाइतननमनबेंठिउठिगिरिगिगिपरों ॥ ४ ॥ मदनबानसुमार
लागेनेंकपीरनजाइकही ॥ औरकछुउपायनाही स्यामबेर
बुलावही ॥ ५ ॥ लोगकहेंयहभईबोरी ॥ यहसुनछांडिफिरतय
हदौरी ॥ ६ ॥ छंद ॥ छांडिसुरतिसभारिजियकीकृष्णछबिहदेंब
सी ॥ मदनमोंहनदेखिसोभाबेसिपेंकुंजनधसी ॥ ७ ॥ कुंजधां
मकिसोरठाढेकेसरिषोरिबनावही ॥ चंद्रिकापरप्रांनवारें
बलिगईपाभांवही ॥ ८ ॥ भारपरोयहघरघरबंसा ॥ नितउठि
कोनकरेंजियमंसा ॥ ९ ॥ काहूकोंकह्योंमनन[illegible]आंन्यो ॥ कम
लनेंननेंननिपटहूचांन्यो ॥ १० ॥ इननेंननि[illegible]बाध्योंभारी ॥ नि
रखनदेहिंसदागिरधारी ॥ ११ ॥ छंद ॥ निरखिनंदकिसोरसखीरी
कोटिकिरनप्रकासरी ॥ कालिंदीकेतीरठाढेसुनीहरिकीबां
सुरी ॥ १२ ॥ बासुरीबसकियेसुरनरमुनतपातकनासरी ॥ सूरके
प्रभुयहेंबिनतीसदाचरननिवासरी ॥ १३ ॥ अ।थ।श्री।रा।धि।का।ज
की।स।गा।ई।रा।ग।रा।म।कली ॥ पूछतिजननीकहांहुतीप्यारी ॥ कुं
कुमभालतिलककिनदीनोंकिननेरीबेंनीकहाहुतीबारी ॥
हूंअपनीसखियनसंगखेलतउबिकेंबोलिलईनंदरानी ॥ १ ॥
मेरोंनामपूछिबाबाकेतेरोनामपूछिरहीहूंसिगारी ॥ तिलनि
लचांवरिगोरगोफाभारिआनिदईनईसारी ॥ २ ॥ मोतनचितेंचि
तेंढोटातनकछुसबितानतमोरूपसारी ॥ बोलिलईह्रखभां
नभवनमेंहसिपूछतिह्रखभांनदुलारी ॥ ३ ॥ कीनोंमंत्रमदा
कहदुहूंमिलिएकेंबातबिचारी ॥ ४ ॥ रा।ग।बि।ला।वल ॥ अहेमेरी
प्रांनपियारीभोरहीखेलनकहांसिधारी ॥ १ ॥ कुंकुममालति
लककिनकीनों ॥ किनमृगमदकोबेंदादीनों ॥ २ ॥ छंद ॥ मृगम
दकोंबेंदाखियोमस्तकरबिससिसंसेंपरचों ॥ सरदनिसिकों
कलापूरनमनोंमनदर्पनहरयों ॥ ३ ॥ हेंसिहसिमुखकहतजन
नीअलबेंनीकिनगुही ॥ सूरकेप्रभुमोहब्याप्योंहयोंकिनमन
मथकही ॥ ४ ॥ अन्यच्च ॥ नंदमहरिकोघरनिजसोबें ॥ मेरेबदन
हिफिरिफिरिजोवें ॥ १ ॥ खेलतहसतनिकटबेंठारी ॥ मनमेंआनं

Shrimad Gokulnathji Maharaj

हृकीनोंभारी॥२॥छंद॥मनमेंजुप्रानंहृकियोंभारीनिरखिछवि
विट्ठलभई॥बावाजूकोंनामलेंलें नोमिहूसिंगारीरई॥३॥पा
टीजुपारिसबारिभूखनयोरमेंमेबाभरी॥सूरकेप्रभुहृरखिहि
यमेंविधनासोंविनतीकरी॥४॥अन्पद॥सुनीसुनिकीरतिसु
तिकांनी॥नंदरानीकेजियकीभूंनी॥१॥एतोंसुनाहेंरूपकीरासी
वेहेंकांन्हउदासीवनवासी॥२॥छंद॥कांन्हउदासीवनोवांसीरंग
भीहिकैोवनें॥नीलमणिढिगरतनअमोलककांचकंचनकौों
सनें॥३॥ललिताविसाखाबोलिकहैोंकुकिलली नजितुमकित
रही॥सूरकेप्रभूभवनबाहरजानिरीजोंजिनकही॥४॥अन्पद॥
दिनदसपांचअटकजबकीनी॥कुंवरिनकोंनूरिखाईदीनी॥१॥
मुरझिपरीतननहिंसभारें॥लाडिलेंडसीभवंगमकारें॥२॥छं
द॥कारेभवंगमडसीलाडिलीगारहूपावेसबें॥जंत्रनंरनमंत्र
बिनुयहगरलराख्योंकौंनरवें॥३॥मनुहूरिवारीमोहनहिला
एलखततहीसबविषनसी॥सूरकेप्रभुजोअबचलजियों॥
जोजिहिजियबसी॥४॥अन्पद॥उठिबैठीतबबरनप्रछायों
निरखिमोहनतनअबरासभाहैों॥१॥मुरिबेंठीमनविग्योंहुला
सा॥कीरतिगईआपुनपियपासा॥२॥छंद॥गईकीरतिअपने
पियपेंप्रीतिरीतिजनाइकें॥मंत्रकीनोंव्याहकोंसबसखनि
मंगलगाइयों॥३॥श्रीवृंदावनरचिस्वयंवरकुंजमंडफछाई
यों॥सूरकेप्रभुस्यांमतनराधिकावरपाइयों॥४॥राग॥मारू॥
प्रीतिकेवसस्यांइहेंमुरारी॥प्रीतिवसहोइभेषनटवरधर्यो
प्रीतिवसकरजुगिरिराजधारी॥१॥प्रीतिकेवसब्रजचोरमा
खनभए प्रीतिकेवसदांवरिवधाए॥प्रीतिकेवसगोपीचर
ननामप्रियप्रीतिकेवसतरुजमलमोछ्राए॥२॥प्रीतिकेव
सनंदबंधनवरुणग्रहगए प्रीतिकेवसवनधामकांमी
प्रीतिकेवसत्रिभुवनचरतसूर प्रभूप्रीतिवसराधिकासरा
स्वामी॥३॥राग॥मारू॥निगमतेअगमहरिहेंनियारे॥प्रेमवस
स्यांमहेंराउकेरंककोऊपुरुषकेनारिनहिभेदकारे॥१॥प्रीति
वसहेंवकीगर्भआएप्रभूप्रीतिकेहेतव्रजभेषकीने॥प्रीति
केहेतजसुमतिकोंपयपियोंप्रीतिकेहेतअवतारलीने॥२॥
प्रीतिकेहेतवनधेंनुचारतफिरतप्रीतिकेहेतनंदसुवनना
मा॥सूरकेप्रभूकोंप्रीतिकरिपाइयेंप्रीतिकेहेतसेऊस्यांमस्यांमा॥३

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. ॥ राग आसावरी ॥ इसी भाई स्यांम भुवंगम कारे ॥ आई लहरि मरन
३९ तन घोरे हैं कोऊ वेरहूं कारे ॥ १ ॥ तंत्र न लगें मंत्र न पुरई किते गुनी
पचि हारे ॥ आनि मिलावौ मोहन गारूरू सो मेरी लहरि उतारे
२ ॥ किते रहे रे वनमाली आली मनमथ पीर हूं मारे ॥ सूरदास प्र
भु तिहारे र रस विनु कौंम कपट तन जारे ॥ ३ ॥ अथ नैनन प्रसंग
राग नट ॥ नैना मेरे हाथ न रहे देखत दरस स्यांम सुंदर कों जल
की ढरक निवहे ॥ १ ॥ उहूं नीचे कौं आवत आतुर औसें हि नैंन भ
ए उहूं नों जाय समाय उदधि में ए प्रति रंग रए ॥ २ ॥ उहूं अगाध
कहूं वार पार नहि ये सोभा नहि पार ॥ लोचन मिले त्रिवेनी हैं
कें सूर समुद्र अपार ॥ ३ ॥ राग बिहागरो ॥ मन तें ये अति ढीठ भए
वे तौ गए बहुरि फिरि आए ए जु गये सु गये ॥ १ ॥ ज्यों भुजंग कंचु
की विसारत फिरि नाहि ताहि निहारत ॥ तैसें जाय मिलत न एक
टक केहुं रत लाज निरवारत ॥ २ ॥ ईटुनि मसि [illegible] मिलें तो मन तव
हीनैं नाहे उहि सालत ॥ सूर स्यांम संग [illegible] गडोलत और न वे
घर घालत ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ नैनानी [illegible] नहीं रए ॥ मन जब गयो
नहीं मैं जान्यो ये हू निदरि गये ॥ १ ॥ एतौ भए भावते हरि के स
दा रहत ये हि मांही ॥ कर मींडत सिर धुनत ना त्रिसव यह कहि कै
हि पाछितां ही ॥ २ ॥ सूर स्याम ज्यों बुद्धि पाछिली हूं महि कम रियो
आगें ॥ अवतौं मिले [illegible] के प्रभु कों पावौं कहूं अब मांगे ॥ ३ ॥ रा
ग जैतश्री ॥ नैनन कौं री यह है सुहाय ॥ लुबधे जाय रूप मोहन के
चेरे भये [illegible] ॥ १ ॥ फूले फिरत गिनत नहि काहू आने रहउर न स
माइ ॥ यहै वात कहि सबन सुनावत नैंक हूं न ही लजाइ ॥ २ ॥ नि
सदिन करि सेवा प्रतिपाले बडे भये जब आइ ॥ तब हम कों ये
छांडि भगाने देखौ सूर सुभाइ ॥ ३ ॥ राग पूरवी ॥ नैना नहि आवें तु
व पास ॥ कैसें हूं करि निकरें इहां ते वे अति भए उदास ॥ १ ॥ अपने
स्वारथ के सब कोऊ मैं जानी यह बात ॥ उहूं सोभा सुख लिये पा
छें अब वे काहि पत्यात ॥ २ ॥ षटरस भोजन त्यागि कहूं कोउ रू
खी रोटी खात ॥ सूर स्यांम रस रूप माधुरी एते हु परन अघात ॥
३ ॥ राग भैरव ॥ नैंन परे हरि पाछें री ॥ मिले अति हि आतुर सु स्यां
म कों रीझे नटवर कांछें री ॥ १ ॥ निमष न हीं लागत एक टक ही नि
स वासर नहि जांनत री ॥ निरखत अंग अंग की सोभा ताहीं पर
रुचि मानत री ॥ २ ॥ नैंन परे पर वस री माई उनकों इन वस कीने री

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सूरज प्रभु सेवा करि रीझे उन अपने करि लीने री ॥ ३ ॥ राग विहाग
रो ॥ नैंना भए वजाय गुलाम ॥ मन वेच्यो ले वसतु हमारी सुनहु सु
खीये काम ॥ १ ॥ प्रथम भेद करि आयो आपुन मांगि पठायो का
म ॥ बीच दयो निधरक ह्वै रहि लीने मूंद मुसकनि दें दाम ॥ २ ॥ यह ह्वां
नी जहां तहां प्रकासी मो ललिये कों नाम ॥ सुनहु सूर यह दोष
कौन कों यह तुम कहौं न वाम ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ इन बातन कहो
कों न बडाई ॥ लूटति हैं छबि रास स्याम की नोखे करि निधि पाई
१ छोपे हमें उघरि परेंगे अति सय चले इतराई ॥ इरन खान देत
नहि काहू आछे घर निधि आई ॥ २ ॥ पहसं पति हैं त्रिहूं भुवन की
सब इन ही अपनाई धोखे रहत सूर के स्वामी काहू नाहि जना
ई ॥ ३ ॥ राग कान्हरो ॥ नैंन आपने घर के री ॥ लूटन रे हु स्याम की सो
भा ज्यो हम परवे तर के री ॥ १ ॥ यह जानी नीकें कपि सजनी नही
हमारे दूके री ॥ वे जानन हूं मसरि को त्रिभुवन ऐसे रहत निधर
केरी ॥ २ ॥ ऐसी रिस आवत उन ऊपर करहि मनोह घर घर केरी
सूर स्याम के गर्भ भुलाने वे उन पर हैं ढकेरी ॥ ३ ॥ राग नट ॥ इन
नैंनन नि मोहि बहुत सतायो ॥ अब लों कानि करी मैं सजनी बहु
तें मूड चढायो ॥ १ ॥ निदरे रहत गहें रिस मोसों मो कों रोष लगा
यो ॥ लूटत आपुन श्री अंग सोभा मन हू निधन धन पायो ॥ २ ॥
निसदूं दिन ये करत अचगरी मन हू कहूं धों ल्यायो ॥ सुनहु सूर
इनकों प्रतिपाल्यो आलस नेकु न आयो ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ लो
चन भए स्याम के चेरे ॥ एते पर सुख पावत कोटिक मोतन न फेरि
हेरे ॥ १ ॥ हाहा करति परति हरि चरनन ये ऐसे भए उनही ॥ इनकों
वदन विलोकत निसदिन मेरो कह्यो न सुनही ॥ २ ॥ ललित त्रिभं
गी छबि पर अटके पटके मोसों तोरि ॥ सूरदास यह मेरी करनी
आपु निहारी जोरि ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ नैंन करें सुख हम दुख पावें
ऐसो को परवेदन जानें जासों कहि जु जनावें ॥ १ ॥ नाते भली मों
न सबही ते कहि कें मान गवांवें ॥ लोचन मन इंद्री हरि भजि कें त
जि हम कों सुख पावें ॥ २ ॥ वेतो भए आपने करने व्यथा जीव भर
मावें ॥ सूर स्याम हैं चतुर सिरोमनि ए जिन सों भेद सुनावें ॥ ३ ॥ राग
धनाश्री ॥ इन नैंनन की विथा सुनावें ॥ इनके गुन औगुन हरि आगें
रुचि सों जाय सुनावें ॥ १ ॥ इन सों तुम परतीति वढावत ए हैं अपने
कांजी ॥ स्वारथ मांनि लेत रति करि कें वोल तहां जी हां जी ॥ २ ॥ एग

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा नमानतनहिकाहूकौं अपनेमुखभरिलेन ॥ सूरजप्रभूएऐसेहैं
७० फिरिपाछेंदुखदेन ॥३॥ राग धनाश्री ॥ नेंननतेयहभईबडाई ॥ घर
हीघरववावचलावतहमसोंभेटनमाई ॥१॥ कहेंस्यामामिलि
वेठकवहूंकहनावतव्रजऐसें ॥ सुलटिहियेंउपहासहमारें ॥
यहनोंवानअनेंसी ॥२॥ येईघरघरकहतफिरतहैंकहांकरों
पचिहारी ॥ सूरस्यामयहसुनतहसनहीनेंननकिएअधिका
री ॥३॥ राग बिलावल ॥ जदपिनेंनभरतढोरिजात ॥ येकटकनेंकु
कहूंनाहिटारततपततनहोतप्रघात ॥१॥ अपनेहीसुखमरत
निसारिनजदपिरूपनहिगात ॥ लेंलेंफिरतआपुनेभीतरऐसो
रिनहीपतियात ॥२॥ जोलीजेंसोरहैं अपनोंजैसेंचोरभगात
सुनहुसूरजैसेंयेलोभीधनिइनकेपितुमात ॥३॥ राग बिलाव
ल ॥ जैलोभीतेरेंहिकहारी ॥ जैसेंमेरेनेंननजांतेंजैसेंनिठुर
महारी ॥१॥ मनआपुनेंकहेंवरुदेहेंयेनाहिंइहमारे ॥ करि
करोवेंहमनाहिमानेंगीधेरूपनुमारे ॥ तुमसधेयेकपटीजो
नोंइन्हेंपत्यायेंवाधा ॥ सूरस्यामयेलोभीहूत्रासततरहेंहमारीसा
धा ॥३॥ राग नट ॥ नेनाभरेघरकेचोर ॥ लेतनहिंकछुवनेंइनसों
देखिछविभयोभोर ॥१॥ नहींमागतनहीमांगतरूपजागाग्र
काम ॥ अलककडोरनिवांधराखेउनकीआंस ॥२॥ मेंवहुतक
रिजतनहारीनिरखिनेकमेदेरि ॥ सूरस्यांमयेहिवांधिराखेंत्र
गछविमेंघेरि ॥३॥ राग जैतश्री ॥ लोचनभयेपखेरूमाई ॥ लुव
धेस्यांमरूपचारेकोंअलकफंदपरजाई ॥१॥ मोरमुकटटाटी
मांनोंयहवेठनललितत्रिभंग ॥ चितवनिलकुटलासलटक
नपियकापाअलकतरंग ॥२॥ दोरिगहनिमुदुमुसकावनि
लोभपीजराउरी ॥ सूरदासमनव्याधहमारोंग्रहवनतेजुवि
सारी ॥३॥ राग बिहागरो ॥ नेंनाएसेंहेंविसवासी ॥ आपकाजकी
नोंहमकोंतजितवंनेभएनिरासी ॥१॥ प्रतिपालनकरिवडे
कराएजानिआपनोंअंग ॥ निमखनिमखमेंधोखतिआनति
सिखयेभावनरंग ॥२॥ हमजान्योंहमकोंयेदेहेंऐसेगयेपरा
ई ॥ सुनहुसूरवरजतिहीवरजतचेरेभयेवजाई ॥३॥ राग जैते
श्री ॥ नेंनाभएप्रगटहीचेरे ॥ ताकोंकछुअपमाननमानतह
मयेकियेवडेरे ॥१॥ ग्योवरज्योयहवातभलीनाहिंहसतननेंकु
लजात ॥ फूलेफिरतसुनावतसबकोंएतेपरनडरात ॥२॥ प

Shrimad Gokulnathji Maharaj

हूं कहें हम कों जिनि छांडें तुम बिनु तन बेहाल ॥ तमकि उठे यह
बात सुनत ही गोधे गुण गोपाल ॥ ३ ॥ मुकर लर कि भौंहनि की म
टकनि कुंडल झलक कपोल । सूरस्याम मृदु मुसकनि ऊपर लो
चन लीने मोल ॥ ४ ॥ राग सोरठ ॥ लोचन भृंग भये री मेरे ॥ लोक ला
ज बन घन बेली तजि आतुर ह्वै जु गडेरे ॥ १ ॥ स्याम सरूप रस बा
रिज लोचन तहीं जाय लुबधे रे ॥ लपट लटकि पराग बिलोक
नि संपुट लोन परे रे ॥ २ ॥ हसनि प्रकास बिभास देखि कें निकसत
तहां पुनि बेंठत ॥ सूरस्याम अंबुज कर चरणनि जहां तहां भ्रम पें
ठत ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ मेरे नेंन कुरंग भए ॥ जोवन बन तें निकसि च
ले ये मुरली नाद रए ॥ १ ॥ रूप ब्याधि कुंडल दुति ज्वाला किंकिनी
घंटा घोष ॥ ब्याकुल ह्वै एक रकरे खत गुरुजन तजि संतोष ॥ २
भौंह कमान नेंन सर साधे निमारनि चित बनि चारु ठौर रहे न
हिं टरत सूर खेमं द हसनि सिर डार ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ नेंन भये
बस मोहन तें ॥ ज्यों कुरंग बस हो तें नाद कें रत न हीं ता छोहन ते
१ ज्यों मधुकर बस होत कमल कें ज्यों बस चंद्र चकोरि ॥ तेसें हूं ब
स ये हूं स्याम के गुडी बस ज्यों डोरि ॥ ज्यों बस स्वाति बूंद कें चात
क ज्यों बस जल कें मीन ॥ सूरदास प्रभु के बस भए ये छिनु छिनु प्री
ति नवीन ॥ ३ ॥ राग टोडी ॥ ऐसें बस न कहूं हें कोऊ ॥ जेसें बस नंद
नंदन के ये नेंना मेरे दोऊ ॥ १ ॥ चंद चकोर नहीं सर इनकी एको
पल न बिसारत ॥ नाद कुरंग कहां पटतर इन ब्याध तुरत ही मा
रत ॥ २ ॥ ये बस भए सदा सुख लूटत चतुर चतुरई कीने ॥ सूरदा
स प्रभु त्रिभुवन के पति ते इन बस करि लीने ॥ ३ ॥ राग जेतश्री
ए नेंन अपस्वारथ के ॥ ओर इन्हें पटतर को दीजे वे हें बस प
रमारथ के ॥ १ ॥ बिना दोष हम कों परित्यागे सुख कारण भए चे
रे ॥ मिले जाय बहुरयों नहिं माने तब के न हा इहें तउ रे ॥ २ ॥ इन कों भलौ
ह्वै यगो कैसें नेंकु न सेवा मांनी ॥ सूरस्याम इन पें कहां रीझे इन
की गति नहिं जांनी ॥ ३ ॥ राग नट ॥ लोचन भए प्रति ही ढीठ ॥ र
हे हरि के संग निसदिन आनि हीन बल अरु हीठ ॥ १ ॥ बदत ना काहू न
ही निधरक निदरि मोहि निगमन तन ॥ बारबार बुझाय हारी मोहू
मो पर तजन ॥ २ ॥ ज्यों सुभट रन देखि टरत न लरत खेत पचारि
सूर छबि सन मुख हिं धावन निमाखि अत्र न डारि ॥ ३ ॥ राग जेंत
श्री ॥ सेवा इनकी वृथा करी ॥ ऐसे भये दुखदाय क हमकों ये

Shrimad Gokulnathji Maharaj

ह्रसा ४२

ह्रीसोचपरी ॥ ५ ॥ घूंघटओटमहलमेंराखत पलककपाटदये ॥ येनें
कहूंकरैंहमसोंईनाहिनभेटदये ॥ २ ॥ अबपाईइनकीलगराई
रहतनहींपेटसमानें ॥ सुनहुसूरलोचनगुणजोसोईप्रगटाने
॥ ३ ॥ राग मलार ॥ नवनेनेंनरहेएकटककहूं ॥ जबतेंश्रीमुखकमल
कोमकरसपीयेंजाइइनउनहीं ॥ १ ॥ मुरलीधरीअरुनअधरनपर
कुंडलफलककपोल ॥ निरखत एकटकपलकभुलानें मन
दूविकांनेमोल ॥ २ ॥ हमकोंवेकाहूनविसारेंअपनीसुधिउन
नाहीं ॥ सूरस्यामछविसिंधुसमांनी बूष्यातिनहिपाछिनांही ॥ ३ ॥
राग मलार ॥ नेंनानेंननमांझसमांने ॥ टारेनटरनएकमिलिमा
धुकरमोरसमेंउरझांने ॥ १ ॥ मनगतिपंगुभईबुधिविसरीप्रेम
प्रकासलुभानें ॥ मिलेपरस्परखंजनमांनोंझगरतिनिरखिल
जानें ॥ २ ॥ मनवचक्रमपलकओटनभावेंछिनयुगजुगपर
मानें ॥ सूरस्यामकेवसभयेयेजेहीवीतेसोजानें ॥ ३ ॥ राग बि
हागरौ ॥ नेंनालोभीलोभभरे ॥ जैसेंचोरभीतिधरपेंठततबवेठत
उठतखरे ॥ १ ॥ अंगअंगसोभाआगरनेंमिलेतनसोचपरे
जोदेखेंसोईनिरमोलकलेंकरतहींधरें ॥ २ ॥ त्योंलुबधेजोर
रतनतरेलोकलाजनटरें ॥ सूरकछुनहीआवनआवेंलोग
जांनियकरें ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ नेंनाएहिढंगपरेकहांकरोंमाई
आएपिरकेंनचलतकबहूंमेंबुलाई ॥ १ ॥ अबहीलोंयहीआसा
मोहिमिलिहेंआई भावरिसीपारिफिरेन्यारिज्योंपराई ॥ २ ॥
अवनोहेंलोभभरेकपटनेहधाई ॥ तनरूपचोरिहियेंधरोहूं
दुराई ॥ ३ ॥ आपएहूंनाहिलेंन औसेंदुखदाई ॥ मोरेकोंमारतेहूंब
हुलेमामाई ॥ आनिहियेंकरतफिरतदिनहीदिनढिठाई ॥ सूर
दासप्रभूआगेंचलेकहूंजाई ॥ ४ ॥ राग नट ॥ मेरेनेंनचकोरभु
लाने दिननिरहतपलकसुधिविसरीरूपसुधानअघाने ॥ १ ॥
पलघरिकादिनपहरवरखजुगभयेजेतेनहिजानें ॥ खास्सु
परीनिमखनहित्यागतवदनहिमांझसमांने ॥ २ ॥ हरिमुखवि
धुपीयूषपीयनकोंपीयतननेंकुपकानें ॥ सूरस्यामकोदेखि
लालिततनभरेदेखिदेखिअरुझांनें ॥ ३ ॥ राग बिहागरौ ॥ लोचनला
लचतेनटरेरी ॥ हरिसारंगसोंसारंगगीधेदधिसुतकाजजरे
री ॥ १ ॥ तौमधुपवसपरेंकेतवीनाहिक्योंतेनिकरेरी ॥ ज्योंलोभी
लोभहिनाहिछोडत पुनिअतिउमगिभरेरी ॥ २ ॥ सनमुखरहत

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सहृत तृषदारुण मृगज्यों नहीं डुरेरी ॥ उद्दधो खेंय हृजां नत हैंस
वह्हिं नचित सदा करेंरी ॥ ३ ॥ ज्यों पतंग फिरि परत प्रेम वस जीव
त मुरछि परेंरी ॥ जैसें मीन अहार लोभ ते लील तपरें गरेंरी ॥ ४
ऐसे येलुवधे हृरि छवि पर जीवत रहत मरेंरी ॥ सूर सु भर ज्यों
रणनहिं छांडत जवलों धरनि गिरेंरी ॥ ५ ॥ रा ग वि हा ग रो ॥ स्याम
छबि पर लोचन भटकि परे ॥ अति ही भई बिहाल सखी ये निस
दिन रहत खरे ॥ १ ॥ हम तें गये लूटि लेवेकों उनहि पहौं अवसो
च ॥ अपनें कियों तुरत फल पायो राखत घूंघट ओट ॥ २ ॥ एक ट
करहत पराये वस भये दुख सुख सम मुफिन जाई ॥ सूर कहें ऐसे
को त्रिभुवन आवें सिंधु अथाई ॥ ३ ॥ रा ग नट ॥ नैंन भए वोहित
के काग ॥ उडि उडि जात पार नहिं पावत फिरि फिरि आवत लाग
१ ऐसी दिसा भई री इनकी अवलागी पछितान ॥ मो वरजत वर
जत उठि धाए नहिं पायो उनमान ॥ २ ॥ उह समुद्र वूडे वासनध
रे कहां सुखरास ॥ सवहू सूर ये चतुर कहावत उह छवि महा प्रका
स ॥ ३ ॥ रा ग रा म कली ॥ नैंन मानत अपमान सह्यौ ॥ अति अकुलाइ
मिलाइ मिलेरी वरजत जरा पिवैंठ कह्यौं ॥ १ ॥ जाकी वानि परी
सखी जैसी तैसी टेक रह्यौं ॥ ज्यों मरकट मूठी नहिं छांडत नलनी
सुवा गह्यौं ॥ २ ॥ जैसें नीर प्रवाह समुद्र हिं वह्यौ सु वह्यौ वह्यौं ॥ सू
रस्याम इनतें सीख्य कीनी फिरि मो तन न रह्यौं ॥ ३ ॥ रा ग वि हा ग रो
नैंन गये न फिरे री माई ॥ ज्यों मरजाद जाति पांतिकी वहुत्यो फे
रि न पाई ॥ १ ॥ जैसें वाल दिसा नहिं आवें फिरें नहीं तरुनाई ॥ कु
लकी वधू वाहिरी पगिकें कुल में फिरि न समाई ॥ २ ॥ ज्यों जल टर
त फिरत नहिं पाछें आगें आगें हि धाई ॥ जैसी दिसा भई इनहूकी
सूरस्याम सरनाई ॥ ३ ॥ रा ग सा रंग ॥ जव तें नैंन गये मोहि त्यागि
इंद्री गई गायो तन तें मन उनहि विना अब मेरी लागि ॥ १ ॥ वे निर
ई मोहिं मेरो जिय कहां करों में भई विहाल ॥ गुरजन तज्यो यहां
इन पागी मेरें मांथे परयौं जंजाल ॥ २ ॥ इत की भई न उत की सज
नी भ्रमत भ्रमत में भई अनाथ ॥ सूरस्याम कों जाय मिले सब
दरसन करि वे भए सनाथ ॥ ३ ॥ रा ग वि ला वल ॥ नैंनन सों झगरों
करि हों री ॥ कहां भयो जो स्याम संग हैं वांह यकरि सन्मुख लरि
हों री ॥ १ ॥ जन्म हिं ते प्रतिपाल वडे किये दिन दिन कों लेखो करि
हों री ॥ रूप लूटि कीनों तुम काहे अपने वारे कों धरि हों री ॥ २ ॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. कमात पितु भवन एक रहें मैं काहे उनकों डरि हौंरी ॥ सूर स्याम जो
७२ नहिं देहिंगे उनके रंग मैं ढूंढरि हौंरी ॥ ३ ॥ रा बिलावल ॥ नैंना अटके
रूप में पल रहत बिसारे ॥ निसवासर नहिं संग तजें भरि भरि
जल ढारे ॥ १ ॥ अरुण अधर दसनि चमक ही चपला चमकें घन
कुटिल अलक छबि घूंघरे सुमना सुत सोधन ॥ २ ॥ चंपक ली
सी नासिका रंग स्याम हि लीने ॥ नैंन बिसाल समुद्र सी कुंडल अ
ति दीने ॥ ३ ॥ तहां ई रहे लुभाइ कें कछु समुझि न जाई सूर स्याम बै
बस किये मोहनी लगाई ॥ ४ ॥ रा जैतश्री ॥ लोचन भूलि रहे नहीं
जाई अंग अंग छबि निरखि माधुरी एक टेक पल बिसराई ॥ १ ॥
अति लोभी अचवत न अघात हैं ता पर पुनि ललचात ॥ देन
नहीं काहू कों नेंकहू आपु हि डारत खात ॥ २ ॥ ओछे हाथ परी
अपार निधि काहू कों मन आवें ॥ सूर सबहि दई कों सो पों
यह कहि कहि पाछितावें ॥ ३ ॥ रा धनाश्री ॥ नैनन येहि कुटेव प
री ॥ लूटत स्याम रूप आपु नहीं निसा सिपहर घरी ॥ १ ॥ अपम
हि दहू अनोखे पायगये अति सिथिराय ॥ मिले अचानक ब
डभागी दें पूरन दरसन पाइ ॥ २ ॥ लोभी बडे कृपिन कोउ तासपि
कृपा भई इन नारी ॥ सूर स्याम इन कों भयो भोर हम कों निठुर
मुरारी ॥ ३ ॥ रा भैरव ॥ सुनि सजनी मो सों एक बात ॥ भाग बिना क
छु नाहीं पैयें तू कहूं पुनि पुनि पाछितात ॥ १ ॥ नैंन न बहुत करी
री सेवा पल पल घरी पहर दिन रात ॥ मन बच क्रम दई आई जानें
धन्य धन्य यह इनकी जात ॥ २ ॥ कैसें मिले स्याम इन कों धरि जै
सें सुत के हित कों मात ॥ सूरदास प्रभु कृपासिंधु वे सहज बडे हें
त्रिभुवन तात ॥ ३ ॥ रा रामकली ॥ सजनी मो तें नैंन गए ॥ अब ल
गि आस रही आवन की हरि के अंग छए ॥ १ ॥ जब तें कमल बद
न उन दरस्यो दिन दिन औरे भए ॥ मिले जाय हरदी चूना ज्यों ए
कहि रंग रए ॥ २ ॥ मोकों तजि भये आपु स्वारथी वार सम न भए
सूर स्याम के रूप समाने मानों बूंद तए ॥ ३ ॥ रा रामकली ॥ नैंन
गये री अति अकुलात ॥ कहां कहों ऐसी आतुरता पवन बस्य
ज्यों पात ॥ १ ॥ ज्यों धावत जल नीचें मारग कबहूं नहीं ठहरात ज्यों
आए रितु राज सखी री बेली द्रुमनि हरात ॥ २ ॥ ये बस भए ऐसें
जिय उनके मैं व्याकुल पछितात ॥ सूरदास कैसें नहिं बहुरेंगी
धे सांवल गात ॥ ३ ॥ रा आसावरी ॥ नैंनन तें हरि आपु स्वारथी

Shrimad Gokulnathji Maharaj

आंसुवानयहूंजांनीरी ॥ वेहनकोंवेउनकोंचाहतनमिलेहूंथअरु
पांनीरी ॥ १ ॥ सुनियतपरमउदारस्यांमघनरूपरासिउनमांहीरी
कीजेंकहांकृपिनकीसंपतिनेंननहीजुपत्याहीरी ॥ २ ॥ विलसत
उगतरूपसुधानिधिउनकोंकछुनचलावेंरी ॥ सुनहुसूरहमसां
तिवूंदलोंरटलागीनहिपावेंरी ॥ ३ ॥ रा ॥ विहागरो ॥ कपटीनेंन
ननेकोउनाहीं ॥ घरकोंभेदऔरकेआगेंक्योंकहिवेकोंजांही
॥ १ ॥ आपुगयेनिधरककेंद्रमतेवरजिवराजेपचिहारी ॥ मनकों
मनाभईपरिपूरनढरिरीझेगिरधारी ॥ २ ॥ इनहिंविनावेउनहि
विनाएअंतरनाहींभावत ॥ सूरदासयहजुगकीमहिमाकु
टिलतुरतफलपावत ॥ ३ ॥ रा ॥ विहागरो ॥ सजनीनेंनागयेभगा
इ उरवातीकोंनीरवडेरेकेसेंफिरिहेंधाय ॥ १ ॥ वरतभवनजे
सेंतजियतुहेंनिकसेत्योंअकुलाइ ॥ सोसपनोंनहिपथिक
पंथकोंवासालीनोंआय ॥ २ ॥ ऐसीरिसाभईहेंहमकोंसुखपा
योंउहांजाइ ॥ सूरदासप्रभुकोंएनेंनामिलेनिसांनवजाय ॥ ३ ॥ रा
ग ॥ ललित ॥ वासिवदनविलोकिसुखकेंतभएलोचनमधु
पलालचीमेरे ॥ मिलेजायअकुलायअगमनेकहांभयोजो
घूंघटघेरे ॥ १ ॥ चंचलचपलअरुनाहिमाननवारंवारचितेंभ
येचेरे ॥ वारहिकाहेवकतवावरीमांनतकोंनमतेअवतेरे ॥ २
मनगाडिरहीत्रिभंगीमूरतिएकेंगांठिकेंनेंहूफेरे ॥ सूरस्यांमसुंद
रसनमुखभएगयेविसमिसिरहिनेंउरे ॥ ३ ॥ रा ॥ रामकली ॥ नें
ननिवांनिपरीसीहेनीकी ॥ फिरतससंगरहेंपाछेंपाछेंकहाल
गनहेंजीकी ॥ लोकलाजकुलकीमरजादाअतिहीलागतफी
की ॥ अपनेमनउनभलीकरीहेंमोहिरहीहेंवीकी ॥ २ ॥ सूरदासये
जायलुभानेमृदुमुसकानिहरिपियकी ॥ अवहोंपकरिपाइहों
जवहीवांधिकरोंनिजजियकी ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ ऐसोनिठुरनहीं
जगकोऊ जेसेंनिठुरभयेडोलतहेंमेरेनेंनादोऊ ॥ १ ॥ निठुररह
तज्योंससिचकोरतेवेवितुउनअकुलाहीं ॥ निठुररहतजेसें
जलमीनहिन्योंपरिवरमरिजाहीं ॥ २ ॥ निठुररहतदीपकपतं
गउडिनैसीयरसाहमारी ॥ सूरदासएधृगतिनकोंजिनकोन
हिपीरपरारी ॥ ३ ॥ रा ॥ सारंग ॥ परीमेरेनेंननिऐसीवांनि ॥ जवल
गमुखनिरखततवलगिसुखसुंदरताकीखांनि ॥ १ ॥ रीधेवींधे
रहतसखीरीनजीलोककीकांनि ॥ स्यामरूपश्रीमुखचंदविलो

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. ७३

कौंज्यौंचकोररतिमांनि ॥२॥ अतिआधीननीरभरिआयेसकुल
नदर्शनकूंनि ॥ अवकहूंकरौंवांधिकेंसोयेसूरस्यांमकेपांनि ॥३॥
राग सारंग ॥ नैंननऐसीवांनिपरी ॥ लुवधेस्यांमवरूणपंकज
कोंमोकोंतजीखरी ॥१॥ घूंघटओटकियेंरखतनहीं अपनीसींमु
करी ॥ गयेपैंठितावोंनहिमांन्यो देख्यौज्योंनिदरी ॥२॥ गयेसु
गयेफेरिनहिंवहुरेकोंधौंजियहिंधरी ॥ सुनहुसूरमेरेअतिपा
लेतेवसकरेहरी ॥३॥ राग सारंग ॥ नैंननहींसमुझायरही मान
तनहींकह्योंकाहूकोंकठिनकुटेवगही ॥१॥ अनजानतेचितेंव
दनछविसनमुखसूलसही ॥ तनविसर्योंकुलकांनिगवांई
जगउपहासभई ॥२॥ पैतेपरसंतोषनमांनतमरजादानगही
सूरदासइनलोभिनकेसंगवनवनफिरतिवही ॥३॥ राग सारं
ग ॥ नैंनांकह्योंनमाननतमेरे ॥ हरिमांनिकेंरहींमैंहोंकेंनिकटा
सुनतनहीटेरे ॥१॥ ऐसेभयेमनोंनहिमेरेजवहिंस्यामसुखहेरे ॥ मे
पछितातिजवहिंसुधिआवतिजतुरीमोहिंहेरे ॥२॥ एतेपर
कवहूंजोआवतनडरपतनलरतघनेरे ॥ मोहूंवरवसउतहिंचला
वतदूतभयेउनकेरे ॥३॥ लोकवेदकुलकांनिमांनीआनिहीं
रहतअनेरे ॥ सूरस्यांमधौंकहाठगोरीलायगयेधरिचेरे ॥४॥ रा
ग सारंग ॥ कवहूंधौंआवतिहैमोहिलेंनमाईरी ॥ आवतहीयहकु
हतस्यांमनोहिंबुलाईरी ॥१॥ नेंकध्यांनरहतविरमजाततहोइ
जाईरी ॥ मांनतहींवानिनहीऐसेंविसराईरी ॥२॥ उनकोंसुख
देतमोहिंदेवोपाईरी ॥ सूरस्यांमसंगसंगहिनिसवासरजा
ईरी ॥३॥ राग विलावल ॥ नैंनांमोकोंनहिपतियांहीं ॥ जेलुवधेहरि
रूपमाधुरीओरनतएनांहीं ॥१॥ जेहरिहिंधेंनुओटपयवाछ्यौं
तेसुखपरसीछांकें ॥ कौंमधुपरमधुकोसकमलतजिरुचि
मांनतहैंआकें ॥२॥ जेषटरससुखभोगकरतहैंतेकैसेंखरिखा
नें ॥ सूरसुनहुलोचनहरिरससतजिहमसोंकोंत्रिपतानें ॥३॥
राग विलावल ॥ इननैंननकीटेवनजाई ॥ कहाकरोंवरजनहीं
चंचललागतहेंउठिधाई ॥१॥ वाटघाटजहांमिलतमनोहरतें
हांयेचलततलजाई ॥ गोधेकनककचोरज्योंआतुरवाछाविचितें
चुराई ॥२॥ लोचनमधुपजायलपटेतहांहरिमुखपंकजपाई ॥
घूंघरवसजलहींनमीनज्योंउठतअधिकअकुलाई ॥३॥ निल
जभयेकुललाजगवांईतासोंकहांवसाई ॥ सूरस्यांमसुंदरमुख

Shrimad Gokulnathji Maharaj

री॥ बिनु देखें रह्यौ न जाई॥४॥ राग धनाश्री॥ नेंसी जा की देव परी री
मो तें जिय के पाछें जोई जोई धरनि धरी री॥१॥ जैसें चोर नजें न पहि
चोरी वाजत अधिक करी री॥ नरु जिव जाय हानि पुपावत व
कत हि वक तम री री॥२॥ जद्दपि मैं समुझाव निपुनि पुनि यह इक
हि कहि तुलरी री॥ सूरस्याम सारस नन ते ये कटकर हत न निमि
ख घरी री॥३॥ राग धनाश्री॥ लोचन सुपने के भ्रम भूले॥ जो छबि
निरखत सो पुनि नाही भरमा हिंडोरें फूले॥१॥ एक टक रहत त्रि
पति न म्हिक वहूं ये ते परे हें फूले॥ निटर रहत मोहि नाहि मानत
कहत कें न हम तूले॥२॥ मो तें गये कुंभी के जर लों ऐसे बेनि
रमूले॥ सूरस्याम जलरासि परे अब रूप रंग अनुकूले॥३॥ रा
ग सारंग॥ नहीं टीम्नें नन ते औरे॥ के जनों में बसन्ति समका
बनि उलटि करत हें फोर॥१॥ मो सों लरत भिरत नहीं सन्मुख
महा सुभट ज्यों धावत॥ मोहि धनुस सिर पर को टाछन मा
र करत न हि आवत॥२॥ मान न तन गहि लचुर जुफार न आपु
नम न न नाहि टूटत॥ सूरस्याम अंग अंग की सोभा लाभ सें न
सों लूटत॥३॥ राग सारंग॥ नेंना कहते धर को चोरी॥ चोर न गये
स्याम अंग सोभा उतासि र पसीट गोरी॥१॥ अपुव सकरी दून
कों हूं लीनों मो तन न फेरि चितायो॥ मो कछु रही संपदा मेरी
सुधि बुधि चोरि लिवायो॥२॥ धाये आप निधरक सों लेंग
ये संग लगाई॥ स्याम ऐसे हें माई उलटी चालि चलाई॥३॥
राग सारंग॥ स्याम अंग नेंना सांचेरी॥ सार गमि पुनि निकसि नि
लज भये रंग रंग नाचेरी॥१॥ मुरली नाद मृदंग मृदंगी अध
र बजावत हारी॥ गएनि टेरि घर द्वार चलावत लोभ नचाव
त हारी॥२॥ चंचलता नि तेंन कटा छ रस भाव बताव त नीकें॥
सूरदास रिझये गिरधारी गुण माने उन ही के॥३॥ राग सारंग
नट के बस भये ये नेंन॥ देखत ही पुनि जान कहां धों पलक
रहत नाहि ऐंन॥१॥ स्वांगी से ये भए रहत नहें छिन नाहि औरछि
नु औरं ऐसे जात रहत नहि रोकें लगेन हूं अनिटे र॥२॥ भा
ये सु गये गये अब आए जानत लगी नाहि बार॥ सूरस्याम सुर
ग नाचा हत जिनकों वार न पार॥३॥ राग बिलावल॥ मो नेंनेंन
गये री ऐसें॥ जैसें बधिक पींजरे ते खग छूटि जात हें तैसें॥१॥
सकुच फांद में फंद रहत नहें ते धों तोरें कैसें॥ में भूली यह ला

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू॰सा जभरोसें रहत हे वे वेसें ॥ ४ ॥ स्यांम रूप वन मांझ समाने सो परि
१५ हे अनेसें ॥ सूर मिले हरि कों आतुर ह्वै ज्यों सुरभी सुत जैसें ॥ ३ ॥ रा
ग धनाश्री ॥ नेंना भये पराये चेरे ॥ नंदलाल के रंग गये रंगि अब
नाहीं वस मेरे ॥ १ ॥ जद्यपि जतनन किए जुगावित वनि स्यांम ल
सोभा घेरे ॥ तऊ मिलि गये दूध पांनी ज्यों निवरत नहीं निवेरे
२ ॥ कुल अंकुस आरज पथ तजि कें लाज सकुच रिए डेरे ॥ सूर स्यां
म के रूप समाने कैसें हूं फिरत न फेरे ॥ ४ ॥ राग रामकली ॥ जांकी
जैसी वांनि परी ॥ कोऊ कोटि करो नहि छूटें जोई धरनि धरी ॥ १
वारे ही तें इन के ये ढंग चंचल चपल अनेरे ॥ वरजन नहीं वरज
त उठि दौरे भये स्यांम के चेरे ॥ २ ॥ ये उपजे आछे नछत्र के लंपट
भए वजाई ॥ सूर कहां तिन की संगति जे रहे पराए जाई ॥ ३ ॥ रा
ग सोरठि ॥ अखियां निरखि स्यांम मुख फूली ॥ ... जाय मधु
प ज्यों लंपट मो कों प्रति सय भूली ॥ १ ॥ कुल लज्जा कुल धर्म ना
म कुल मांनत नाहिं न एकौ ॥ ऐसें ह्वै ... भए स्यांम के वस ज
त सुनत न एकौ ॥ २ ॥ ये लुबधे हरि ... माधुरी तन की रिस आवि
सारी ॥ सूर स्यांम मोहनी ... कछु पढि कें सिर डारी ॥ ३ ॥ रा
ग विहागरो ॥ अखियां हरि के हाथ विकांनी ॥ मृदु मुसकांनि मो
ल इन लीनी यह सुनि सुनि पछितांनी ॥ १ ॥ कैसें रहत रहे मेरे
वस अब कछु औरे भांति ॥ अब वे लाज मरें मो देखें वेंठ हरि
मिलि पांति ॥ २ ॥ सुपने की सी मिलन करत हें कब आवत कब
जात ॥ सूर मिले धरि नंदनंदन कों अनत न नाहि पतियात ॥ ३ ॥
रा ग विलावल ॥ अखियन ऐसी धरनि धरी ॥ नंदनंदन देखें सु
ख पावें मो सों रहत डरी ॥ १ ॥ कबहूं रहत निरखि मुख सोभा क
बहूं देह सुधि नांही ॥ कबहूं कहति कौंन हरि को मैं ज्यों तनम
न के जांही ॥ २ ॥ अखियां ऐसी हि भई स्यांम कों नाहि रह्यो कछु भे
द ॥ सूर स्यांम कों परम भावती पलक न होत विछेद ॥ ३ ॥ राग
री ॥ अखियन तन बने वें रथ ह्यौं ॥ जब हम हटक न हरि रास
न कों सो रस नहि विसर्यो ॥ १ ॥ तब ही तें उन हमहि भुलाए ग
ये उतहि कों धाई ॥ अब तो रत कित रकि प्रेंठ तहें लीने लेत व
नाई ॥ २ ॥ भई जाय वे स्यांम सुहागिनि बडभागिन कहवावें ॥ स
हज रास वे सी प्रभु नातजि हम पें कौ आव आवें ॥ ३ ॥ राग कांनरो ॥
धन्य धन्य अखियां बडभागिनि ॥ जिन बिनु स्यांम रहत न हि नें

Shrimad Gokulnathji Maharaj

कहुं कीन्हें उन्हें सुहागिनि ॥ २ ॥ जिनकों नहीं अंगनें हरत निस
दिन दरसन पावें ॥ तिनकी सरि कहि कैसें कोउ जे हरि के मन
भावें ॥ ४ ॥ हम हीं तें यह भई उजागर अब हम पररि समांनें ॥
सूरस्याम अब विवस भए हैं कैसें रहें लुभानें ॥ ३ ॥ राग कांन्हरो ॥
रों ॥ पच्छिया बड़ भागिनां भामिनि री फ स्याम ॥ आगें तें नेंकु न
टारहीं वासर अरु जांम ॥ १ ॥ एकें सी हैं लोभिनी छवि धरनतु राइ
औरन अैसी करि सकें मरजाद रजाइ ॥ २ ॥ पहलें पहलें हीं मन
करें अब तों पछितान ॥ उनके गुनगन गुनि फरें ये हूं न पत्या
त ॥ ३ ॥ इंद्री सब न्यारी परीं सुख लूटत आंखि ॥ सूरदास जे संग रहे
ते उबरे झांखि ॥ ४ ॥ अथ समय ॥ राग आसावरी ॥ खेलन के मिस
कुंवरि राधिका नंद महरि घर आई हो ॥ सकुच सहित मधुरे स
र बोली घर हैं कुंवर कन्हाई हो ॥ १ ॥ सुनत स्याम कोकिल सम
बांनी निकसें अति अनुराई हो ॥ माता सों कछु करत कलह कर न
हरि सो डायो विसराई हो ॥ २ ॥ मैया री तू इनकों चीन्हति बारंबा
र बताई हो ॥ जमुना तीर कालि में भूली बांह पकरि लें आई हो
३ ॥ आवति इहां तोहि सकुचति है मैं सो ह बुलाई हो ॥ सूरस्या
म अैसे गुन आगर नागरि बहुत रिझाई हो ॥ ४ ॥ राग नट ॥ ना
म कहा है तेरो प्यारी ॥ बेटी कौन महरि की तूं कहि सु कौंन तेरी
महतारी ॥ १ ॥ धन्य कूंखि जिनि तोकों राख्यौ धन्य घरी जिहिं तू अ
वतारी ॥ धन्य पिता माता धनि तेरे छवि निरखति हरि की महत
तारी ॥ २ ॥ मैं बेटी वृखभांन महरि की मैया तुमकों जांनति ॥ जमु
ना तट बहु बार मिलन भयो तुम नाहीं पहचांनति ॥ ३ ॥ अैसें क
हि वाकों मैं जान्यों उह तों बड़ी छिनारि ॥ महरि वड़ो लंगर सब दि
नकों हसन देन मुख गारि ॥ ४ ॥ राधा बोलि उठी बाबा कछु तुमकौ
सों ढ्यो ढोटो कीनी ॥ अैसे समरथ कब देखें हसि प्यारी उर लीनी
५ ॥ महरि कुंवरि सों यह कहि भाखति आव करों तेरी चोटी ॥ सू
रदास हरि सखी नंदरांनी कहति महरि हम जोटी ॥ ६ ॥ राग गौरी ॥
जसुमति राधा कुंवरि संभारति ॥ बड़े बार श्रीमंत सीस के प्रेम
सहित लें लें निरवारति ॥ १ ॥ मांग पारि वेनी हि संभारति गूंथी
सुंदर भांति ॥ गोरे भाल विंदु वदन मांनों इंदु प्रात रवि कांति
२ ॥ सारी चीर नई फरिया लें अपने हाथ बनाई ॥ अंचल सों मुख
पोंछि अंग सब आपुहीं लें पहराई ॥ ३ ॥ तिल चांवरी वतासा मे

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा वारईकुवरिकी गोद ॥ सूरस्यांम राधा तन चितवत जसुमति म
७५ न आनंद मोद ॥४॥ राग आसावरी ॥ मेरे आगें महरि जसोदा मैयारी
तोहि गारी दैनी ॥ वाकी घात कछु मैं जांनत उहै जैसी तैसी मैंची
नी ॥१॥ तो कों कहि पुनि कह्यौ बाबा कों बडो धूत व्रखभांन ॥ मैंत
वकह्यौं ठग्यो कब तुम कों हसि लागी लपटांन ॥२॥ भली कही
तू मेरी बेटी लियो आपुनों दाव ॥ जो मोहि कह्यौं सबै उनके गुन
हसि हसि कहत सुभाव ॥३॥ फिरि फिरि पूछति हैं राधा सों सुन
त हसत सबनारि ॥ सूरदास व्रषभांन घरनि जसुमति कों गा
वति गारि ॥४॥ राग सारंग ॥ सुता लए जननी समुझावति ॥ संग
बिटियनि संग मिलि खेलों स्यांम साथ सुनि सुनि रिस पा
वति ॥१॥ जाते निंदा होय आपुनी याते कुल कों गारी आवति
सुनि लाडिली कहति यह तो सों तो कों ताते रिस करि धावति
२ अब समुझी मैं बात सबन की झूठे ही सब बात उडावति
सूरदास सुनि सुनि ये बातें राधा मन मन हरख बढावति ॥३
राग विहागरो ॥ मेरी सीख काहे न करति ॥ आज हु भोरी भई री
हौं कहति तो सों डरति ॥१॥ ससि निरखि मुख चल तन नाहि नैंन
निरखि कुरंग ॥ कमल खंजन मीन मधुकर होत हैं चितभंग
२ देखि नासा कीर लज्जित अधर रस ननि हारि ॥ बिंब अरुण
धूक विद्रुम दामिनी दरभारि ॥३॥ उरनि रखि चक्रवाक विथके
कटि निरखि बनराज ॥ चाल निरखि मराल भूले चलत नैंन
जराज ॥४॥ अंग अंग अविलोकि सोभा मनहि देखि विचारि
सूर मुख पट देत काहे न वरष रस जुगभारि ॥५॥ राग सारंग
अब राधा तू भई सयांनी ॥ मेरी सीख मांनि हृदय धरि जहां न
हां डोलति बुद्धि अयांनी ॥१॥ भई लाज स्यांम के संगत सुनि यह
बात कुवरि मुसिकांनी ॥ हसति कहा मैं कहति भली तू सुनत
नहीं लोगन की वांनी ॥२॥ आज तिहें कहूं जांन न दैहों सुनत
ही अकथ कहांनी ॥ सूरस्यांम के संग न जेहों जा कारन तू मोहि
रिसांनी ॥३॥ राग सारंग ॥ भली वात बाबा आवन दे कांन्ह लगाइ
देत मोहि गारी ऐसे बडे भये कब तें वे ॥१॥ कालि मोहि मारग में
रोक्यौ जाति हुती सखियन संग दधि लेकें ॥ कहन लगे मेरी
देहु खिलौना तारि नतें लैं भगि चुराय कें ॥२॥ छवि आछे मोहि
कान्ह कुवरि सों तिन कों कहति नित प्रति तो सों हैं ॥ सूरजना

Shrimad Gokulnathji Maharaj

निसुनिसुनियेबानी पुनिपुनिमुखनिरखतिविहूसतिहैं ॥ ४ ॥ रा
ग केदारो ॥ सुतासोंकहतिवृखभांनघरनी ॥ कहांतूराधिकाभोर
तेफिरतहै तेरीगतिमोपेंनहीजातवरनी ॥ १ ॥ तोरिमोतनसिरीत
वगुपतिकेंधरीउहूयेहिमिससकुचरही मुखनबोलें ॥ मनहु
खंजनचपलचंदफंदपरेउडतनहिवनतइतउतहिडोलें २
कहांतेरीप्रक्रतिपरीधौंलाडिलीअबहितेंतूंकहांजातिहौ
री ॥ सूरकहैंजननिबोलेंनहिआजुतोकोंपरोसिधौंरिहेंआ
परवायगीरी ॥ ३ ॥ राग नट ॥ जननी पुनिपुनिग्रीवनिहारें ॥ देखों
नहीसुतसिरीमालासोजिनकितहूंडारें ॥ २ ॥ बोलेंनहीवात
पहसुनिरहीमनलागीमुसिकांन ॥ अबहीमोकोंखीजिपठे
हैंतनिहैंउहांकोंजांन ॥ २ ॥ भलीबुद्धिमेरचितआईकह्यपी
तिहैंसांची ॥ सूरदाससराधिकानागरीनागरकेरंगराची ॥ ३
रा ग ध नाश्री ॥ नासुतनहीसुनसरीगवाई ॥ तवहीतैंघरपेंठन
पेंहैं अबअैसेढंगआई ॥ १ ॥ तोवरजोंआपनसोईसोईकरिहे
खोरीगुणमाई ॥ एकएकनगासतनसतरेमनकोंलाखटका
हेंलाई ॥ २ ॥ ताकेहूएपयरीसोदेहैंधीवैठनिखिपाई ॥ सूरसुन
तरीकुवरिराधिकातोकोंनहीमिलाई ॥ ३ ॥ राग कल्यान ॥ मैहेंके
हूंसुनतसिरीमोरी ॥ अबसुखिभईलईवाहीनेंहूसतचलीवृष
भांनकिशोरी ॥ १ ॥ देखोधौंकहाकरिहेंवाकोंवडेलोगसीख
तहैंचोरी ॥ मोकोंअजुअवेरलागिहैंढूंढेंगीव्रजघरघर
खोरी ॥ २ ॥ सूरस्यानीनिधरकह्यैसवसोंचतुरराधिकावातन
भोरी ॥ मिलिआयगिरधरसोंसजनीवृंदावनविहरतरोऊ.
री ॥ ३ ॥ राग मलार ॥ हरिसंगनीकीलागतिवूंदें ॥ कंचुकीचोरि
चूनरीभीजीखेलनकहूंपरीसिरगूदें ॥ १ ॥ ससिवदनीमृगनें
नीबालाकनककलसकुचकूदें ॥ कोरिहेंअंकजुमुदितसूर
प्रभुमिटतविरहकीरूंदें ॥ २ ॥ राग मलार ॥ दीजेकांन्हकांधेकी
कामरि नेंन्हीनेंन्हीवूंदनवरखनलाग्योंभीजतहैंकुसमाव
र १ वारवारअकुलाइराधिकादेखोमेघाडंवर ॥ हसिहसि
रिझिवेंचिरहेरोऊअोढिसुभगपीतांवर ॥ २ ॥ सिवसनकादि
कनारदसारदअंतनपावेंतुंवर ॥ सूरस्यांमगतिलखिन
परतहैंप्रीतिरीतिअतिजुंवर ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ राधाउरउरान
घरआई ॥ देखतहीकीरतिमहतारीहरखिकुवरिउरलाई २

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू॰सा
७६

धीरजनभयौंसुतामानानियदूरिकियौंतनसोच॥मेरीकोंमेंकाहे
त्रासीकह्योकियौंयहपोहेच॥२॥तेरीमेयाहरसुतमेरीजाकार
नमोहित्रासी॥सूरराधिकाकेगुणअैसेमिलिआईअविनासी
३॥रागकेदारो॥रूपेसुरतिसंग्रामकहियतनीके॥एकएकरण
धीरजोधाप्रबलमूरतिनहिलेंप्रतिसबलतीके॥१॥भौंहकों
दंडसरनेंनबानकेकांमछूटनमांनोंकटाछनतिहारे॥हस
निधुजचमरकरबरणलोहेफलकनखहदयघातनहिजा
सभारे॥२॥पीतपटतुरिकंचुकीतोरिकरनसोंकवचसनाह
एटूटेतनते॥भुजाभुजधरतमांनोंदुरदसुंडनलरतउरडरन
भेरदोऊजूरमनते॥३॥लटकिलपटानिमनोंसुभटलरेखेत
रतिसेजरचिकुसमसबसुफलकीनों॥सूरप्रभूरसिकपीय
राधिकारसिकनीभागउनमहिमसुखलूटिलीनों॥४॥रा
बिभास॥ललितासंगसखिनकोंलीनें॥देखतसुखदेखतअ
तिभावतएकटककलोचनदीने॥१॥प्यारीस्यामअंगकीसो
भानिरखकरेख्योचाहत॥उतनासोंजिनागरनेंननकोंनिडर
रूपअवगाहत॥२॥उनतउदारमेघाकीसीमाइतलोभहि
हिपार॥सूरस्यामअंगअंगमाधुरीसोभानिरखतवारंवार॥३
रागरामकली॥ललितासोभाबिवसभईभारी॥उहचितवनिउ
हमिलनिपरसपरतिसोभाबनवारी॥१॥एकटककअंगअं
गअवलोकतनवसभयेविहारी॥उहअनुरागछविलेतरे
नवेएकसेएकअधिकारी॥२॥ललितासंगसखिनसोंभा
खतिदेखोछविपियप्यारी॥सुनहुंसूरज्योंहोमअंगनिघन
ताहूनेंयहप्यारी॥३॥रागसारंग॥प्यारीकरबासुरीलई॥मन
मुखहंतुमसुनहुरसिकपियललितत्रिभंगभई॥१॥उठतरा
गरागिनीतरंगानिछिनुछिनुउपजनई॥आलबालनंदला
लअबणपरजनुमोहनीमई॥२॥नमतसुधाकरबदनअ
मितछविमनमोंहनचितई॥मनहुचकोरमननमोहमगतन
सुधिबिसरिगई॥३॥कबिपीतांबरछांहनाथआलिबालिव
लिकेंरिझई॥सूरसखीहसिकमलनेनकोंराधाअंकरई॥४॥
रागधनाश्री॥कुंजबनगवनदंपतिबिचारें॥नारिकोंभेखक
रिनारिकेमनहिहरिमुकरलेंभावतीछबिनिहारें॥१॥भामिनी
अंगउहनिरखिनटवरभेखहसतहीहसतउहमेंटिडारैं।

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सहज अपनो रूप धर्यो तब राधिका और भूषण लै उर हि धा-
र्यो ॥२॥ त्रिया कों रूप धरि संग राधा कुवरि जात ब्रज खोरि नहि
लखन कोऊ ॥ सूर स्वामी स्वामिनी बनी एकसी कोंन पटतर
और सम पर सरे ऊ ॥३॥ राग कल्यान ॥ स्यामा स्याम कुंज बन आवत
भुज भुज कंध परस्पर दीने यह छबि उनहीं पावत ॥१॥ इनतें ख
ग्वाली जानत ब्रज ऊजन तें एरेऊ प्रान ॥ दृष्टिहीने चितवत उन ही
तन एक टक नैंन लगाय ॥२॥ एक राधा दूसरी कोंन है या कों
नहि पहचांनो ॥ ब्रज वृषभान पुरा जुवतिन कों एक एक करि
जांनो ॥३॥ यह आई काऊ और गांव ते छबि सांवरी सलोनी ॥ सू
र आजु यह नई भामिनी एक हि अंग न लौनी ॥४॥ राग सारंग ॥
कहि राधा ये को हैं री ॥ अति सुंदरि सांवरी सलोनी त्रिभुवन त्रि
यमन मोहै री ॥१॥ और नारि इनकी सरनाहीं कहौं न हम सो जो
है री ॥ काकी सुता वधू है काकी काकी जुवती यो है री ॥२॥ जैसी
तुम तैसी है ये ऊ भली बनी तुम सो है री ॥ सूरहु स्याम चतुर रा-
धिका पच तुरन की भो है री ॥३॥ राग [illegible] ॥ मथुरा ते ए आई हैं क
छु सनबंध हमारो इनसों तातें आहि बुलाई हैं ॥१॥ ललिता सं
ग गाई राधि वे बन उनहि इन्ह लोचि न्हाई हैं ॥ उहह सने हू जां निरीस
जनी भवन आजु हम पाए हैं ॥२॥ तब ही की पहचांनि हमारी ऐ-
सी सहज सुभाई हैं ॥ सूर मोहि देखे यह भावति आई संग उठि
धाई हैं ॥३॥ राग [illegible] ॥ इनकों ब्रज ही क्यो न बुलावहु ॥ वें वृषभा-
नपुरी के गोकुल निकट हि आंनि बसावहु ॥१॥ ये हूं नवल नव
ल तुम हू हो मों हन कों देऊ भांवहु ॥ मोकों देखि कह्यो अति घू-
घर का हे न लाज छुटावहु ॥२॥ यह अचरज देख्यो नहि कबहूं जु
वती प्रीति हि दुरावहु ॥ सूर सखी राधा सुनि पुनि पुनि कहत नि-
ज महि मिलावहु ॥३॥ राग बिहागरो ॥ मथुरा में बासि बास तुमा-
रो ॥ राधा सों उपकार भयो यह दुर्लभ दरसन भयो तुम्हारो ॥१॥
बारबार कर गहि गहि निरखत घूंघट ओट गहि न्यारो ॥ क-
बहूं कर परसत कपोल छुइ चटकि लेत हि हमहि निहारो ॥
२॥ कछु में हू पहचांनत तुम कों तुमहि मिलाऊं नंद दुलारें
काकों तुम सकुचति हो सो कहि कहा है नाम तिहारो ॥३॥ ऐसी
सखी मिली तोहि राधा तो काहे न बिसारी ॥ सूरदास दंपति म-
न जांनो ऐसें कैसे होत उबारौं ॥४॥ राग रामकली ॥ राधा स

सू॰सा॰ सी मिली मन भाई ॥ जब मोहन सों नेह लगायो बहुत भई चतुरा
७७ ई ॥ ५ ॥ और भई इन ते तुम कों सिख ग्रह जन सों निठुराई ॥ काहू कों
मन में नहिं आनत हम हूं सब बिसराई ॥ २ ॥ तुम हू कुसल कुस
ल हैं येऊ आप स्वारथी माई ॥ सूर परस्पर दंपति आतुर चतुर
सखी लखि पाई ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ यह सखी अबलों कहां दुरा
ई ॥ येते दिवस हम कबहूं न देखी अब जु कहां ते आई ॥ १ ॥ त्रिभु
वन की सोभा सब गुन निधि नहिं विधि की उपजाई ॥ विश्व मा
न वृषभान नंदनी सहचरी सब सुखदाई ॥ २ ॥ अपने मन ता कि
न कितन तोलति पियतन मुरि रिनाई ॥ रति रूप की रासि राधि
का कहें कों नपुर पाई ॥ ३ ॥ रचि रहे रस सुरति सूर दोउ निरख
नैंननि काई ॥ चीन्हें है अलि जाउ कुंज बन छांडि देहु चतुराई ॥ ४
राग केदारो ॥ नंद नंदन हसे नागरी मुख चितै हरषि चंद्राव
ली कंठ लाई ॥ बाम भुज रवन दछिन भुजा सखि अंस कुंज भव
न धाम सुख कहि न जाई ॥ १ ॥ मनो बिबि दामिनी बीच नवघन
सुभग देखि कामरति सहित लाजे ॥ २ ॥ किधों कंचन लता बीच
तमाल तरु भामिनी बीच गिरिधर बिराजे ॥ ३ ॥ गये ग्रह कुंज अ
लि गुंज सुमन निपुंज देखि आनंद भरि सूर स्वामी ॥ राधिका आ
न चंद्रावली रवण प्रिय निरखि छबि होत मन काम कामी ॥ ४
राग नट ॥ देखियत चार चंद्र एक ठौर ॥ निरखत बैठि नितंबनि
पीय संग सु रसिका की ओर ॥ १ ॥ हैं विधु की गति स्याम बरन है
विधु की गति गोर ॥ ता के मध्य चारु सुकराज नहिं फल आख
को र ॥ २ ॥ देखत बने कहत नहिं आवे रस जारी मन मोर ॥ सूर रास
प्रेमी सोभा पर बलि बलि नंद किसोर ॥ ३ ॥ राग नट ॥ ठाढे नंद
गोपाल ॥ बोलि लीने देखि ललिता सेन दें ततकाल ॥ १ ॥ हंसत
गये हरि गेह ता के कोऊ न जानत भेद ॥ मिली हरि कों लाय उर
भरि चापि कुच न कठोर ॥ २ ॥ कह्यो मेरे धाम कबहूं कोन आवत
स्याम ॥ सूर प्रभु कहि आजु नागरि आइ हैं हम जाम ॥ ३ ॥ राग गो
री ॥ सांझ हि ते हरि पंथ निहारें ॥ ललिता रचि करि धाम आपुने
सुमन सुगंधन सेज सवारें ॥ १ ॥ कबहूं कहत वारने ठाडी कब
हूं कि गनति गगन के तारे ॥ कबहूं क आय गली में जोवति अ
जहूं न आए स्याम पियारे ॥ २ ॥ बैठे बहु नायक अन नतु भाने औ
र स्याम के धाम सिधारे ॥ सूर स्याम बिनु बिलपति बाला तमचु

Shrimad Gokulnathji Maharaj

रंजहूंतहूंसब पुकारें ॥३॥ राग भैरव ॥ ललितानमधुरटेरसुन्यौं
वेवहूनायकअनतलुभानेनहिआयेजियकहूंगुन्यौं ॥१॥ वि
नुकारनदैंआसगयेपियवारवारत्रियसीसधुन्यौं ॥ सेजसवा
रिपंथनिमिसिजोवतअरुनअंनिभयोंचंद्रसुन्यौं ॥२॥ कोऊवतुना
रिगहिराख्यौंअपनेप्रेमसुहागहुन्यौं ॥ सूरस्यांमयानेनहि
आयेमातपिताकोंत्रासघन्यौं ॥३॥ पाअरकारखंडितापसंग
॥ राग विभास ॥ रंगरंगीलीललितासहितवीनवजायोंजामिनिके
प्रात ॥ पोंढेरेलिस्यांमश्रीस्यांमाखुलेनदृगउरमेंनसमात ॥१॥
तानननरसतानननपटऊपरमिलेरहतविछुरेनसुहात ॥ सू
निरखिसुखरीझिपरस्परकोंकहिसकतजामिवेकीबात
॥२॥ राग विभास ॥ पोंढिरहीसुखसेजलटेंतीदिनकरकिरनफ
रोखेंसुकिआई ॥ उठिवैठेलालनविलोकिवदनविधुनिरख
तनैननारहेलुभाई ॥१॥ अधखुलेपलकनलखमुखछवितवत
मृदुमुसिकातहसिलेनजभाई ॥ सूरदासप्रभुगिरधरनाग
रलटकिलटकिहसिकंठलगाई ॥२॥ राग विलावल ॥ उरझौं
नीलांवरपीतांवरसंहियां ॥ कुंडलनसोंलरलटवेसरिसों
पीतपटहारहूमेंवनमालसोंहियांसोंवहियां ॥१॥ हंसगति
आनिछविअंगअंगारहीकविउपमाविलोकिवेकोंपटत
रनहियां ॥ कांमकेकलोलछूटेसेजहूकेसुखलूटेसूरप्रभु
विलसतकरसोंकीछहियां ॥२॥ राग रामकली ॥ नीकेंआए
गिरवरधारीनागर ॥ जियकीकृपाहमतवहीजांनीभोरखु
लाईआगर ॥१॥ तुसरेचिंततनेनअरुनभयेसकलनिसाके
जागर ॥ जिनतुमयेयहखेलरच्योहैऐसीकोंनउजागर
॥२॥ तुमअपुनेहीरंगहिरीझेचतुरनागरिकेवागर ॥ वलिवलि
जाउमुखारविंदकीसुरतिकलेवरसागर ॥३॥ गुणकहिय
तकहिपारनआवतमसिपर्वतछिनकागर ॥ सूरदासप्र
भुहमहिलजावततुमहोंसदाउजागर ॥४॥ राग ललित
उनींदेकांन्हआयेरीमेरेनैनभरेरसमाते ॥ डगमगपायधर
तधरनीपरवेंनबोलतअरुझांते ॥१॥ सकअंगासिथलअ
मजलभीनेवारंवारजभाते ॥ काजरेखरहीअधरनपरका
हकोंस्यांमलजाते ॥२॥ विनगुणमालविराजतउरपरनख
छतनहीछिपाते ॥ सूरदासप्रभुसांचीकहैंतुमकोंनत्रिया

Shrimad Gokulnathji Maharaj

संगराने ॥४॥ राग ललित ॥ राधे वसन स्याम तन चीन्हीं ॥ सारंग
वदन विसाल सुलोचन हरि सारंग जानि रति कीनी ॥१॥ सुधा
पान करि कैंनी की विधि रह्यो शेष फिरि मुद्रा दीनी ॥ सूर सुबे
स आहि रति नागर भुज आकर खि वांम कर लीनी ॥२॥ रा
ग रामकली ॥ देखो मेरी ओर नंदकिसोर ॥ विनती करत भयो
भोर हूं मचितवत तुम चितवत नाहीं ऐसे कर्म कठोर ॥१॥
जन्म जनम की दासी तिहारी तापर इतनों जोर ॥ सूरदास
प्रभु तुमरे दरस पर वारोंगी कंचन खोर ॥२॥ राग ललित
मेरे आये भोर पियवा के सब निसि जागे ॥ सांची कहो तु
म वा ही त्रिया की सों पाये प्रेम रस चोर ॥१॥ कहूं अंजन क
हूं पीक लागि रही काहू को दाव ततनंदकिसोर ॥ सूरदास
प्रभु तुम बहुरंगी रंगे हो चहुं ओर ॥२॥ राग ललित ॥ कहां जु
वसे तुम रात ॥ हो नंद सुवन चारि पहर मोहि यो रिजुग बीते
तुम जु आए परभात ॥१॥ लटपटी पाग नीर भरी अखियां का
जर लग्यो तेरे गाल ॥ बोलियन के नेंन खुवि गयो तन में क
सानि भयो तेरे गात ॥२॥ ह्हो रहो हो रवि भांन नंदनी ऐसें माति
बोलो मुनि हूं जसोमति मात ॥ सूरदास प्रभु तुम रे मिलन
कों रजनी कल्पसम जात ॥३॥ राग बिलावल ॥ आजु प्रातिसो
भित हैं तन स्यांम ॥ ...सन हूरी जी नेनें दनें दग मनासि नसों म
ग्राम ॥१॥ मुकलित कचन समान मुकट रुचि रोष अरुण दे
रूनेंन ॥ अरुन चित गति भांति आलस वस बोलत वन तत न
वेंन ॥२॥ नख छत श्रोणि प्रस्वेद गात तें चंदन गयो कछु छू
टि ॥ मदन सुभट के सरि सुदेस मानों लगे कवच खट फूटि ॥
३॥ दोऊ दिसय ह प्रीति प्रगट भई सनमुख सुभट प्रहार ॥ सूर
दास प्रभु परम सूर में नाने नंदकुमार ॥४॥ इति श्री दशमस्कं
धे एक विंशतिमोध्याय: ॥२१॥ अथ चीरहरन लीला ॥ राग
सूहो बिलावल ॥ नंदनंदन हरि गिरवरधारी ॥ देखत री फो
घोष कुमारी ॥१॥ मोर मुकट पीतांबर काछें ॥ आवत देखे गाइ
न पाछें ॥२॥ कोटि इंदु छवि वदन बिराजें ॥ निरखि अंग प्रतिम
न मथ लाजें ॥३॥ अति कुंडल छवि विन ही तूली ॥ दसन दम
कि दामिनि भूली ॥४॥ नैन कमल मृग सावक मोहे ॥ इंदु
धनुष भों हनि जुग सोहे ॥५॥ शुक नासा पट नर ता नाहीं ॥ वि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

डुमअधराविंबफलचांही ॥ ६ ॥ देखतरीफिरहीब्रजनारी । देह
गेहकीसुरतिबिसारी ॥ ७ ॥ यहमनमेंअनुमानकियोंतब । जपत
पसंजमनेमकरेंअब ॥ ८ ॥ बारंबारसबतिनहिमनावति । नंदनं
दनपतिदेहुसुनावति ॥ ९ ॥ नेमधर्मतपसाधनकीजें । सिवसों
मांगिकृस्नपतिलीजें ॥ १० ॥ बरषदिवसकोंनेमलियोंसब । रू
द्रहिसेवहुमनबचक्रमअब ॥ ११ ॥ रुद्रविस्वासबरुनकोंकी
नों । गौरीपतिपूजामनदीनों ॥ १२ ॥ षटदससहसजुरीसुकु
मारी । ब्रतसाधतिनीकेंतनगारी ॥ १३ ॥ प्रातउठेंजमुनाजल
घोरें । सीतउष्नकहूंअंगनमोरें ॥ १४ ॥ पतिकेहेतनेमतियसा
धें । शांकरसोंकात्यायिनआराधें ॥ १५ ॥ कमलपत्रमालारचढा
वें । नेंनमूंदियहध्यानलगावें ॥ १६ ॥ हमकोंपतिदीजेंगिर
धारी । बडेदेवतुमहेंत्रिपुरारी ॥ १७ ॥ औरकछूनहितुमसों
मांगें । कृस्नहेतयहकहिपालागें ॥ १८ ॥ ऐसेकरतबहुत
दिनबीते । प्रभुअंतरजामीमनचीते ॥ १९ ॥ इकदिनआपुन
आएतहां । न्हवनतरुनीस्नानकरेंजहां ॥ २० ॥ बसनधरेंजल
तीरउतारी । आपुनजलपेंठीसुकुमारी ॥ २१ ॥ कृस्नहेतस्नान
करेंजहां । आपगयेसबकेपाछेंतहां ॥ २२ ॥ मंजनपीठिप्रीति
प्रतिवाटी । चढ्हनभईगुषतीसबठाटी ॥ २३ ॥ देखेंनंदनंद
नगिरधारी । ब्रतफलप्रगटभएबनवारी ॥ २४ ॥ सकुचीअं
गजलपीछलुकावें । बारबारहरिअंगमिलावें ॥ २५ ॥ लाज
नहिआवतिहेतुमकों । देखतबिनाबसनसबहमकों ॥ २६
हसतचलेतबनंदकुमारा । लोगनसुनतसुकरतपुकारा ।
२७ ॥ हीरचीरलेंचलेपराई । हांकदईकहिनंददुहाई ॥ २८ ॥ उरि
बसनभूषनसबभागे । सांमकान्हद्रौंह्रींआवलागे ॥ २९
भागेंकहांबचोगेमोहन । पाछेंआयगईतुवगोहन ॥ ३० ॥ त
नकीसुधिसंभारकछुनांही । बसनअभूषनपहरतजाही ।
३१ ॥ चीरफटेंकंचुकीबंधछूटे । लेतनबनेंहारलरटूटे ॥ ३२ ॥ प्रेम
माहितमुखरीजानिनांही । फूलेंहीबारबारपछितांही ॥ ३३ ॥ ग
ईसबैतियनंदमहरिघर । जसुमतिपासगईअपडरडर ॥ ३४ ॥
देखेमहरिस्यामकेयेगुन । ऐसेहालकरेसबकेउन ॥ ३५ ॥ बो
लीसकलहीरीदिषराये । आपुनभागिइतहिकोंआए ॥ ३६ ॥ ज
मुनातटकोऊजाननपावें । संगसखालीयेपाछेंधावें ॥ ३७

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा
२९

सुतकोंवरजोंहोनंदरांनी ॥ गिरधरकारतनहींभलीवांनी ३८
लाजलगतिइकवातसुनावत ॥ अंबरछोरिहियेंदिखरावत
३९ ॥ यहदेखतहसिउठीजसोदा ॥ कछुरिसकछुमनमेंकरिमो
दा ॥ ४० ॥ आयगयेतिहिसमेंकन्हाई ॥ वांहगहीलेंतुरतदिखाई
४१ ॥ तनककतनककरतनकअंगुरियां ॥ तुमजोवनभरिनवल
वहुरियां ॥ ४२ ॥ जाहुगेहहमतुमकोंचीनी ॥ तुमरीजांतिजांनि
हमलीनी ॥ ४३ ॥ तुमचाहतइहसोनहींपेंहों ॥ औरवहुतहम
भीतरलैंहों ॥ ४४ ॥ वारवारकहिकहासुनावत ॥ इनवातन
कछुलाजनआवति ॥ ४५ ॥ रेवोरीयहभावकन्हाई ॥ कहीं
गईतवकीतरुनाई ॥ ४६ ॥ महरिकछुतुमेंदूषननाहीं ॥ हमकों
देखिदेखिमुसिकाहीं ॥ ४७ ॥ इहिकोमिसकोऊकेसंजांनें ॥ और
करतऔरधारिठांनें ॥ ४८ ॥ नीकीपहराबनिहमआई ॥ देनउ
राहनोंतुमकोंआई ॥ ४९ ॥ चलीजुवतीसवेंघरघरकों ॥ मनमें
ध्यानकरतहेंहरिकों ॥ ५० ॥ वर्षदिवससवपूरनकीनो ॥ नंद
सुवनकोंतनमनदीनो ॥ ५१ ॥ प्रातहोतजमुनाफिरिआई ॥ प
घभरहेचाटिकरसमकन्हाई ॥ ५२ ॥ तीरआयजुवतीसवठाढी
गुरुअंतरहरिसोंरतिवाढी ॥ ५३ ॥ कहीचलीजमुनाजलधारें
अंगअंगआभूषनधारें ॥ ५४ ॥ चोलीछोरेंहारउतारें ॥ करसों
सिषलकेसनिवारें ॥ ५५ ॥ इतउनाचितवनलोकनिहारें ॥ क
होंसवनिपवीरउतारें ॥ ५६ ॥ वसनआभूषणधरेउतारि ॥ ज
लभीतरसवगईकुमारि ॥ ५७ ॥ माघसीतकोंभीतनमांनें ॥ षट
ऋतुकेगुनसमकरिजांनें ॥ ५८ ॥ वारवारवूडेंजलमांहीं ॥ नेंक
हुजलसोंडरपतिनाहीं ॥ ५९ ॥ प्रातन्हानहीमेंदिनजाहि ॥ ध्यां
नप्रानपतिहीकेमांहि ॥ ६० ॥ इतनोंकष्टकरेंसकुमारी ॥ पतिके
हेतगोवर्द्धनधारी ॥ ६१ ॥ नितनतपकरतिदेखिगोपाला ॥ मन
मेंकहौधन्यव्रजवाला ॥ ६२ ॥ हरिअंतरजामीसवजांनें ॥ छि
नछिनकीवहुसेवामांनें ॥ ६३ ॥ हितफलइनेंप्रगटदिखराऊं ॥
वसनहरोंलेंकदमचढाऊं ॥ ६४ ॥ तनसाधनतपकियोंकुमारी
सवकेवसनहरेवनवारी ॥ ६५ ॥ भजीमोहिकामातुरनारी ॥ सो
रहसहसगोपकुमारी ॥ ६६ ॥ हरतवसनकछुवारनलागी ॥ ज
लभीतरजुवतीसवनागी ॥ ६७ ॥ भूषनवसनसवेंहरिल्याए ॥
कदमडारजहांतहांलटकाए ॥ ६८ ॥ ऐसेंनीपव्रक्षविस्तारा

चीरहरधोंकहांकितडारा ॥ ६९ ॥ सवेंसमानेतरववडारा ॥ यह
लीलारचिनंदकुमारा ॥ ७० ॥ हमचीरमानोंतरुफूल्यों ॥ निरषिन
स्यामग्रापुनअनुकूल्यो ॥ ७१ ॥ नेमसहितजुवतीसवन्हाई ॥ मन
मनशिवपेंविनयसुनाई ॥ ७२ ॥ पूरेंनेंनध्यानउरधारें ॥ नंदनंदन
पतिहोइहमारें ॥ ७३ ॥ रविकिरननिसवहुनिमनदीनों ॥ हदेमां
रूपग्रवलोकनकीनों ॥ ७४ ॥ त्रिपुरधनपत्रिपुरारित्रिलोचन ॥ गो
रीपतिविस्वपतिअघमोचन ॥ ७५ ॥ गरलअसनअहिभूखन
धारी ॥ जटाधरनगंगासिरधारी ॥ ७६ ॥ करजविनयपहमांग
तनुमसों ॥ करहुकृपाहमसिवेंग्रपुनसों ॥ ७७ ॥ हमपावेंपतिजसु
मतिकोंसुत ॥ यहेंदेहुकपिकृपारेवरति ॥ ७८ ॥ नित्यनेमकरिव
लीकुमारी ॥ एकजामतनकोंहिमगारी ॥ ७९ ॥ ब्रजललनावडी
नीरजुडाई ॥ ग्रतिग्रातुरकेंनटकोंग्राई ॥ ८० ॥ जलतेनिकसितुरत
सवग्राई ॥ चीरग्राभूसणनहींनपाई ॥ ८१ ॥ सकुचिरहीजलभी
तरधाई ॥ देखिहसततरुचढेकन्हाई ॥ ८२ ॥ सखाजुवतीपाछि
ताहीं ॥ सवकेवसनग्राभूषननाहीं ॥ ८३ ॥ ग्रेसोंकोनसवेंलेभा
ग्यो ॥ लेनहुमेंविलंवनहिलाग्यो ॥ ८४ ॥ माघतुसारजुवतीग्र
कुलाई ॥ इहांकहूंनंदसुवनजुमाहीं ॥ ८५ ॥ हमजानीयहवातनव
नाई ॥ ग्रंवरहहीलेंगयेहुराई ॥ ८६ ॥ कहेंहमस्यामविनयसुनि
लीजें ॥ ग्रंवरदेहुकृपाकिजीजें ॥ ८७ ॥ परस्परग्रंगकंपतिस
कुमारी ॥ देखिसकेनहिसकेंसमारी ॥ ८८ ॥ ग्रहिग्रंतरप्रभुवच
नसुनायों ॥ हमकोफलदरसनसवपायों ॥ ८९ ॥ कहाकहति
मोसोंव्रजवाला ॥ माघसीतकिनिहोजवेहाला ॥ ९० ॥ ग्रंवरज
हांवतार्उंतुमकों ॥ तोंतुमकहांदेहुगीहमकों ॥ ९१ ॥ तनमनग्र
र्पनतुमकोंकीनों ॥ जोंकछुहुतोंसोतुमकोंदीनों ॥ ९२ ॥ ग्रेसोएक
हांलेंहोंजूहमसों ॥ हममांगतिहेंग्रंवरतुमसों ॥ ९३ ॥ यहसुनिह
सेदयालमुरारी ॥ मेरोंकहोंकरोंसुकुमारी ॥ ९४ ॥ जलतेंनिक
सिसवेंतरग्रावहु ॥ तवहीभलेंग्रंवरतुमपावहु ॥ ९५ ॥ भुजा
पसारिदीनंदेंभाखों ॥ देउकरजोरिजोरितुमराखों ॥ ९६ ॥ सुनों
स्यामइकवातहमारी ॥ नगानकहूंदेखियेंनरनारी ॥ ९७ ॥ यह
मतिग्रापुकहांधोंपाई ॥ ग्राजुसुनीयहवातनवाई ॥ ९८ ॥ ग्रे
सीसाधमनहिमनराखों ॥ यहवांनीमुखतेजिनिभाखों ॥ ९९ ॥
हमतरुनीतुमतरुनकन्हाई ॥ विनावसनकोंरेहिरिखाई १००

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा.
८०

पुरुषजांनि तुमयहकहूंजांनों ॥ हाहा खायमुखमेंजिनिश्रानों
४ ॥ सोतुमवेंठिरहो जलमेंसब ॥ वसनश्राभूषननफिचाहतश्र
ब ॥ ३ ॥ तवहिदेहुजबबाहिरश्रावहु ॥ बांहउठाइश्रंगरिषावहु
३ ॥ कंपतिसीतभीतसकुमारी ॥ सकुचदेहुजलहीमेंडारी ॥ ४ ॥ प
हौंकरमतरुफरनितुसारी ॥ श्रवकिंनलजात्तकरतहमारी ॥ ५
लेहुनश्रांनिश्रापनेवृजनकों ॥ मेंजानतयाव्रजवीगनिकों ॥ ६
नीकेंवृतकीनोंतनगारी ॥ व्रतलायोंधरिमेंगिरधारी ॥ ७ ॥ तु
ममनकामनापूरनकरिहों ॥ रासरंगरचि रतिसुखभरिहों ॥
८ ॥ यहसुनिकेंमनहरखवढायों ॥ व्रतकोपूरणफलहमपा
यों ॥ ९ ॥ छांडोतुमयहटेवकनूरई ॥ नीरमांझरहमगईजुडई ॥ १०
श्राभूषनश्रपुनहीलेहों ॥ चीरकृपाकरिहमकोंदेहो ॥ ११
हाहालगोपाइतुम्हारे ॥ पापहोतहेंजाडनमारे ॥ १२ ॥ श्राजुहि
तेंहमदासीतुम्हारी ॥ केसेंश्रंगरिखावेंनारी ॥ १३ ॥ श्रंगरिखाये
श्रंवरपेंहो ॥ नातरऐसेंदिवसगवेंहो ॥ १४ ॥ मोरेकहेनिकसि
सवश्रावहु ॥ प्यारेहीमेंभलोमनावहु ॥ १५ ॥ मुहाचुहीतरुनीसु
सिकानी ॥ यहश्रापुनप्यारीकलिजानी ॥ १६ ॥ जोजोकहेंसुतुम
कोंसोहैं ॥ श्रापतुमारीपटतुमकोहें ॥ १७ ॥ हमरीपतिसवतुम्हारे
हाथा ॥ तुमहीऐसेंहोव्रजनाथा ॥ १८ ॥ तपतनगारीकियोजि
हिकारण ॥ सोफललेयोंकरमकीडारन ॥ १९ ॥ श्रावहुनिकसि
लेहुपटश्रभरन ॥ यहलागेहमकोंसवदूखण ॥ २० ॥ श्रवश्रंतर
कितराखतिहमसों ॥ वारंवारकहतहेंतुमसों ॥ २१ ॥ गोपीन
मिलियहवातविचारी ॥ श्रवतोटेकपरीवनवारी ॥ २२ ॥ चलों
नजायचीरश्रवलीजें ॥ लाजछांडिउनकोंसुखदीजें ॥ २३ ॥ ज
लतेंनिकसिनारिसवश्राई ॥ वारवारहरिनिरखिवुलाई ॥ २४
वेंठिगईतरुनीसकुचानी ॥ देहुस्यांमहमश्रतिहिलजानी ॥
२५ ॥ छांडिदेहुयहवातसयांनी ॥ वैसेंकरोंकहीजोवांनी ॥ २६
करकुचश्रंगदाविभईठाढी ॥ वदननवाइलाजश्रतिवाढी
२७ ॥ देहुस्यांमश्रंवरश्रवडारी ॥ हाहादासीसवेंतुमारी ॥ २८
ऐसेंवसननहींतुमपांवहु ॥ बांहउठाइश्रंगरिषावहु २९
कहेंसोमानिजुवतिनकरजोरें ॥ पुनिपुनिजुवतीकरतनिहो
रें ॥ ३० ॥ धन्यधन्यकहोंश्रीगोपाल ॥ निहचेंव्रतकीनोंव्रजवा
ल ॥ ३१ ॥ श्रावहुनिकटलेहुसवश्रंवर ॥ चोलीहारसुरंगपाटंवर

Shrimad Gokulnathji Maharaj

वर ॥ ३४ ॥ निकर गाई सुनिकें यह बांनी ॥ तरुनी नगन अंग अकुलां
नी ॥ ३५ ॥ भूषन वसन तुनहि सबे दीनों ॥ तरुनी हेत कृपा हरि की
नों ॥ ३६ ॥ चीर आभूषन पहरें नारी ॥ कहौं न वहि ऐसें गिरधारी
३७ ॥ तब हरि बोले कृष्ण मुरारी ॥ मैं पति तुम सब मेरी नारी ॥ ३८
तुमें हेत यह वपु ब्रज धार्यौ ॥ तुम कारन बैकुंठ बिसार्यौ ॥ ३९
अब वज्ञ न करि तुम तन नहि नगारों ॥ मैं तुम तें नहि हों हूं न्यारों
४० ॥ मो कारण तुम अति तप साध्यों ॥ तन मन करि मो कों आ
राध्यों ॥ ४१ ॥ जाहु सदन अब सब ब्रजबाला ॥ अंग परसि मैं टे
जंजाला ॥ ४२ ॥ जुवतिन विदा दई गिरधारी ॥ गई घरन सब घो
षकुमारी ॥ ४३ ॥ वस्त्रहरन लीला प्रभु कीनों ॥ ब्रज तरुनी सुव्र
तकों फल दीनों ॥ ४४ ॥ यह लीला श्रवणनि सुनि भावें ॥ औरें
काना सबें आपु न गावें ॥ ४५ ॥ सूरस्यांम जिन के सुखदाई ॥ दू
ष्नाई में प्रगट कन्हाई ॥ ४६ ॥ राग रामकली ॥ हरि वसि कीनी
घोषकुमारी ॥ विवस भई तन की सुधि बिसरी ॥ मन हरि लियो
मुरारी ॥ १ ॥ गए स्यांम ब्रज धांम आपने ॥ जुवती मदन सर मारि
लहहि जुनारि राधिका सिरनें गई सुपति पर डारि ॥ २ ॥ करत वि
चार सुंदरी सब मिलि अब सेवहु त्रिपुरारि ॥ मांगों यह देहु प
ति हम कों सूर सरन अनुसारि ॥ ३ ॥ राग जेतश्री ॥ मदन रवन स
वही बिसराई ॥ नंदनंदन जब ते मन हरि लियो कहति तिया यह
जनम गवाई ॥ जप तप व्रत संजम साधन करि प्रगट होत पावें
न जैसें मिलें स्याम सुंदर बर सोइ न की जें आनि ॥ २ ॥ यह मंत्र दृ
ढ कियो सब मिलि या तें होइ सु होइ ॥ वृथा जन्म जग में जिनि खो
वहु यह अपनों नहि कोइ ॥ ३ ॥ तब प्रतीति सब हुनि कों आई की
नों दृढ विस्वास ॥ सूरस्यांम सुंदर पति पावें यहै हमारी आस ॥ ४ ॥
राग आसावरी ॥ गौरी पति पूजति ब्रजनारि ॥ नेंम धर्म सूं क्रिया
वहु तजुत वहुत करत मनुहारि ॥ यह कहत पति देहु उमा
पति गिरधर नंदकुमार ॥ सरन राखि लेहु शिव संकर तन
हि न सावत मार ॥ २ ॥ कमल पत्र माला फर पत्र फल नाना सुम
न सुवास ॥ महादेव पूजत मन वच क्रम सूरस्यांम की आ
स ॥ ३ ॥ ५०० ॥ राग रामकली ॥ प्रीव सों विनय करति सकुमारी ॥
जोरि कर मुख करति अस्तुति बडे प्रभू त्रिपुरारि ॥ १ ॥ सीत भी
तन करति सुंदरि क्रस भई सकुमारि ॥ छहूं रितु तप करति नी

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ सू.सा केंगहर्नेहृदैविसारि ॥२॥ ध्यांनधरिकरजोरिलोचनमूंदिरएवेंजो
॥ २९ म ॥ विनयअंजुलिछोरिरविसोंकरतहैं सबवांम ॥३॥ हमेंदेउ
दयालदिनमणितुमबरनंदसंसार ॥ कांमतनअतिदहतरीझें
सूरहरिभरतार ॥४॥ रा० गनट ॥ रविसोंविनयकरतिकरजोरि
प्रभुअंतरजांमीयहजांनीमोकारनजलघोरि ॥१॥ प्रगटभ
एप्रभुजलहीभीतरदेखिसबनकोप्रेम ॥ मीजतियौठसब
नकेपाछेंपूरनकीनोंनेम ॥२॥ फिरिदेखैंतोंकुंवरकन्हाईमी
जतरुचिसोंपीठि ॥ सूरस्यामसकुचीब्रजजुवतीपरीस्यांमतन
दीठि ॥३॥ रा० देवगंधार ॥ अतितनपरेखिकृपाकरिकीनों ॥ तन
कीजरनिदूरिभईसबकीमिलितरुनिनिसुखदीनों ॥१॥ न
वलकिसोरध्यांनजुवतिनिमनवहैंप्रगटदरसायों ॥ सकु
चिगईअंगवसनसभारतिभयोंसबनिमनभायों ॥२॥ मन
मनकहतिभयोंतपपूरनआनंदउरनसमाइ ॥ सूरदास
प्रभुलाजनिआवतिजुवतिनमांझकन्हाई ॥३॥ रा० सारंग ॥
हसतस्यांमब्रजकोंभागे ॥ लोगनिजोंयहकहतिसुनाव
तिमोंहनकरनअचगरीलागे ॥ हमअस्नानकरतिजल
भीतरआपुनसीरतिर्पोछैकन्हाई ॥ कहाभयोंजोनंदमहरि
सुतहमआपनवकहाई ॥ लरिकाईतवहीलोंनीकीचारि
वरषकेंपांच ॥ सूरस्यामकहिहौंजसुमतिसोंस्यांमकरतएनां
च ॥३॥ रा० सा० ॥ प्रेमविवससबग्वालभईं ॥ आहनेदैनचा
लोंजसुमतिकोंमनमोंहनकेरूपरई ॥१॥ पुलकिअंगअंगिया
उरदरकीहारतोरिकरिआपुलई ॥ अंचलचीरघातउरना
खकरियहमिसकरिनंदसदनगई ॥२॥ जसुमतिमाईकहां
सुतसिखयोंहमकोंजैसेंहासकीये ॥ चोलीफारीहारगहिलो
न्यौंदेख्योउरनखघातहियें ॥३॥ अंचरचीरआभूषनतोरेघ
रिधरतउठिभागिगये ॥ सूरमहरिमनकहतिस्यांमधोंऐसे
लायककवहिभये ॥४॥ रा० गोरी ॥ महरिस्यांमकोंवरजतिकाहे
न ॥ ऐसेंहालकियेहरिहमसोंभईकहुंजगआहिन ॥१॥ ओर
बातएकसुनोंस्यांमकीअतिहिभएहैंढीठ ॥ वसनविनाअ
स्नानकरतिहमआपुनमीड्रतिपीठ ॥२॥ आपुकहतिमेरोंसु
तबारोंहियोंउघारिदिखाऊं ॥ सुनतनहिंलाजकहतनहिंआवें
तुमकोंकहांलजाऊं ॥३॥ यहवांनीजुवतिनमुखसुनिकेंह

Shrimad Gokulnathji Maharaj

षिबोलीनंदरांनी॥सूरस्यांमनुमलायकनाहीं वचनतुम्हारी॥
जांनी॥४॥१॥गौरी॥बातकहैं सुलहैं दूरी॥विनाभीतितुमचि
त्रलिखतहौं सोकैसेंहूं पावैंरी॥१॥वेरीगईछिनारी अवभयौ
जान्यौंजांनतुम्हारौ॥औरगोपसुततिनेंनदेष्यौंसूरस्यांमदै
वारौ॥२॥रागगौरी॥इहिअंतरहरिआयगये॥मोरमुकटपीतां
बरकाछें अतिकोंमलतनअंगभये॥१॥जननीबुलायबांह
गहिलीनौंदेखौरीमहरी॥इनहीकौंअपराधलगावति
कहांफिरतिइतरातीं॥२॥सुनिहैंलोगमहरअवहूंकरौंतुमें
कहूंकीलाज॥सूरस्यांममेरौमांषनभोगीतुमआवतिवेका
ज॥३॥रागदेवगंधार॥अवहरिदेखेनवलकिसोर॥घरआवतहीत
नकभयेहैं ऐसेतनकेचोर॥१॥कछुदिनकरिदधिचोरीअ
वचोरतमनमोर॥विवसभईतनसुधिनसभारतिकहूंतवा
तभयेभोर॥२॥यहवानीकहिनवहिलजानेसकुचभईजियमें
र॥सूरस्यामकूंनिरखिचलीघरआनंदलोचनलोर॥३॥रा
गनट॥व्रजघरगईगोपकुमारि॥नैंकहूंमननलागतकां
मधांमविसारि॥१॥मातपितकोडरनमानतसुनतनाहिन
गारि॥हरषकरतिविषछानितहींजननीजांनतवारि॥२॥प्रात
हीउठिचलीसवमिलिजमुनातटसकुमारि॥सूरप्रभुवनतरे
हिविहनकौंनहीपरतसभारि॥३॥रागनट॥वनतननहीजमुनाकौं
अैवौ॥सुंदरस्यांमघाटपरठाढेकहौंकौनविधिजैवौ॥१॥कैसे
वसनउतारिधरीहमकैसेंजलहिसमेवौ॥नंदनंदनहमकौं
देखेंगेकैसेंकरिजुअनैंहैवौ॥२॥चोलीचीरहारलैंभाजतसोकै
सेंकरिपैवौ॥अंकमभरिभरिलेतसूरप्रभुकालिनइहपफ्रे
वौं॥३॥रागरामकली॥कैसेंवनेंजमुनास्नांन॥नेरहकौसुननीप
वेंत्रौवडेचतुरसुजांन॥१॥हारतोरैंचीरफारेनेंनचलैंसुराई
कालिधौंवेकांनमेरीपीठिमांनेप्राइ॥२॥कहतिजुवतीवा
तसवसुनिथकितभईव्रजनारि॥सूरप्रभुकौध्यांनधरि
मनलेहिंवांहूपसारि॥३॥रागगूजरी॥प्रातितपकरतिघोषकु
मारि॥कृष्णपातिहमतुरतपावैंकामआतुरनारि॥१॥नेंनमू
दीदरसकारनश्रवनसरविचारि॥भुजाजोरतिअंगभरिहू
रिध्यांनतुरअकवारि॥२॥मासषीषमडरतनाहिनकरततनप
तनगारि॥सूरप्रभुसर्वज्ञस्वामीदेखिरीझीनारि॥३॥रा॥धना

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू॰सा॰ श्री॥ब्रजबनितारविकोंकरजोरें॥सीतभीतनहिंकरतिछहूंरि
॥ ८२ तुत्रिविधिकालजमुनाजलखोरें॥२॥गौरीपतिपूजतितपसा
धतिकरतरहतनितनेंम॥मौंनरहतनिसिजामिचतुर्दसज्ज
सुमनिसुतकेप्रेम॥२॥हमकोंदेहुकृस्नपतिईस्वरऔरनहीम
नऋांन॥मनसावाचाकर्मेंहमारेसूरस्यांमकोंध्यांन॥३॥रा
गबिलावल॥बसनहरेसबकरमचढाइ॥सोरहसहसगोपकें
न्यानिकेअंगभूषनसहितचुराइ॥१॥अतिविस्तारनीपतरुता
मेंलेंलेंजहांतहांलटकाए॥मनिआभरनडारडारनुप्रति॥
दृष्टिछबमनअटकाए॥२॥नीलांबरपाटंबरसारीसेतपीत
चूनरिअरुनाई॥सूरस्यांमजुवतिनव्रतकोंफलपूरनकरम
डारपरलाई॥४॥राग कल्यांन॥नीकेंतपकीयोंतनगारि॥आप
देखतकदमचढेकेमांनिलियोंमुरारि॥२॥बसनहरेंतनेंम
संजमश्रमकियोंकेकाज॥कैसेंतुमहिंमनावौंकोउमोहिविर
दकीलाज॥२॥तरुनव्रतयहकियोंपूरनसीततपजनगारि॥
कांमआतुरभजीमोकोंनवतरुनिब्रजनारि॥३॥कृपानाथक
पालभएतबजांनिजनकीपीर॥सूरप्रभुअनुमांनकीनोंहि
हेंहुनकेचीर॥४॥राग गौरी॥जमुनातटदेखेंनंदनंदन॥मोरमु
कटमकराकृतकुंडलपीतबसनतनचंदन॥१॥लोचनतृप
तभएदरसनमेंउरकीतपनिबुझानी॥प्रेममगनतबभईसुंद
रीअरुगदगदमुखबांनी॥२॥कमलनेंनतटपरहेंठाढेंसकुचति
पैंठतनारि॥सूरदासप्रभुअंतरजामीव्रतपूरनपगधारि॥३॥
राग सूहो॥आपकदमचढिदेखतस्यांम॥बसनआभूषनसब
हरिलीनेबिनाबसनजलभीतरवांम॥१॥मूंदतिनेंनध्यांनध
रिहरिकोंअंतरजांमीलीनोंजांनि॥बारबाररसिवितासोंमांग
तहमपावेंपतिसुंदरकांन्ह॥२॥जलतेंनिकसिआयतटदेखौं
भूषनचीरतहांकछुनांहि॥इततउतहेरिचकृतभईसुंदरीस
कुचिगईफिरिजलहीमांहि॥३॥नाभिप्रजंतनीरमेंठाढीथर
थरअंगकंपतिसुकुमारि॥कोलेंगयोंबसनआभूषनसूर
स्यांमउरप्रीतिविचारि॥४॥राग गौरी॥आवहुनिकसिघोष
कुमारि॥करदमपरतेंदरसदीनोंगिरधरनबनवारि॥१॥नेंन
भरिव्रतफलनिरखोंफल्योंहेंनहरडारि॥व्रततुमारोंभयोंपू
रनकह्योंनंदकुमारि॥२॥सलिलतेंसबनिकसिआवहुआपा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सहित तनु सारि ॥ देत हों किनि लेहु मो सों चीर चोली हार ॥ ३ ॥ हा
य जोरि बिनय करो मोहि कह्यो बरंबार ॥ सूर प्रभु के आय आ
गें करों सब सिंगार ॥ ४ ॥ राग बिलावल ॥ लाज ओट यह दूरि क
रो ॥ जोई मैं कहों करो तुम सोई सकुच बापुरी कहा करो ॥ १ ॥ न
लतें आय तीर कर जोरो मैं देखों तुम बिनय करो ॥ पूरन ब्रत
अब भयो तुम्हारो गुरजन संका दूरि करो ॥ २ ॥ अब अंतर मो
सों जिनि राखौ बारबार हठ ब्रथा करो ॥ सूर स्याम कहि चीर
देत हों आगें आइ सिंगार करो ॥ ३ ॥ राग सूहो ॥ जलतें निकसि
तीर सब आवहु जैसें सबिता सों कर जोरे तैसें ई जोरि दिखा
वहु ॥ १ ॥ नव वाला हम तरुन कान्ह तुम कैसें अंग दिखावें ॥
जल ही ते सब बाहु टेकि कें देखो स्याम रिझावें ॥ २ ॥ ऐसें नहि
रीझों मैं तुम कों तट ह्वै बांह उठावहु ॥ सूरदास प्रभु मांखन ता
श्री मुख बसन हार तब पावहु ॥ ३ ॥ राग नट ॥ बालन तुम ऐसें
लाड लडाए ॥ लैकर चीर कदम पर बैठे कितें ऐसें ढंग लाए ॥
१ ॥ हाहा करति कंचुकी मांगति बसन देहु मनभाए ॥ की
नी प्रगट प्रीति मिलिवे को सब बत सर मग गाए ॥ २ ॥ दूरि अ
हासी सुनों सखी री कान्ह जानिन कै आए ॥ सूरदास प्रभु को
मिलिवो कैसें रहत दुराए ॥ ३ ॥ राग आसावरी ॥ हाहा करति
घोष कुमारी ॥ सीतें तन कंपत थर थर बसन देहु मुरारी ॥
१ ॥ मन ही मन अभिभयो बहु सुख देखि कें गिरधारी ॥ पुरकी
नारि नगन देखत कहत दूषन भारी ॥ २ ॥ नैंक तुमैं न छोह आ
वत गये हैं मसब मारि ॥ सूर प्रभु अति ही निठुर भये नंदसु
त बनचारि ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ हमारे अंबर देहु मुरारी ॥ लै सब
चीर कदम पर बैठे हम जलमांहि उघारी ॥ १ ॥ तट पर बिना ब
सन कैसे आवें लाज लगति है भारी ॥ चोली हार तुमें सब दी
ने चीर देहु इक डारी ॥ २ ॥ तुम यह बात कही कैसें भाषत बाह
र आवहु नारी ॥ सूर स्याम कछु छोह करो अब सीत गयो तन
मारी ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ वारि निज अपनो चीर लें ॥ जलतें निक
सि निहारि निकट है मम आयुस पहलें सीस लें ॥ १ ॥ काहे सी
त सहति हो सुंदरि हो तन की सुन लज ही रहो ॥ मेरे कहें आं
नि पहरों पर अपने अपने अंग आवहु ॥ २ ॥ हौं अंतरजामी सब
जानत कहा दुरावति लाज करें करिहों पूरन काम कृपाक

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू.सा रिसरदसमेंरसरासकरें॥३॥संततसूरसुभावहमारेकहांउ
॥८३ रपतिहेंकामभे॥कैसीयभांतिभजेंकोऊमोकोंतैसेंहीसंसा
रजे॥४॥राग जैतश्री॥तरुनीनिकसिनिकसितनआईं॥पुनि
पुनिकहतिलेहुपटभूषनजुवतीस्यांमबुलाई॥१॥जलतेंनि
कसिभईसबठाढी करअंगरूपरदीने॥बसनदेहुआभूष
नराखोंहाहापुनिपुनिकीने॥२॥ऐसेंकहांवतिहोंमोहिबा
हउठायनिहारो॥करसोंकहांअंगउरमूंदोमेरेकहेंउघारो
॥३॥सूरस्यांमहमसोईसोईकरिहेंजोईजोईतुमसबकहि
हो॥लेंहोंदाउस्यांमकहूंतुमसोंबहुरिकहांतुमजेंहों॥४॥
राग नट॥सोरहसहससगोपकुमारि॥देखिसबकोंस्यांमरीझि
रही भुजापसारि॥१॥बोलिलीनीकदमकेतरइहांआवहु
नारि प्रगटभयेतहांसबनकोंकामदेहनिवारि॥२॥बस
नभूषनसबनपहरेहर्षभईसकुमार॥हृदयभुजभ
लेहसबऐसेबनवारि॥३॥राग मल्हार॥तपपूरनकियोनं
दकुमार॥जुवतिनकेमेंटेजंजाल॥१॥जपतपकरितनअब
जिनिगारो॥तुमघरनीमेंकंतविहारो॥२॥अंतरसोचदूरिक
रिडारो॥मेरोंकह्योसत्यउरधारो॥३॥सरदरास तुमआसपुरा
ऊं॥अंकमभरिसबकुंउराऊं॥४॥यहसुनिसबमिलिहरख
बढायो॥मनमनकह्योकृष्णपतिपायो॥५॥नाहुसबैघरखे
सकुमारी॥सारदरासरहोंसुखभारी॥६॥सूरस्यांमप्रगटेगिर
धारी॥आनंदसहितगईघरनारी॥७॥राग नट॥ इष्टव्रतकी
योंमेरेहेत॥धन्यधन्यकहीनंदनंदनजाहुसबैनिकेत॥१॥क
रोंतुमरोंकामपूरनसरदरासरमाइ॥हरखपायोसुनततगो
पिनरहीसीमनवाइ॥२॥सबनकोंअंगपरसकीनोंसुफल
व्रतज्योंहार॥सूरप्रभुसुखदियोमिलिकेंव्रजचलींसकुमा
रि॥३॥राग आसावरी॥शिवसंकरहमकोंवरदीनों॥मुहपपांन
नानाफलमेवाषटरसअर्पनलेलेंकीनों॥१॥पाइपरीजुव
तीसबयहकहिधन्यधन्यात्रिपुरारि॥तुरतहीफलपूरण
हमपायोंनंदसुवनगिरधारि॥२॥विनयकरतिसबतुम
तेंपायोयहबरहिघरहिबहोरि॥सूरस्यांममनहरतसबन
केलोचनषरीठगोरि॥३॥राग रामकली॥व्रजकुमारिकाव्र
तयहकीनों॥धनुर्मासउत्तमतेउत्तमव्रतकरिहरिमनदी

Shrimad Gokulnathji Maharaj

नों ॥ १ ॥ रेणु जमुनकी करि प्रतिमा तेहि देवी मनक्रम ल्याई ॥ हेम
हाभाग्य देहु वर हमकों सुंदर कुमार कन्हाई ॥ २ ॥ येहि विधि सौ
न कृष्ण निन नवला खिके हरि तरु रहे लुकाई ॥ नग्न न्हान लागी
सब नेहि हा हरि तब चीर चुराई ॥ ३ ॥ जलतें निकसि वसन नहि
पायो लाज सकुचि मन मांहीं ॥ धसी जाय जमुनामें नवहीं च
कृत हूरि सचाहीं ॥ ४ ॥ एकाएक प्रति देखत तनें नन मुसकाहीं
येउरानी ॥ तनु जमुनामें कनक कमल वहु भवरनें नसम श्री
नी ॥ ५ ॥ नवही कर्दम पर देखे हरिकों वाके दृगनि चलावें
एकठेढी भोंहैं करि बोली वसन देहु घर जावें ॥ ६ ॥ यह प्रनी
तिकेसें कें सहियें कहिहैं ब्रजपति आगें ॥ एक दीन ह्वे वच
न सुनायो सीत बहुत तन लागें ॥ ७ ॥ बिना मोलकी दासी तिह
री दीजें वसन हमारे ॥ एकन कह्यौ वह्ये सो देहें तहु मोलनके
भारे ॥ ८ ॥ वसन आभूसन चहियें जितनो तितो मनकों भायो
हन वसननमें लोभ करों जिनि बहुत सीत तन खायो ॥ ९ ॥
हरि मुसिकाय कह्यौ यह वांनी जलतें बाहिर आवो ॥ हमकों
नमस्कार करि सबही तब निज बसन नहि पावो ॥ १० ॥ सुनत व
चन सकल जतपर स्पर मुसक्यात बाहिर आई ॥ हरि सनमुख नि
रखें नेंननि सों पूजत विनय सुनाई ॥ ११ ॥ हरि प्रसन्न ह्वे कही बात
यह करजो रोस सिर नावो ॥ नग्न न्हाये यह नहि चहियें सो सब दोष
मिटावो ॥ १२ ॥ दोफ्फर जोरि हरिहि सिर नायों चीर लियें हरि आ
ए ॥ अपुने करतें सब पहराये विविधि भांव उपजाए ॥ १३ ॥ येहि वि
धि सुफल जनों रथ कीनों वर उत्तम यह दीनों ॥ सरद निसा तु
मकों रस देहें सूरसुनन सुख कीनों ॥ १४ ॥ इति श्री भागवते म
पुराणे दशमस्कंधे द्वाविंशतमोध्यायः ॥ २२ ॥ अथ जज्ञपत्नी भंग
भाव ॥ राग विलावल ॥ एकदिन हरि हलधर संग ग्वारनि गए
वन भीतर गोधन चारण ॥ १ ॥ सकल ग्वाल मिलि हरिपें आए
भूख लगी कहि वचन सुनाये ॥ २ ॥ हरि कह्यौ जज्ञ करत जहं ब्रा
सन ॥ जाहु निकट उहि भोजन मांगन ॥ ३ ॥ ग्वार तुरत उनके दि
ग आए ॥ हरि हलधर के वचन सुनाए ॥ ४ ॥ भोजन देहु भए वे
भूखे ॥ यह सुनि होइ गये वे रूखे ॥ ५ ॥ जज्ञ होत हम करें सोई
ग्वालन पहले देहि न सोई ॥ ६ ॥ ग्वाल सकल हरिपें चलि आए
हरिसूं तिनके वचन सुनाए ॥ ७ ॥ हरि हलधर सों हांसि करि वां

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू॰सा
५८५

नी॥ अविमतिकी गति उन नहिं जानी॥ ५ ॥ तब ग्वालन सौं कह्यौ
जनाई॥ तियन पास तुम मांगौ जाई॥ ६ ॥ उनके मन है भक्ति हमा
री॥ मांनि लेंहिंगी बात तुमारी॥ ७ ॥ ग्वाल बाल तरुनी पें आए
हाथ जोरिकें सीस नवाए॥ ८ ॥ हरि भोजन मांग्यो है तुमसों
आग्या रेहुकहें है सो उनसों ॥ ९ ॥ तिन धनि भाग आपनों जान्यों
जीवत जन्म सुफल करि मांन्यों॥ १० ॥ भोजन बहु प्रकार तिहि
दीनों॥ काहूं अपने सिर धरि लीनों॥ ११ ॥ ग्वारन संग तुरत चे
धाई॥ मन अपने में हरख बढाई॥ १२ ॥ काहूं पुरुष निवार्यौ
जाई॥ कहूं जाति हैं रात्रि अनुराई॥ १३ ॥ तियतौं कह्यो न कीनों
कांनी॥ तनतजि मिली विरह अंग ठांनी॥ १४ ॥ धन्य धन्य वह
परम सभागी॥ मिली जाय सबहुन तें आगी॥ १५ ॥ तबहू हरि
तिन सों कहि समुझाई॥ सुनौ तिया तुम कैसें आई॥ १६ ॥ नारी
पतिव्रत पालें जोई॥ चरिपदारथ पावें सोई॥ १७ ॥ तरुनी क
ह्यौ जगरूप सगाई॥ हम तो हें तुमरें सरनाई॥ १८ ॥ प्रभू कह्यौ
पतिव्रत करो सदाई॥ तुमकों यहै परम सुखदाई॥ १९ ॥ प्रभु आ
ग्या तें घरकों आई॥ पुरुष करीतिन की बडियाई॥ २० ॥ धनि
धनि तुम हरि दरसन पाए॥ हम पापी उनके मन बिसराए॥
२१ ॥ ब्रह्मादिक सो जनकहें जिनकों॥ साक्षात तुम देख्यौ तिनकों
२२ ॥ वे हैं सकल जगतके स्वामी॥ अरु सबहिन के अंतरजांमी
२३ ॥ अब हम चरनन सरण हैं आये॥ तब हरि उनके दोष छमा
ये॥ २४ ॥ ग्वालन मिलि हरि भोजन कीनों॥ भावति यन कों मन
हरि लीनों॥ २५ ॥ भक्तिभाव सों जो हरि ध्यावें॥ सो नरनारि अभ
यपद पावें॥ २६ ॥ यह लीला सुनि गावें जोई॥ हरि की भक्ति सह
ल हैं सोई॥ २७ ॥ राग विलावल॥ हरि देखन की साध भई॥ उडि
उडि फिरति संग नैंनन के फल फूटे ज्यों आक रुई॥ १ ॥ सुनत हि
उपजि परे अंकुर छ औरें प्रेम पुलक अम सखे हुई॥ जान्यों नहीं स
खी काहू तें वह मूरति मन माहि उई॥ २ ॥ अन देखे की विथा
विरहनी अति जुर जरति न जाति छई॥ सूकति सर धांनत्र
कुरज्यों बिनु वरषा बिन मोल लई॥ ३ ॥ राग सारंग॥ नांन देहु गो
पाल बुलाई॥ अवरी प्रीति प्रांन के लालच नाहीं परति दुराई
॥ १ ॥ राखो रोकि बांधि दृढ बंधन कैसें हूं करो त्रास॥ यह हठ अ
बके सें छूटेंगी जब लों है उर स्वास॥ २ ॥ सांच कहो मन कर मे

Shrimad Gokulnathji Maharaj

वचनकहिआपनेमनकीवात॥ ततनतजिजाएमिलोंगीह
रिसोंकितरोकतपतिजात॥३॥ ओसरगएवहुरिसूरजप्रभु
कह्योकीजेंगीरेह॥ विछुरनहूंसविरहकेसूलनफूटेसवेंस
नेह॥४॥ राग धनाश्री॥ देखनदेंपियमदनगुपालहि॥ हाहाहों
पियपायपरतिहोंजाइसुननदेवेनुरसालहि॥१॥ लकुटी
लीयेंकहांतनत्रासतपतिविनुयहविरहानिवेहालहि॥
प्रातिप्रातुसप्राफुलअधिकछविताहिकयुंडरहेंनमका
लहि॥२॥ मननतोंपहलेंरही उहांपोहोचोंप्रानतहांचलिहेंचित
चालहि॥ कहिधोंसूरस्वारथसुखअपनेरोकिकहांकाहें
खलखालहि॥३॥ नेहुसभारिरेहगेहकीकोपावेंइनतेंजंजा
लहि॥ सूरसकलसखियनतेंआगेंदेखिमूढमिलिहोंनंद
लालहि॥५॥ राग धनाश्री॥ जिनरोकेंपियजानदें॥ होंहरिविर
हजरीजीवतिहोंइतीवातमोहिरांनदें॥१॥ वेनुसुनोंदेखोंव
नविहारतिरहिसुखहदेंविसरांनदें॥ पाछेंजोभावेंसोलीजों
सांचकहतिहोंआंनदें॥२॥ जोकछुकहिदेकीयेंजावतिहोंसु
नोंकहांयहकानदें॥ मनवचकर्मरहोंअपनोंप्राणराखों
गीप्रांनदें॥३॥ राग धनाश्री॥ हरिदरसनकीसाधमरी॥ जोंनिन
दईस्यांमसुंदरपेंसुनिसारुनेपोहोचकरी॥१॥ कुलअभिमा
नहठकिहांराखीतेंकछुजियमेंओरधरी॥ जनपुरुषनजि
करतनजविधिविरहअवनेरीवातसरी॥२॥ कहालोंसमफा
ऊसूरजप्रभुमांतिमिलनकीअवधिटरी॥ लेंहुसभारिरेहअपि
यअपनीविनआंननियहसवेंपरी॥३॥ राग विलावल॥ हरिहि
मिलतकाहकोंघेरी॥ हरसदेखिआवतिजदुपतिकोंजानि
वेटहिहोतिहेंचेरी॥१॥ हाहाकंतकहतिपालागतिवारवार
विनतीकरोंटेरी॥ तिरछेभएकर्मपूरवकेप्रीतमभएपाउवी
वेरी॥२॥ पहलेंरहमासिसिरअपनेजाकोंकहतिकंततमे
री॥ सूरदाससोगईअगामनीसवसखियनसोंहरिमुखहे
री॥३॥ राग खटा॥ हमसवेंमंदभागभगवांननेविमुखभये
धन्यवेनारिगोविंदपूजें॥ सूरहरिनेंनहमसवेंउलूभएभांन
भगवांनआएनसूफें॥१॥ संगगोधनलगेकेलिरसरंगमगे
भोरकेनिकसेभूखेंईआए॥ देहुतुमभानकरजोरिग्वालनक
होंअहोभूदेवतुमपेंपठाए॥२॥ केवलकुरुणढरनभांतिभो

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू.सा. जनकारन अगम महूं निगम महिमा बतावें ॥ कहूं प्रभु की खनि हू
॥८५ मो रमन की मचनि देव की रचनि कछु कहि न जावें ॥३॥ सोकग्रा
चार गुरु कुल न सेवा कछु कुटिल करकसे करी बुद्धि हीनी ॥
देखहु रन त्रियन को भाग या जगत में सच्चिदानंद के रंग भीनी
॥४॥ त्रिया कौतुक रची मिली कछु न जानी परी कमनी नाह ज्यों
मन मिलावें ॥ शेष त्रिपुरादि ब्रह्मादि सनकादि मुनि चरण रेणु
सिर पर चढावें ॥५॥ नरपि नारायण अवतार जदुकुल विषें
सुन्यों भली भांति तऊ मन न आयो ॥ देखो वकौ देव की माया
प्रति मोहनी दई दृग धूरि हू म सब भुलायो ॥६॥ धृग जन्म नाम
कुल क्रिया स्वाहा हे सहित जोग प जग जज्ञ तप धृग ह मारो ॥ ता
न विज्ञान धन धर्म कछु कर्म नहिं ईस पर आरंभ सारो ॥७॥ सू
ठ संसार आकार जुग निर्मयो मगन ह्वा हू म सब भुलाए ॥ सू
र गिरधर हरि विमुख जग में बडो बुद्धि जो दीनता क हाए ॥
८॥ राग सारंग ॥ द्विज बोले अपनी हिरदै हरखाइ पूजा ए वन में हरि
प्रगटे सुने श्रवण जाने मन मांहि ॥ ॥ जातें मूढ भये कर्म हि कै
भि अभिमानी अघ खानि ॥ तऊ धन्य तिन्ह मया ते कहियत पत्नी भ
क्त महान ॥१॥ हरि के अंगीकार भये न तहीं बुद्धि उन मति न पाई ॥ प
हु विधि सकल शिखे अघ खल के तिय को कर तबडाई ॥३॥ हरि
देखन की आस बढी अति कंस डर हिं नाहिं आए ॥ सूरदास तिन
के सब जिय की आस सकल पुजाए ॥४॥ इति श्री भागवते महापु
राणे दशम स्कंधे य विंशाति मो ध्याय ॥२३॥ अथ गोवर्द्धन पूजा ॥ रा
ग बिलावल ॥ अपने अपने टोल कहत ब्रजवासियां भोग भु
गता लै चलौं दूरि के आसियां ॥ सरद करहू निस जानि दीपमा
लिका जु आई ॥ गोपन मन आनंद फिरत उनमद अधिकाई ॥
अंपन थापे दीजिये घर घर मंगलचार ॥ सात बरष को सांवरो
खेलत नंद दुवार ॥१॥ बैठे नंद उपनंद बोलि वृषभान पठाए
सुरपति पूजा होत तहां चलि गोबिंद आये ॥ बार बार हा हा करें
कहो बाबा मोसों बात ॥ घर घर भोजन होत है कौन देव को भा
त ॥२॥ सां मानि हमारो कुसल जानि एक मंत्र उपेहें ॥ षट रस भो
जन साजि भोग सुरपति को देहें ॥ नंद कहो सुत का मिकें को
रामो दूर सोइ ॥ बरष दिवस को दिवस है हो महा महोत्सव हो
इ ॥३॥ हरि बोले तिहि समे मंत्र बहु होय फिर कोनों ॥ आसिपुरु

षानिजजांनिरें निसपनों मोहि दीनों ॥ सव देवनकों देवहें गिरि
गोवर्द्धनराज ॥ नाहि भोगाकिन दीजियें सुरपतिकों कहा काज
॥ वाटें गोसुत गाइ दूध दधि कों कहा लेखो ॥ यह परचो विद्य
मांन नैंन अपने किन देखों ॥ तुम्हरे वनतें वालि खाइ गोमोहि मा
गपों फल देइ ॥ गोपकुसल जो चाहि हों तो गिरि गोवर्द्धन सेइ ॥ ५ ॥
गोपन कियो विचार सवन मिलि सकट समाजे ॥ वहु विधि क
रि पकवांन चले तहां वाजन वाजे ॥ इक जो वन नहीं वन चले इ
क नंदी सुरभीर ॥ एक नियेंडे पांव हीं फूले फिरत अहीर ॥ ६ ॥ इ
कपेंडे इक उवट एक वन नहीं वन जांहीं ॥ गावत गुन गोपाल
प्रेम उमगे न समांहीं ॥ गोपन कों सागर भयो गिरि भयो मंद
राचार ॥ रतन भई सव गोपिका कांन्ह लियो वन हार ॥ ७ ॥ व्रज
चौरासी कोस परे गोपन के डेरा ॥ ताके चौ वन कोस आसपास व्रज
वास वसेरा ॥ सवहुनि के मन सांवरो दीसें नंदकुमार ॥ कौ
तुक भूले देवता आए लोक विसारि ॥ ८ ॥ कान्ह चित्र वुलाइ व
न आरंभन कीनों ॥ सुरपति पूजा मेटि राज गोवर्द्धन दीनों ॥
देवखवारी सों महीं सव मिलि पूजन जाहिं ॥ नंद प्रतीति जो भा
षि हों तो तुम देषत वालि षांहि ॥ ९ ॥ प्रथम दूध अन्हवाइ व
हुरि गंगाजल न्हाहीं ॥ वहोरें वन भामिनि कान्ह कों मनों विचा
हीं ॥ जैसें है गिरराज तैसों अन्न को कोट ॥ मगन भये पूजा
करें नरनारी वड छोट ॥ १० ॥ सहस भुजा उर धरें करें भोजन अ
धिकाई ॥ नवल भिखलें उनहार मनों दूसरो कन्हाई ॥ ललिता
राधा सों कहें तेरे हियें समाइ ॥ गहें अंगुरि पानें रकी छोटा पूजा
खाइ ॥ ११ ॥ पीत दुमालो वन्यो कें मोतिन की माला ॥ भूषन
भुज अनूप कलम लेनें नावि साला ॥ स्याम की सोभा गिरि भ
योंगिरि की सोभा स्यांम ॥ तैसोई पर्वत भांत कों दिग भैया व
लिरांम ॥ १२ ॥ जैसी कंचनपुरी रचि रतनन में छाई ॥ वलि दीनी
है प्रान छाड़ पूरव फिरि आई ॥ वरा विराजत भात पर चंद रहि
प तरसोइ ॥ कौर ठौर वेटी रची वहू विधि पूजा होइ ॥ १३ ॥ जहां
तहां दधि धरे कहां कहें उज्जल ताई ॥ औ दधि सिखर नहोइ
भांतमें दहू छिपाई ॥ वद रोला सुख भांन की दही विलोकन
हार ॥ ताके वल इन देवता लीनों भुजा पसारि ॥ १४ ॥ वहु विधि
विंजन अरपि गोप गोपिनि कर जोरें ॥ कीने आगनित सारद

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू॰सा॰ ॥९६

सबरनें कछु षायो ॥ इहि विधि पूजा पूजि कें गोविंद के गुन गाइ ॥ सु
ष लै निज भवन कों लीला सरस बनाइ ॥ ५५ ॥ राग बिलावल ॥ सू
हों ॥ बाजति नंद अवास बधाई ॥ बैठे षेलत द्वार आपने सात ब
रष के कुंवर कन्हाई ॥ १ ॥ बैठे नंद सहित वृषभानहि और गोप स
ब बैठे आई ॥ थापे देत घरनि के द्वारें गावति मंगल नारि बधा
ई ॥ २ ॥ पूजा करत इंद्र की जांनी आए स्याम तहां अतुराई ॥ बा
र बार पूछति हरि नंदहि कों न देव की करत पुजाई ॥ ३ ॥ इंद्र बडे
कुलदेव हमारे इनतें यह सब होति बडाई ॥ सूर स्याम तुम्हरे
हित कारण यह पूजा मैं करत सदाई ॥ ४ ॥ राग आसावरी ॥ नं
द कहौं घर जाहु कन्हाई ॥ ऐसे मैं तुम जाहु जिन कहूं अबहों म
हरि सुत लेहु बुलाई ॥ १ ॥ सोइ रहो मेरे पलिका पर कहत तिम
हरि हरि सों समुझाई ॥ बरष दिवस को महा महोछौ कोउ आवै
गो कोंन सुभाई ॥ २ ॥ आय स्याम ढिग बैठि महरि कें कीनों एक
बिचार बनाई ॥ सुपने आय मिल्यो एक सो को बडो पुरुष अ
वतार जनाई ॥ ३ ॥ गिरि गोबर्द्धन देवनि की मणि सेवहु ताकों
भोग चढाई ॥ कहन लग्यो मोसों तुम ते पूजत नहीं तुम काहि म
नाई ॥ ४ ॥ भोजन करें सबन के आगें कहत स्याम यह मन उप
जाई ॥ सूरदास प्रभु गोपन आगें यह लीला कीहि प्रगट सुना
ई ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ सुनें ग्वाल यह कहत कन्हाई ॥ सुरपति की पू
जा कों मेटत गोबर्द्धन की करत बडाई ॥ १ ॥ फैलि गई यह बात
घरनि घर कहां जो नें देव पुजाई ॥ हलधर कहत सबें बृज
बासी यह मोहि मातु मका हून पाई ॥ २ ॥ कोउ कोउ कहत करो
यह ऐसो कोउ यह कहत कहें को भाई ॥ सूरदास कोउ सुनि
सुष पावत कोउ बरजत सुरपति हि डराई ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ मे
रो कह्यो सत्य करि जांनों जो जानो ब्रज की कुसलाई तो गिरि
गोवर्द्धन कों मांनों ॥ १ ॥ दूध दही तुम के तो लेहो गो सुत बढें
अनेक ॥ कहा पूजि सुरपति सों पायो छांडि देहु यह टेक ॥ २ ॥
मुख मागे फल जो तुम पावहु तो तुम मानो मोहि ॥ सूरदास प्र
भु कहत ग्वाल सों सत्य वचन करि दोहि ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥ छां
डि देहु सुरपति की पूजा ॥ कान्ह कह्यौ गोबर्द्धन जैसो और देव न
ही दूजा ॥ १ ॥ गोपन सत्य मांनि यह लीजें बडो देव गिरिराज ॥
मोहि छांडि येपर बन पूजन गर्भ कियो सुरराज ॥ २ ॥ पर्वत सहि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

नधोइब्रजराखोंदेहुसमुद्रवहाइ॥मेरोंवलिग्रोरेलेंग्रर्पनइ
हूकीकरोंसजाइ॥३॥राखोंनहींइनेंभूतलपरगोकुलरेहुवुडा
ई॥सूरदासप्रभुजाकेरक्षकसंगहिंसंगरहाई॥४॥राग नट॥
ग्रानिग्रानंदब्रजवासीलोग॥भांतिभांतिपकवांनसकटभ
रिभरिलेंचलेछहूरसभोग॥१॥तीनिलोककोंठाकुरसंगहें
तासोंकहतसखाहमजोग॥ग्रावतजानडगरनांहिपावत
गोवर्द्धनपूजासंजोग॥२॥कोऊपोहोंचेंकोऊरेंगतमगमेंको
ऊघरतेनिकसेंकोऊनांहिं॥कोऊपोहोंच्याइसकटघरग्रावत
ग्रपनेरसकोऊगावतजांहिं॥३॥मारगमेंकोऊनिर्तनकोऊ
घरतेंभोजनलेलेंखांहिं॥सूरस्यांमकोजसोमतिरेरतिवहुत
भीरभईहूरिनभुलाहिं॥४॥रागनट॥चलीघरघरनितेंब्रजनारि
मनोंइंद्रवधूनपंगतिलगतिसोभाभारि॥१॥पहरिसारीसुरंग
फवरंगषब्रुदससिंगारि॥पहेंइछासवनकेचितस्यांमरूप
निहारि॥२॥ललिताचंद्रावालिहिराधासंगकरतिविहार॥च
लीपूजाकरनगिरिकोंसूरसंगनंदनारि॥३॥रागनट॥वि
प्रवुलायलयेनंदराइ॥प्रथमकोंभजज्ञकोंकीनोंउठेवेस्तु
निगाइ॥१॥गोवर्द्धनसिरतिलककरियोंतवमेंटिइंद्रठकुराइ
ग्रन्नकूटऐसोंरचिरायोंगिरिकीउपमापाइ॥२॥भांतिभांति
विंजनपरसाएकापेंवरनेजाइ॥सूरस्यांमसोंकहतग्वालगि
रिजेंवतकहोंपुनाइ॥३॥रागनट॥कहतकांन्हनंदवावाग्राव
हु॥भोजनधरोंपरासिसवग्रागेंप्रेमसहितगिरिराजमना
वहु॥१॥ग्रौरनंदउपनंदवुलाएकह्योंसवनसोंभोगलगावा
हु॥सुपनेमेंदेखीमेरीमूरतियहेंरूपहरिध्यांनाधियावहु॥
२॥इकमनएकचित्तकेग्रर्पनकरोंप्रगटदर्सनतुमपावहु
सूरस्यांमकहिप्रगटसवनसोंग्रपनेकरलेंकोंनाहिंजिवा
वहु॥३॥रागकेदारो॥विनतीकरतसकलग्रहीर॥कलसभरि
भरिग्वाललेंलेंसिखरडारतिछीर॥१॥वल्पोवहिवालिपास
तेपयसुरसुरीजलधार॥वसनभूषनलेंचढाइंहिभीएग्रति
नरनापि॥२॥मूंदिलोचनभोगग्ररप्योंप्रेमसोंरचिपार॥सव
नदेष्योंप्रगटमूरतिसहससभुजापसारि॥३॥रुचिसहितगि
रिसवनग्रागेंकरनलेंलेंषाइ॥नंदसुतमहिमाग्रगोचर
सूरकोंकहिजाइ॥४॥रागनट॥गिरिवरस्यांमकीउनहारि क

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ सू.सा रतभोजनअतिअधिकयहसहस्रभुजापसारि ॥ २ ॥ नंदकोंकरग
॥ ७५ ॥ हेकहतेंयहेंगिरिकोंरूप ॥ सखीललिताराधिकासोंकहतदेखि
स्वरूप ॥ ३ ॥ पहेंकुंडलयहेंमालायहेंपीतपिछोंरि ॥ सिखिरसो
भअतिबनीहैं स्यामछबिगिरिजोरि ॥ ४ ॥ नागिधरकोंलारहे
वृषभांनघररखवारि ॥ तहांतेपुनभोगअर्प्योंलीयोंभुजापसा
रि ॥ ५ ॥ राधिकाछबिदेखिभूली स्यामनिरखतारि ॥ सूरप्रभुव
सभएप्यारीकोरलोचनचारि ॥ ६ ॥ राग धनाश्री ॥ देखोंरीहरि
भोजनखांत ॥ सहस्रभुजाधरिउतजेंवतहैं इतहिकहतगोपन
सोंबात ॥ १ ॥ ललिताकहततेंदेखिहेंराधाजोतेरेमनबातसमाइ
धन्यसबहनगोकुलकेवासीसंगरहतत्रिभुवनकेराइ ॥ २ ॥
जेंवतदेखिउतहिसुखकीनोंअतिआनंदगोकुलनरनारि ॥
सूरदासस्वामीसुखसागरगुनआगरनगरदातार ॥ ३ ॥ राग
गौरी ॥ यहलीलासबकरतकन्हाई ॥ उतजेंवतगिरिगोवर्द्धनसें
गइतराधासुंप्रीतिलगाई ॥ १ ॥ इतगोपनसोंकहतजिवावहु
उतहिआपजेंवतमनलाइ ॥ अगणितभोजनछहूरसविंजनवरनी
लाकोंकियोंभगाई ॥ २ ॥ अमरविमानचढेसबदेखतजयधु
निकीसुमननिवरखाई ॥ सूरस्यामसबसुखकेदाताभक्तहेत
अवतारसदाई ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ स्यामकहतपूजागिरिमांनी
जोतुमभावभक्तिसोंराख्योंदेवराजसबजांनी ॥ १ ॥ तुमदेख
तभोजनसबकीनोंअबतुममोहिपत्यानें ॥ बडोदेवगिरि
राजगोवर्द्धनइनेंहोंतुममांनें ॥ २ ॥ सेवाभलीकरीतुममेरीदे
वकहीयहबांनी ॥ सूरनंदसुखचूंबनहरिकोंपदपूजनसुम
ठांनी ॥ ३ ॥ राग गौरी ॥ औरनदेवकछुमागोंमोसों ॥ जोचाहोंसोदे
हुतुरतही कहतसबेंगोपनसों ॥ १ ॥ बालिमोहनदेउसुततेरे
कुसलसदाएरहिहैं ॥ इनकोंकह्योंकरततुमराहियोंजबजा
वजोईएकहिहें ॥ २ ॥ सेवाबहुतकरीतुममेरीअबसबतुम
घरजावं ॥ भोगप्रसादलेहुकछुमेरोगोपसबेंमिलिखाहु ॥ ३
सुपनेहूमेंकह्योंस्यामसोंकरोंहमारीपूजा ॥ सुरपतिकोंन
बापुरोंमोतेंऔरदेवनहिदूजा ॥ ४ ॥ इंद्रआइजोबरषेंब्रज
परतुमजिनडरहुडराइ ॥ सुनोंसूरसुतकान्हजुमारोंकहिहें
मोइसुनाइ ॥ ५ ॥ राग गौड मलार ॥ गोपउपनंदवृषभानआए
विनयसबकरतगिरिराजसोंजोरिकरिगएतनतापजब

दरसपाए ॥१॥ देवनाथवडेतुम प्रगट दरसन दियो प्रगट भोजन
कियोसवनदेष्यौ ॥ प्रगटवातेंकहींगिरिराजननदेष्यौदेव
प्रसन्नभएकरोकाजा ॥ सूरप्रभुप्रगटलीलाकहीसवनसौं
चलेघरघरनिअपनेसमाजा ॥४॥ राग नट ॥ चलेव्रजघरघ
रनिकोंनरनारि इंद्रकीपूजामिटाईतिलकगिरिकोंसार ॥१॥
पुलकिअंगनमातउरमेंमहरिमहरिसमाज ॥ अवकेवडोहम
देवपायोगिरिगोवर्द्धनराज ॥२॥ इन्हीतेंव्रजचैनरहिहैं मांगें
भोजनखांन ॥ यहघरघरकरतव्रजजनसवनिमुषयहवा
त ॥३॥ सवैसदननिआइपौंढेचैंकरनकेलिविलास ॥ सूरप्र
भुयहकरीलीलाइंद्रिसपरकास ॥४॥ इति श्री भागवते म
हापुराणे दशमस्कंधे चतुर्विंशतितमोध्यायः ॥२४॥ अथ गिरिध
रनलीलावर्णनं ॥ राग सारंग ॥ व्रजवासीनमोकोंविसरायो
भलीकरीमेरोंवलजोकछुसोसवलेंपरवतहिचढायो ॥१॥
मोसोंगर्वकियोंलघुप्रांनीनाजानुंकहाँमनआयो ॥ तेति
सकोटिसुरनिकोंनायकजानिवूझिहिमोहिभुलायो ॥२॥
अवलोपनभूतलवनहियाखोंमेरोवलमोहिनाहिपहुचायो
सुनोंसूरमेरेमारतधोंपर्वततोसेंहोनसहायो ॥३॥ राग सोर
ठि ॥ प्रथमहिदेहुगिरिहिवहाई ॥ व्रजघातनकरोंचुरकुटदे
वधरनिमिलाई ॥ मेरीइनमहिमानाहिजांनीप्रगटदेउव
हाइ ॥ जलवरषिव्रजधोयडारोंलोगदेउवलाइ ॥१॥ षातखे
लतयहेंनीकेकरीउपाधिवनाइ ॥ वरषदिनमोहिदेतपूजा
सोयदईमिटाइ ॥३॥ रिससहितगिरिराजलीनेप्रलयमेघवु
लाइ ॥ सूरसुरपतिकहतपुनिपुनिघरोंव्रजपरआइ ॥४॥ राग
मलार ॥ सुनतमेघआवर्तकसेंनसाजिआए ॥ जलवर्तपव
नवर्तवज्रावर्तपुनिआगिनिवर्तिकजलदसंगल्याए ॥१॥
घररातगररातदररातहहरातततरातमाथानवाए ॥ के
सोकाजमहाराजसुरराजलैंप्रलयकेसाजहमकोंवुलाए
वर्षसंजोगमोहिदेतहेंभोगमतिछुद्रव्रजलोगअवगर्भ
कीनों ॥ दियोंविसराइपूज्यौगिरिहिजाइअवपरोंव्रजधा
इआयुसहिदीनों ॥३॥ विलंवकव्रजलोगरिसकरतकिह्मो
गगिरिलियोहेंभोगफलतुरतपेहें ॥ सूरसुरपतिसुनोंजोव
योसोलुनोंप्रभुकहंगुनोंगिरिसहितवहिहेवहिहें ॥४॥ रा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू॰सा॥ राग मलार ॥ विनती सुनों देव मघवापति ॥ किती कवान गोकुल
॥८८॥ व्रजवासी वार वार रिसि करत नाहि प्रति ॥ १ ॥ आपुन वैठि दे
षियें कौतुक वहुतें आयुस दीनों ॥ छिन में वरषि प्रलय जल
वाढे खोज रहें नाहि चीनों ॥ २ ॥ महाप्रलय हम मेरे जल वरषौ ग
गन रहे भरि छाइ ॥ वृक्ष अषें वटल चतनिरंतर वरहों व्रज गो
कुल गांइ ॥ ३ ॥ चल मेघ माथें धरि धरि कें मन में क्रोध वढाइ
उमडत चले इंद्र के पायक सूर गगन रह्यो छाइ ॥ ४ ॥ राग मला
र ॥ मेघ दल प्रवल व्रज लोग देखे ॥ चकृत जहां तहां भए नि
रखि वादर भए ग्वाल गोपाल डरी गगन पेखें ॥ १ ॥ ऐसे वादर
सजल करत अति महा वल घिरति करि फलक कति अंधका
ला ॥ चकृत भए महरि सव नंद चकृत भए चकृत नर नारि
हृदै करत ख्याल ॥ २ ॥ घटा घनघोर घहरात अररात दररा
त व्रज लोग अररात डरपे ॥ तडित आघात तररात उतपात सों
नारि नर सकुचि तन प्रान अरपे ॥ ३ ॥ कहां वह तिहुं ई भई नक
वहूं जोई कवहूं आगम भवन विकल डोलें ॥ मोरि पूजा इंद्र नं
द सुत गोविंद सूर प्रानंद कलि कलोलें ॥ ४ ॥ राग मलार
गिरि पर वरसन लागे वादर ॥ मेघवर्त जलवर्त सेंन सजि ।
आए लें लें आदर ॥ १ ॥ सलिल अषंड धार टूटत नहें कियें इंद्र म
न सादर ॥ मेघ परस्पर यहें कहत हें धार धुरे जल खादर ॥ २ ॥
देखि देखि डरपत व्रजवासी अतिहि भये मन कादर ॥ यहें क
हत व्रज कौन उवारें सुरपति कियो निरादर ॥ ३ ॥ देख आपनो
नहि संभारत करत इंद्र सो पादर ॥ सूरस्याम देखो गिरि अ
पनो मेघन कीनो दादर ॥ ४ ॥ राग सोरठ ॥ व्रज के लोग फिरत वि
ततानें ॥ गैयन लें वन ग्वाल गए ते आवत व्रजहि पराने ॥ १ ॥
कोऊ चितवत नभ तन चक्रत तहें कोऊ गिरि पर तन धरनि अ
कुलाने ॥ कोऊ पौंहोचे जैसें तैसें ग्रह कोऊ ढूंढत ग्रह नहि पह
चाने ॥ २ ॥ सूरदास गोवर्द्धन पूजा कीनी को फल लेहु विहाने
॥ ३ ॥ राग गोरी ॥ वरसत नभ डर पत व्रज लोग ॥ सुरपति की पूजा
विसराई लें दीनों सुरपति कों भोग ॥ १ ॥ नंद सुवन यह विधि
उपजाई कोंन देव कहीं पर्वत जोग ॥ सूरदास गिरि वडो दे
वता प्रगट ह्यो ऐसे संजोग ॥ २ ॥ राग मलार ॥ व्रज नर नारीन
दंजसो मतिसों कहत स्याम ये कांम करे ॥ कुल देवता हमा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

ह्यौंसुरपति तिनकौंसबमिलिभेरथोरे ॥ २ ॥ इंद्रहिमेंटिगोवर्द्धन
पायौं इहिकीपूजाकहांसरे ॥ सेंततफिरतजहांतहांवासन
लखिकननैलेंगोरभरे ॥ ४ ॥ कोपकरिलेइसहाइहमपी पल
यकालकेमेघप्रेरे ॥ सूरदाससबकहतनाधिनरवैसुर
पतिपूजाविसरे ॥ ३ ॥ रागगोडमलार ॥ सुरनराखिराखिलिनंदत्रा
ता ॥ घटाआईगरजराइजुवनिलजिवीजचमकतिडरांनि
दुरतगाता ॥ १ ॥ औरकोऊनहिंतुमहिंबिनाप्रभूधनी बिक
लहूंकहीतुमसोंजुबाता ॥ सूरप्रभुसुनिहंसतप्रीतिमनमें
बसतइंद्रकोगननतनहिंजगतधाता ॥ २ ॥ रागकेदारो ॥ रा
खिलेहुगोकुलकेनायक ॥ भीजतगाइग्वारगोसुतसबबि
षमबूंदलागततनसायक ॥ १ ॥ मूसलधारबरषतब्रजऊप
रमहामेघमघवाकेपायक ॥ औरकोंनहैंनंदसुवनबिनु
पहुंदुखदुसहमेंरिवेलायक ॥ २ ॥ अघमनैबकबकदनबि
दारनबककीबिनासघोषसुखदायक ॥ सूरदासतिनकोंका
कौडरजिनिकेतुमसेसहायक ॥ ३ ॥ रागबिलावल ॥ राखि
लेहुअबनंदकिसोर ॥ तुमजुइंद्रकीपूजामेटीबरषतहेंअबजोर
॥ १ ॥ ब्रजवासीसबचितवततुमकोंजेसेचंदचकोर ॥ जिनाजिय
डरोंनेंनसबमूंदेंधरनिधरनखकीकोर ॥ २ ॥ करिअभिमानइं
द्रझरलायोकरतघटाघनघोर ॥ सूरस्यामकहितुमसबरा
खोंवृंदनआसैंढोर ॥ ३ ॥ रागबिलावल ॥ स्यामजूमहामेघअ
बआयो ॥ अरकोंगाइबहोरोमोहनग्वारनिटेरिसुनायो ॥ १ ॥
कारीघटासधूपदेखियतअतिगतिपवनचलायो ॥ चारों
दिसाचितेंकिनदेखोदामिनिकोंधालायो ॥ २ ॥ अबघनस्या
मनेरेसमूरप्रभुकरगहिमेलउठायो ॥ राखिलियोसबसु
रवमेंब्रजजनइंद्रकोगर्भनसायो ॥ ३ ॥ रागबिलावल ॥ माधौजू
कांपतडरपतअधिकहियो ॥ तुमहिंइंद्रकीपूजामेटीताते
कोपकियो ॥ १ ॥ दामिनिषड्गबूंदसायकमनुघनजोधालीं
येंसंग ॥ ह्यगयसररससमीरसमोंरिसधनुषधुजाबहुरंग
॥ २ ॥ सोभितसुभटदुछरपेंजकरिभिरतनमोरतअंग ॥ तुमरे
कहेंकियोनंदनंदनसुरपतिकोंव्रतभंग ॥ ३ ॥ बरषतप्रलय
मेघधरअंबरडरपतगोकुलगाइ ॥ समरथनाहिंसरनबि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू०सा०॥ नुतुलसीऔरकोंनपैंजाइ॥४॥जैसेंअनलव्यापिउरराखैंश्री
॥८६॥ पतिसोंअवकीजेंसहाइ॥हमरेतुमहींहौंचिंतामनिसववि
धिराइउपाइ॥५॥वलिसमेतगोपालवुलाएअभयकियेदे
वाह॥जिनिडरकरोंसवैंमिलिआवहुयापरवतकीछांह॥६॥
एकहाथगोवर्द्धनराख्योंसातदिवसवलवीर॥सूरदासप्रभु
व्रजवासिनकेगयेसवैंदुखपीर॥७॥रागगौडमलार॥गगन
मेघघहरातथहरातहैंगात॥चपलाचमचमातिचमकि
नभयहरातराखिलेंकैंसेंअववृजनंदनात॥१॥सुनतक
रुनावेंनउठहरिवलीऔंननेनकीसेंनगिरितनतनिहार्यो
सवनधीरजदियोंउचकिमंदिरलियोंकह्योंगिरिराजतुम
कोंउवार्यो॥२॥करनकेअग्रभुजवांमगिरिवरधर्योंनामगि
रिधरपर्योंभक्तकाजें॥सूरप्रभुकहतव्रजवासिनिसों
राखितुमलियोंगिरिराजराजें॥३॥रागगौरी॥स्यामलियों
गिरिराजउठाइ॥धीरधरोंहरिकहतसवनसोंगिरिगोवर्द्ध
नकरेंसहाइ॥४॥नंदगोपग्वालनकेआगेंदेवकह्योयहअ
गटसुनाइ॥कान्हकोंव्याकुलभयडोलततरसाकरेंदेवताआ
इ॥५॥सत्यवचनसवदेवकहतहैंकान्हमोहिकरलेनवनाइ
सूरदासनारीनरव्रजकेकहतधन्यतुवकुवरकन्हाई॥६॥रा
गमलार॥वामकरगहेटेकवैंगिरिराज॥ग्वालगायकोंदुखवि
सरायोंसुखकोंकरतसमाज॥१॥आनंदकरतसवैंगिरखरत
रदुखडार्योंसवहूनिविसराइ॥करूतभयेदेखियहलीला
परेसवैंहरिचरननधाइ॥२॥गिरवरटेकिरहेवाऔसरदेखन
करलेंसवनिउठाइ॥कान्हकह्योअवसोंगोवर्द्धनदेखोंकैसेंक
योंसहाइ॥३॥गोपग्वालनंदादिकजहांतहांनेंदसुवनलियेनि
करवुलाइ॥सूरदासप्रभुकहतसवनसोंतुमहूंमिलिगिरि
टेकोंआइ॥४॥रागमलार॥वरषिवरषिघनव्रजतनहेरत
मेघवर्त्तअपनीसेनाकोंवीजतिहैंहरिटेरत॥१॥मूसलधार
वरषिव्रजपारेंसातदिवसभएआइ॥कहांववरषिअवलों
तुमकीनोंराखतजलहिछिपाइ॥२॥रिसकरिकरिगरजत
फिरिनरफततचांहतव्रजहीवहाइ॥सूरस्यांमगिरिगोवर्द्धन
धारिव्रजजनकोंसुखदाइ॥३॥रागमलार॥वरषिवरषिहारे

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सववारद्र॥ ब्रजके लोग निधोइ वह्यावों इंद्र पठये कारि आरद्र
॥२॥ कहांजाय कहि है प्रभु आगें कारि है बहुत निरादर॥ हम वरष
त पर्वत जल सो खत व्रजवासी सव सादर॥२॥ सुनि रिस कर
त प्रलय जल वरखत कहत भये सव कादर॥ सूरस्याम गो
सुत सव राखे गिरवर धरि ब्रज आधर॥३॥ राग धनाश्री॥ कहां
है तन जल मह्या प्रलय को॥ राख्यो सेति सेति जो हि कें मन वच
तन ही कहूं तन को॥१॥ भूपर एक वूंद नहि पोहेंची झरि झरि क
रि गए सव मेह॥ वासर सात अखंडित धारा वरषत हारो देह
॥२॥ उदर भयो विन नीर सवन को नाउर है गो है वादर॥ सूर चले
फिरि अमरराज पें व्रजन ते भये निरादर॥३॥ राग मलार॥ मेघन
हारि मांनि मुख फेर्यो॥ नीकें गोपनी कें गोवर्द्धन जो नीकें व्र
ज हेर्यो॥१॥ नीके गाइ वछ सव नीके नीकें वाल गोपाल॥ नी
कों वन वैसें ही जमुना मन मन भए वेहाल॥ गोकुल व्रज वृं
दावन मारग नेंकन ही जलधार॥ [illegible] प्रभु आगनि तम
हिमा कही भयो जलसार॥३॥ राग मलार॥ मेघन जाइ करी पु
कार॥ दीन ह्वै सुरराज आगें [illegible] नेडार॥१॥ सात दिन भरि
वरषि व्रज पर गई नेंक न [illegible] अखिल [illegible] सलिल निकस्यों
में टिना हि आगार॥२॥ [illegible] नाहि कहूं रह्यो है चीह्न एवि ब्रज
नरनारि॥ सूर घन सव इंद्र आगें कहत यहै गुहारि॥३॥ राग म
लार॥ मांनि हारि सव मेघ गये॥ सुरपति सों यह वात सुनाई अ
नि दुख मन हि छए॥१॥ सात दिवस निस प्रलय काल जल अ
ति वल करि वरखाए॥ वज्रपात वहु भांति किये हम गिरि के कं
छु वन भाए॥२॥ कोऊ पुरुष वल भारी है तहां ते हि समर्पागत
जावो॥ तुमरे औरलोक देवन को अभयत वहि न भावो॥३॥
सुनि सुरपति सक अमर वुलाए वानें सकल सुनाई॥ हरि को
जन्म कह्यो सव देवन सुनत मन नहि पछितांई॥४॥ व्रजमें सूर्य
उदय भयो तव ही हरि यह वचन उचारी॥ निकसो अव गिरि
के नीचें ते चूक छिगाई सव भारी॥५॥ अव डरत जो गाय वछ हिलें
सुख सों वन नहि चरावो॥ सुनत वचन हरखे सव व्रजजन धनि
तुमकों न कहावो॥६॥ गाय वछ अरु गोप सखा सव गिरि ते
वाहिर आयो॥ तव हरि गिरधर नी पर धारि कें सुंदर वचन सु
नायो॥७॥ फिरि गिरि कों पूजों पग लागों व्रजवासिन कों देव

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ सू॰सा सुनतवचनसवही पूजेगिरि सुनतहूंसेवलदेव ॥ ५ ॥ येहिवि
॥ ८० ॥ धिअपनोंजसप्रगटयोगोपीगायवचाए ॥ सूरदासहूहिकी
लीलालखिविमलविमलजसगाए ॥ ६ ॥ इतिश्रीभागवते
महापुराणेदशमस्कंधेपंचविंशतिमोध्यायः ॥ २५ ॥ रागकां
न्हरो ॥ अमरराजसकअमरबुलाए ॥ आगणासुनतसकलघ
रधरतेंआयगएकछुविलमनलाए ॥ १ ॥ कोंनकाजसुररा
जहुकारेहमकोंआयुसहोइ ॥ देखोंमेघवर्तनकीगतिहम
लेंआएरोइ ॥ २ ॥ गोवर्द्धनकीपूजाकीनीमोहिडाह्योविसराइ
मेघवर्तजलवर्तपठाएआवहुव्रजहिवुडाइ ॥ ३ ॥ धरणोंखंडि
तकरिमिसातदिनव्रजपहुच्योनहिबूंद ॥ सूरदासप्रभुकृपा
करेंगेमरनिचलोगेमूंद ॥ ४ ॥ रागमारू ॥ मस्नगयेसुहोइसु
होइ ॥ वेकर्त्तावेईहेंहर्त्ता अवनाहीसुखगोइ ॥ १ ॥ व्रजअव
तारकह्योहेंश्रीमुखतेंईकरतविहार ॥ पूरनब्रह्मसनातन
पाईमेंभूल्योसंसार ॥ २ ॥ उनकेआगेंचाहेंपूजाज्योंमनिदीप
प्रकास ॥ रविआगेंखद्योतउज्यारीज्योंजनसंगकुवास ॥ ३ ॥ के
रिइंद्रछिनहीमेंआवतछिनमेंकरतविनास ॥ सूरस्यामउन
हीकोंसुरपतिमेंभूल्योंतजिआस ॥ ४ ॥ रागमलार ॥ सुरपतिच
रणपरयोगहिधाई ॥ तुमगुणनखोइदोषगुणजांन्योंआयोंस
रनिराखिसिरनाई ॥ १ ॥ तुमविसरयोंतुमरीहीमायातुमविनु
नाहिओरसहाइ ॥ सरनसरनपुनिपुनिकहिमोहिराखिरा
खित्रिभुवनकेराइ ॥ २ ॥ मोतेंचूकपरीविनुजानेंमेंकीनेंअप
राधवनाइ ॥ तुममातातुमहीजगताता तुमभ्राताअपराध
छमाइ ॥ ३ ॥ ज्योंबालककमातासोंविरचेमातानकोंलेतिमना
इ ॥ ऐसेंहीमोहिकरोंकृपाअवसूरस्यामजोमुतहिनमाइ ॥ ४ ॥
रागविलावल ॥ व्याकुलदेखिइंद्रकोंश्रीपतिउभयभुजाकरि
लियोंउठाय ॥ अभयनिरभयकरिमाथोराख्योंश्रीमुखकह्यों
वचनमुसिकाय ॥ १ ॥ कहांभयोंकपिकोधचढेव्रजमेंतुरतेंक
रिलियोंसहाय ॥ हमकोंजांनिनहीतुमकीनोंविनजानेंयहु
करीढिठाई ॥ २ ॥ अवअपनेजियसोचकरोंजिनियहमेरीरी
नीठकुराइ ॥ सूरस्यामगिरधरसवलायकइंद्रहिकह्योकरो
सुखजाइ ॥ ३ ॥ रागनट ॥ सुरगानकरतअस्तुतिसुखपानि ॥ दरस
तेंतनतापखोएमेटिअघकेदुखनि ॥ १ ॥ प्रेमपुलकितरोम

Shrimad Gokulnathji Maharaj

गऊरक्कहनबांसीसुरवनि ॥ वांमभुज गिरिरेक राख्यौं करजल
घु के नखनि ॥ २ ॥ प्रेम के वस नुमहि कीनों ग्वालबाल सखनि ॥ गो
पीजन बन तपन तापन नाहींपावत मखनि ॥ ३ ॥ धनि नंद धनि
मात जसुमति चलत जाके रूषनि ॥ सूर प्रभु महिमा अगोचर
जाति कापें लखनि ॥ ४ ॥ श्री राम कृष्ण व रवर्णनं ॥ राग भैरो
जैंगोविंद माधव मुकुंद हरि ॥ कृपासिंधु कल्याणकंसअरि
॥ १ ॥ कृपनपाल केसव कमलापति ॥ कृष्ण कमललोचन अग
तिनगति ॥ २ ॥ रामचंद्र राजीवनैन वर ॥ सरनसाधि श्रीपति सा
रंगधर ॥ ३ ॥ वनमाली बावन विठलवाल ॥ वासुदेव वासी ब्र
जभूतल ॥ ४ ॥ खरदूषन त्रिसरा सखंजन ॥ चरणचिन्ह दंडक भु
वमंडन ॥ ५ ॥ बकी करदन बक वदन विदारन ॥ वरुनविषाद नं
दनिस्तारन ॥ ६ ॥ रिषिमखभान नारिकातारक ॥ वनवसि नात
वचनप्रतिपारक ॥ ७ ॥ गोकुलपति गिरधर गुन सागर ॥ गोपी
रमन रासरसनागर ॥ ८ ॥ रघुपति प्रबल पिनाकविभंजन ॥
जगहित जनक सुतामनरंजन ॥ ९ ॥ कालीमर्दन केसीकर
पातन ॥ अघबकासिह धेनुक प्रतिघातन ॥ १० ॥ करुणामयक
पिकुलहितकारी ॥ बालिबिकंदु कपटमगहारी ॥ ११ ॥ गुपनमो
पवंन्यायातनपूरन ॥ छिलगगिरि निदरंरसनरखचूरन ॥ १२ ॥ राव
नकुंभकरनसिरछेदन ॥ नवबरषात एकसरवेधन ॥ १३ ॥
शंखचूडचांनूरसंघारन ॥ शक्रकोपब्रजजनव्हांमिनिवारन ॥ १४ ॥
उत्तरकृपाणसाधकीकरी ॥ दससनरैंस वरी उद्धरी ॥ १५ ॥ जेपरदस
रासंभुहितकारी ॥ जेपर परम सुसुरीकारी ॥ १६ ॥ जेपरपसस्मा
नहिंरोपें ॥ जेपर दयपतापनिहूंतारे ॥ १७ ॥ जेपर दंसरावनहिंवि
हारी ॥ जेपर पांडवग्रहपगधारी ॥ १८ ॥ जिहिपरसकलसुरसंघा
रे ॥ जेपर अहिफन फन प्रतिधारे ॥ १९ ॥ जेपर भगतनके सुख
कारी ॥ जेपर रंचिगोतमतियतारी ॥ २० ॥ सूरदास सुरजाचत
जेपर ॥ करहूं कृपा आपुनजनपरसर ॥ २१ ॥ राग आसावरी ॥
अस्तुति करि सुरघरन चले ॥ यहें करहूं न सबजनपरसुपरसु
कृत हमारे प्रगट फले ॥ १ ॥ सिवविरंचि सुरपति यहभाखत पू
रनब्रह्महि प्रगट मिले ॥ धन्य धन्य यहदिवस आजुको जाते
मारग गावें गले ॥ २ ॥ पहुचे जाय आपुने ओकनि सुरनारिन
आनि हरष भरे ॥ सूर स्वामि की लीला सुनि मुनि आनिहित

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू॰सा॰ मंगलगांन करे ३ ॥ राग सोरठि ॥ नवव करते गिरिधर्यौ उनाति स्यां
॥९२॥ मकह्यौं वहु ल्यौ गिरि पूजौं व्रजजन लए उवारि ॥१॥ यह सुनि ति
यमन हरष वढायौ व्रजलोगंनकवांन समांयि ॥ वहु मिष्टान वहु
विधि भोजन वहु विंजन उपहार ॥२॥ परसि धर्यौ गोवर्द्धन आ
गें जेंवत अतिरुचि विचार ॥ सूरस्यांम गिरिवरधर मांगन परोस्यौ
घोषकुमार ३ ॥ राग नट ॥ करते धर्यौ गिरि लें धरनि ॥ देखि व्र
जजन थकित ह्वै रहे सुरपति पति हरनि ॥१॥ लेत कर न थकि
त जांन्यौ कहत व्रजजन रनरिनि ॥ तनलालित भुज अति हि कों
मल कियौं अतिवल करन ॥२॥ मोसुकर विसाल लोचन
श्रवण कुंडल वरन ॥ नवजलद सुरचापकी छवि जुगल सं
जन नरन ३ ॥ हर्षि ह्री फिरे मेघनायक वहुत कीनी आनि ॥ सू
रसुपति हारि मांनी परयौ नवरें कुचरन ४ ॥ राग सोरठ ॥ नीकें
धर्यौ धरनि गोपाल ॥ करन अहु तिनाथिन्हे जनं रस वअ
रुग्वाल ॥१॥ प्रलयजलधन वरषि सुरपति परयौ वेहाल
जहां तहां ससहाय करि हम कों होन हैं नंदलाल ॥२॥ जहीं पूजन उ
रत मनमें नाहि दृष्यौ दीन ॥ त्रिदसपति सुरकों जु नायक सो
तुम्हें आधीन ३ ॥ सूरप्रभु करि गोवर्द्धन धर्यौ धरनि उतारि
देखि छवि अति नंदसुत की नाथि नमत वारि ४ ॥ राग सोरठ
गिरि कर पर राख्यौ ह्री नसात ॥ अति ही कोमल भुजा तुम्हारी
चापत जसुमात ॥१॥ ऊंचौ अति विस्तार भार वहु यह कहि
कहि पछितात ॥ वह अगाध तेरे नन कत न क कर के से राष्यौं
तात ॥२॥ मुख चुंवति हरि कंठ लगावति देखि हसत वलि
भ्रात ॥ सूरस्यांम कों कितीक वात यह जननी जोरति गात
३ ॥ राग गौरी ॥ मात पिता इनके नहि कोई ॥ आपुही कर्ता आपु
ही हर्ता त्रिगुन ग रा तें रहित जु होई ॥१॥ कितीक वार अवतार
लियौं व्रज एहुवे से एई ॥ जलथल कीट व्रह्म के स्वामी और न
ही सा कोइ ॥२॥ वसुधा भार उतारन कारन आपु रहत तनगो
इ ॥ सूरस्यांम मातानाहित कारन भोजन मांगत रोइ ३ ॥ राग कां
न्हरी ॥ जननी चांपति भुजा स्यांम की ठाढे देखि हसत वलि रां
म ॥ वोरह्ह भवन उदरमें जाके कहांगिरि व रजु धर्यौ कर वांम
१ ॥ जोई आवत सो ई रषि व क्रनके कहत करे हूए ऐसे कांम ॥
नाभि कमल व्रह्मा प्रगटायौ देखि व क्रन भयौ खोज निजधां

Shrimad Gokulnathji Maharaj

म॰ २ ॥ तिनसों कहत सबै व्रजवासी केसें गिरि राख्यो करवा
म ॥ सूरस्याम प्रभु जलथल व्यापक फिरि फिरि जन्म लेत न
रनाम ॥ ३ ॥ रा ग म ला र ॥ मेरे सांवरे हो बलि बलि गई भुजनकी
केसें सें लगह्यो कोमल कर पूछति हैं गानि तनकी ॥ १ ॥ तिल
क तंबोल नागरबल अच्छत दूरवा दि जसोदा लाई ॥ देत सब तिलक
चरणरज बंदित मनो रंक निधि पाई ॥ २ ॥ इंद्र रिसाय बरखि
व्रज ऊपर सो उहत पविहारे ॥ गोपी ग्वाल कहत जोरें कर तु
महम भले उबारे ॥ ३ ॥ मोहन वदन देखि व्रजनारी बारबार मु
सिकांनि ॥ फिरि फिरि दरस गिरधर को नेंन नसांन बुझांनि ॥ ४
तुम व्रज पाल अवगत अविनासी तुम रेम समन पाए ॥ सूरदा
स सुरपति जिय संकित निरभें लें घर आए ॥ ५ ॥ रा ग म ला र ॥ स
बैं मिलि पूजो हरि की बहियां ॥ जोन हिलेत उठाइ गोवर्द्धन को
बाचत व्रज महियां ॥ १ ॥ कोमल कर गिरि धर्यो घोष पर सुख
द कमल की छहियां ॥ सूरदास प्रभु सब रसको आनंद
हो तन सब मांहियां ॥ २ ॥ रा ग कां न रो ॥ घर घर तें व्रजजुवती आव
ति ॥ दधि अच्छत रोचन धरि थारी रहे रवि स्याम सिर तिलक
बधावनि ॥ १ ॥ बार बार निरखति अंग अंग छबि स्याम रूप उर
मांहि दुरावत ॥ नंदसुवन गिरि धर्यौ बामकर यह कहि कहि क
हि मनहरख बढावत ॥ २ ॥ जिहि पूजत सब जन्म गवांयो सो
कैसो रूप गाछु कलपावत ॥ सूरस्याम गिरिधरन माग वरक
रजो रति कि हि विधि हि मनावत ॥ ३ ॥ रा ग सो र ठ ॥ गिरवर के
संध ह्यो उठाइ ॥ कोमल कर चापति महतारी यह कहि लेत
बलाइ ॥ १ ॥ मह्मा प्रलय जल तापर राख्यो एक गोवर्द्धन भारी
नेंकन हीन खपरतें डाह्यो मेरो सुत नहि तकारी ॥ २ ॥ कंचन
थार दूब दधि रोचन मजनि बोल लें आई ॥ हरखति तिलक
करन मुख निरखत भुज भरि कंठ लगाई ॥ ३ ॥ रिस करिकें
सुरपति चढि आयो देतो व्रज हि बहाय ॥ सूरस्याम सों कहति
जसोदा गिरधर बडो कन्हाई ॥ ४ ॥ रा ग सो र ठ ॥ तेरी भुजनि ब
हुत बल हो इक नैया ॥ बार बार भुज देखि तनक सो कहत
जसोदा मैया ॥ १ ॥ स्याम कहत नहि भुजा पिरानी ग्वालनि कि
यो सहैया ॥ लकुट टेकि सब वन मिलि राख्यो अरु बाबा नंद
रैया ॥ २ ॥ मो सों कैसो रहतो गोवर्द्धन अति हि बडो वह भारी ॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. सूरस्यांम यह कहि परमोध्यौ देखि चक्रत मह नारी ॥ ३ ॥ रा
९२ गसोरठ ॥ मेरे मोंहन जल प्रवाह के सेंटार्यौ ॥ पूछत नंद जसोदा
माता इंद्र कोप संभार्यौ ॥ १ ॥ ग्वाल सखा सब ऐसें सुनगि
रिनख के संधार्यौ ॥ बरषि मेघ दिन रेंनि प्रलय सम नेंकन
नी रनिवार्यौ ॥ २ ॥ सुरपति मान चढि देखि चक्रत भए चितनजे
चेत बिसार्यौ ॥ सूरदास सुरराज मुकट धरि चरणरेंनु सि
र धार्यौ ॥ ३ ॥ राग बिलावल ॥ घरनि घरनि प्रति होत बधाई
सात बरष को कुंवर कन्हैया गिरवरधर जीत्यौ सुरराई ॥ १ ॥
गर्व सहित आयौ ब्रज पूरन यह कहि मेरी भक्ति घटाई ॥ सा
त दिवस भरि बरषि सिरानौं तब आयौ पायन तर धाई ॥ २ ॥
कहा कहों नहि संकट मेंटत नर नारी सब करत बडाई ॥
सूरस्याम अब राख्यौ सब ब्रज ग्वाल करत सब कौंट दुहाई ॥
३ ॥ राग नट ॥ कौन राख्यौ गोवर्द्धन स्याम ॥ अति विस्तार अति हि
ऊंचौ बहुली उचकि कर जभुज बांम ॥ १ ॥ बडे प्रधान महापर
लय जल डर आवत मुख लीने नांम नौ केराखि लियौ ब्रज
सगरो ताकों तुमहि पठायौ धांम ॥ २ ॥ ब्रज अब तार लिष्यौ ज
बते तुम यह करत निस बासर जाम ॥ सूरस्याम बन घनहु
म कारन बहुत करत श्रम नाहि बिश्राम ॥ ३ ॥ राग नट ॥ राखि
लियौ ब्रज नंदकिसोर ॥ आयो इंद्र गर्व करि के चढि सात दि
वस बरखत भयौ भोर ॥ १ ॥ बांम भुजा गोवर्द्धन धार्यौ अति
कोमल नखहु की कोर ॥ गोपी ग्वाल गाय ब्रज राखे नेंक न
आई बूंद झकोर ॥ २ ॥ अमरापति तब चरण पर्यौ है जब बी
ते जुग गुनके ओर ॥ सूरस्याम ताको दियौ घर मांहि पुनि होरि
३ ॥ संपूर्ण लीला ॥ राग मलार ॥ आजु ब्रज महा घटनि घन घेर्यौ
राखि स्याम अब के इहि औसर सब चाहत मुख तेरो ॥ १ ॥ इत
नी सुनत जसोदानंदन गोवर्द्धन तन हेर्यौ ॥ लियौ उठाय बाम
कर गिरवर छिनि नेंप करि उखेर्यौ ॥ २ ॥ भय करि मेघ पठाये सु
रपति ब्रज ऊपर किये डेरौ ॥ महाप्रलय जल बरखन लागे
ढिंग गयौ दिवस अधेरौ ॥ ३ ॥ सात दिवस जल बरषि सिरानौ
हारि मानि मुख फेरौ ॥ सूर सहाइ करी निज भुजबल नंदन
आयो नेरौ ॥ ४ ॥ राग मलार ॥ देखो माई बार बार की बरि आई ॥ क
मलनेंन कर भार लिये है दंडूटी ठकुराई ॥ १ ॥ सूरख हंडनंद

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सोंमांगतनदेखतश्रकालिगवाई ॥ ठाकुरसोंसेवकसरवरकरैं
इहवाननपतिजाई ॥२॥ जाकेवोलवाहुवलवसियेंतासोंक
ह्यावडुराई ॥ सूरदासनितिहिवनकीकोंडुरजिहिवनसिंहकन्हाई
॥३॥ रागमलार ॥ देखियतरैऊघनउनये ॥ उतमेघवावसदूतभ
गतनवसदोऊप्रतिरोमभये ॥१॥ उतसुरचापकवापचंद्रद
तश्रमतदृष्टिचितये ॥ उतसेंनापतिवरपिमूसलद्रतनडि
नपटपीतनए ॥२॥ जुगलवीचगिरिराजविराजतकरतउ
ठायलए ॥ विचमरकतमनिविचिविद्रुमइकमनोंविचि
त्रठए ॥३॥ लुटतचरणतरसीसशक्रकाद्वैगुनगतिसमए
मनोंकनकपुरीपतिकेसिररघुपतिफेरिदये ॥४॥ वरख
तसुमनविमांनसुकरपरसुरनिजवासगए ॥ सूरदासगि
रधरककरूणामयइंद्रपापिपठए ॥५॥ रागसारंग ॥ यागो
कुलकोदेवतामेरोमोंहनलाल ॥ कमलनैनघनसांवरो
वपुवाहुविसाल ॥१॥ संगमिलिनिवसतहे ऐसेपसुपा
ल ॥ पूजेंसवसुखदेतहैंमेंटतउरसाल ॥२॥ वेगिकरोंमेरे
कहेंपकवांनरसाल ॥ वलिवांवावालिलेतहेंकरिकपि
गतिगाल ॥३॥ दिनदिनदूनीवाढिहेंगैयावछवाल ॥ सूर
दासडरपतरहेंजानेजगकाल ॥४॥ इतिश्रीभागवतेमहापु
राणेप्रथमस्कंधेषष्ठविंशतिमोध्यायः ॥२६॥ अथवडीगोवर्द्ध
नलीला ॥ रागविलावल ॥ नंदहिकहतिजसोदारांनी ॥ सुरप
तिपूजातुमविसुलानी ॥ यहनहीभलीतुम्हारीवांनी ॥ मेंयहू
काजरहेंसिपटानी ॥ लोभहिलोभरहेंहौंसानी ॥ देवकाजनें
कीसुधिविसरांनी ॥ महरिकहतिपुनिपुनियहवांनी ॥ पूजा
कोदिनयोहेंचेप्रांनी ॥ सूरदासजसुमतिकोवांनी ॥ नंदहि
षीझिषीझिपछितांनी ॥१॥ नंदकह्यौंसुधिभलीदिवाई ॥ मेंतो
राजकाजमनलाई ॥ नितप्रतिकरतइहेंअधमाई ॥ कुल
देवतासुरनिविसराई ॥ कंसदईयहलोकवडाई ॥ गोविंद
स्वसिरदारकहाई ॥ जलधिवूंदज्योंजलधिसमाई ॥ माया
जहांकीतहांविलाई ॥ सूरदासयहकहिनंदराई ॥ वरणतु
म्हारेसदासहाई ॥२॥ कहतनिमहरिनवश्रेसीवांनी ॥ इंद्रहि
कीदीनीरजधानी ॥ कंसकरततुम्हरीश्रतिकांनी ॥ यहप्र
भुकीहेंश्रासिरववांनी ॥ गोपनवहुतवडाईमांनी ॥ जहांत

सू.सा हांयह चलतकहांनी ॥ तुम घर मघियें सहसमथानी ॥ ग्वारि
८३ निरहतसदांविनतांनी ॥ तनउपजत बुनहीं के पांनी ॥ ऐसें
प्रभुकी सुरतिभुलानी ॥ सूरनंदमनमें तब आंनी ॥ सत्यक
ही तुम सेवक हांनी ॥ ३ ॥ महरि रियें एक ग्वाल बलाई ॥ गोपनें
ड़ पनंद बुलाई ॥ अरु आंन हु वृषभांन लिवाई ॥ तुरत जाइ
तुमकर हु चढाई ॥ यह सुनि ग्वाल गयो तहां धाई ॥ नंदमह
रिकी कही सुनाई ॥ नें वत्वरो अब जिन बिलमाई ॥ मोहि कें सो
सब देहु पठाई ॥ यह सुनि कें सब चले अतुराई ॥ मनमन सोच
करत पाछितांई ॥ कोंन काज जियमांझ डराई ॥ रानी अंसधन
रियों बलाई ॥ सूरनंद घर पौंहोचे आई ॥ आदर करि बैठे नंद
राई ॥ ४ ॥ गोप सबें उपनंद बुलाए ॥ कोंन काज कों हम हकरा
ए ॥ सुनत हीं हम सब आतुर आए ॥ सब मिलि कोंऊ बहुगउ
रयाए ॥ हसि हसि कहत आनंद बढाए ॥ यह कारज लगि तु
महि बुलाए ॥ सुरइंद्र पूजा बिसराए ॥ यह सुनतहीं सिरसब
नवाए ॥ ५ ॥ पूजा सुनत बहुत सुख लीनों ॥ इनहीं तें ब्रजवास
बसीनों ॥ हम सब अहीर जाति मति हीनों ॥ षांन पांन लोकि
क सुख पीनों ॥ सूरदास सगोपनकी बांनी ॥ ब्रजनर नारि स
वें यह जांनी ॥ ६ ॥ नंद घरनि ब्रज बधू बुलाई ॥ यह सुनि कें तु
रत हि सब आई ॥ बोले काज हमहि हकारी ॥ तुम नहि जां
नत जोबन वारी ॥ बिहसि कहति कहां रहे तहोंगारी ॥ सुरपति
पूजा करे वारी ॥ देखौं हम सब सुरति बिसारी ॥ औरों हमें
बूझियें गारी ॥ यह सुनि हरखित भई नंद नारी ॥ सखीयन ब
चन कह्यो जब प्यारी ॥ सुरन इंद्र पूजा अब सारी ॥ तुरत करी स
ब भोग सवारी ॥ ७ ॥ घरनि बुली सब ब्रक हि जसुमति सों ॥ देव म
नावत बचन विनय सों ॥ तुम बिनु और नाहि हम जांनें ॥ सुख
मुख अस्तुति करत बखांनें ॥ जहां तहां ब्रज मंगल गांनें ॥ बाज
त ढोल मृदंग निसांनें ॥ बहुत भांति करत पकवांनें ॥ नेवज
करि धरि सांझ बिहांने ॥ छुवत नहीं देव काज सकांने ॥ देव भो
ग कों रहत डराने ॥ सूरदास हम सुरपति जानें ॥ और कों न ए
सों जियमांनें ॥ ८ ॥ नंदमहरि घर होत बधाई ॥ करत सबे बिधि
देव पुजाई ॥ नेवज करत जसोदा आतुर ॥ अष्टहि सिद्धि घर
हि प्रतिचातुर ॥ मेंरा डुलत बकरिकें छांन्यों ॥ वेसन सागि चना

Shrimad Gokulnathji Maharaj

करि बान्यों ॥ घृत मिष्टांन सबैं परिपूरन ॥ मिश्री करत पाक कों चू
रण ॥ कटुवा करत मिठाई घृतपक ॥ रोहिनि करत अन्न भोजन
तक ॥ संग और ब्रजनारी लागी ॥ भोजन बनि सब धरत सभां
गी ॥ महरि करति रचि उपरत रारी ॥ जोरत सब विधि न्यारी न्या
री ॥ सूरदास जो मागत सब कहू ॥ भीतर ने लें देत हैं तब ही ॥ ८
महरि सबैं ने बज लें सैं नति ॥ स्याम छुवें कहु नातें डरपति ॥ का
न्हहि कहत इहां जिनि आवें ॥ लरिकन कों यह देव डरावें ॥
स्याम रहे आगें नाहि डराई ॥ मन मन कों कहु सत सुखदाई ॥
मैया री मोहि देव दिखैहैं ॥ इतनों भोजन उह सब खैहें ॥ यह सु
नि षीजति हैं नंदरांनी ॥ बारबार सुत कों बिरुझांनी ॥ ऐसी बा
त नहि कहों कन्हाई ॥ तुक कित करत स्याम लगराई ॥ कर जोरा
ति अपराध छमावति ॥ बालक कों यह दोष मिटावति ॥ सूर
दास प्रभु कों नहि जांनें ॥ सत चले मन नें को मानें ॥ १० जुव
ति कहत कान्हरि सपायों ॥ जांनि दे[illegible]काज बनायों ॥ बा
लक आय छुवें कहु भोजन ॥ उनकी पूजा जानें को जन ॥ यह क
हि देवता मनावति ॥ भोग सामग्री धरति जुठावति ॥ उनकी कृ
पा धाम धन मेरें ॥ उनकी कृपा गऊ घन घेरें ॥ उनकी कृपा पुत्र
फल पायो ॥ उनकी कृपा सुजस जग छायो ॥ सूरदास प्रभु अं
तरजांमी ॥ ब्रह्मा की स्त्रिष्टि के स्वामी ॥ ११ नंद निकट तब गए
कन्हाई ॥ सुनत जात तहां इंद्र पुजाई ॥ महरि नंद उपनंद तहां स
ब ॥ बोलि लिये वृषभान महरि तब ॥ दीपमालिका रचि मचि
साजत ॥ दीपमाल मंडली बिराजत ॥ बाषसान के कुवर क
न्हाई ॥ खेलत मन आनंद बढाई ॥ घर घर देत जुवति जन ह्याथा
पूजा देखि हसत ब्रजनाथा ॥ मो आगें सुरपति की पूजा ॥ मोतें औ
र देव नहि दूजा ॥ सत सत इंद्र रोम प्रति लोमनि ॥ सत लोमनि मे
रए करोमनि ॥ सूर स्याम ये मनसों बातनि ॥ लीनों भोग बहुत
दिन जांतनि ॥ १२ सुरपति पूजा जांनि कन्हाई ॥ बारंबार बूझति
नंदराई ॥ कोंन देव की करति पुजाई ॥ सो मोसों तुम कहों बुझाई ॥
महरि कह्यों तब कों न्हु सुनाई ॥ सुरपति सब देवन को राई ॥ तुम
रे हित में करत सदाई ॥ जाते तुम रहो कुसल कन्हाई ॥ सूर नंद
कहि भेद जनाई ॥ भीरं बहुत घर जाहु सिरवाई ॥ १३ जाहु घरहि
बलिहारी तेरी ॥ सेज जाय सोवहु तुम मेरी ॥ मैं आवति हों तुम सों पा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ सू.सा ॥ ८५

बें ॥ भवनजाहु तुममेरे बाछें ॥ गोपनलीनेकोंन्हबुलाई ॥ मंत्रक
ह्यौंएकसबनसुनाई ॥ आजुएकसुपनेंकोउआयो ॥ शंखचक्र
भुजचारिवनायो ॥ मोसोंयहकहिकहिसमुझायो ॥ यहपूजा
कोतुमहिंसिखायो ॥ सूरस्यांमकहिप्रगटसुनायो ॥ गिरिगो
वर्द्धनदेवबतायो ॥ २४ ॥ यहतबकहनलगेदेवराई ॥ इंद्रहिपू
जेंकोंनवडाई ॥ कोटिइंद्रमरंछिनमेंमारे ॥ छिनहींमेंपुनिव
हुरिसवारें ॥ जाजाकेपूजेंफलपावहु ॥ तारेंवहितुमभोगल
गावहु ॥ तुमआगेंउहभोजनषेहें ॥ मोहूंमांगोफलतुमकों
देहें ॥ ऐसोदेवप्रगटगोवर्द्धन ॥ जाकेपूजेंवाढिहेंगोधन ॥ म
मुफिपरीयहकैसीवांनी ॥ ग्वालकहीयहप्रकथकहांनी ॥
सूरस्यांमयहसपनोंपायो ॥ भोजनकोंनहिंदेवहिखायो ॥ २५
मानोंकह्योंस्यांमयहवांनी ॥ जोचाहोंब्रजकीरजधानी ॥ तो
तुममुहमांगेफलपावहु ॥ तौतुमअपनेंकरजिमांवहु ॥
भोजनसवखेहेंमुहमांगों ॥ पूजनसुरपतितनकेआगों ॥ म
रीकहीसत्यकरिमांनहु ॥ गोवर्द्धनकीपूजाठांनहु ॥ सूरस्यांम
कहिकहिसमझायो ॥ नंदगोपसवकेमनआयौं ॥ २६ ॥ सुर
पतिपूजामेटिकन्हाई ॥ गोवर्द्धनकीकरतपुजाई ॥ पारवरिना
लोंकरीमिठाई ॥ नंदमहरिघरकीठकुराई ॥ जाकेघरनौमह
रिजसोदा ॥ अष्टसिद्धिनवनिधिकोदा ॥ घृतपकवहुतभांति
पकवांन ॥ विंजनवहुकोकरेंवषांन ॥ भोगअन्नवहुभारस
जाई ॥ अपनेकुलसवअहीरबुलाई ॥ सहससकटभरिभरि
नमिठाई ॥ गोवर्द्धनकीकरतपुजाई ॥ सूरस्यांमयहपूजाठांनी
गिरिगोवर्द्धनकीरजधानी ॥ २७ ॥ ब्रजघरघरसवभोजनसा
जत ॥ सवकेद्वारवधाईवाजत ॥ सकटजोरिलेंचलेदेवबलि
गोकुलब्रजवासीसवहिलिमिलि ॥ दधिलोंनीमधुसाजिमि
ठाई ॥ कहांलगिकहूंसवेंवहुताई ॥ घरघरतेंपकवांनचला
ए ॥ निकासिगांवकेगोंडेआये ॥ ब्रजवासीनहांजुरेअपार ॥ सिं
धुसमांनपारनहिंवार ॥ पेंडेचलननहिंकोऊपावत ॥ सकट
भरेसवभोजनआवत ॥ सहससकटचलेनंदमहरिके ॥ औ
रसकटवितनेघरघरके ॥ सूरदासप्रभुमहिमासागर ॥ गोकु
लप्रगटेहैंहरिनागर ॥ २८ ॥ एकआवतंघरतेंमगधाय ॥ एक
जातफिरिघरहिसमाय ॥ एकरेरतएकटेरेंआवत ॥ एक

Shrimad Gokulnathji Maharaj

गिरावतएकउठावत॥एकवाहृतआवहुरेभाई॥वेंलरेतेंहंस
करतगिराई॥कोंनकाहृकोकोंसंभारें॥जहांतहांसवलोगपु
कारें॥कोऊगावतकोऊनिर्ततआवें॥स्यांमसखासंगखेलत
भावें॥सूरदासप्रभुसवकेनायक॥जोमनकरेंसोकरिवेला
यक॥१९॥साजिसिंगारचलीव्रजनारी॥जुवतिनभीरभईअ
तिभारी॥जगमगातअंगनप्रतिगहनों॥सवकोंभावररस
अतिलहनों॥येहिविधिदेवनकोंसवआई॥देखनएककटक
रूपकन्हाई॥येनहिजांनतदेवपुजाई॥केवलस्यांमहिसोंल
वलाई॥कोमाजानतकहांकोंवोलत॥नंदसुवननैनेचितनहि
डोलत॥सूरभजेंहरिजोजिहिभाव॥मिलततांहिप्रभुतिहीं
सुभाव॥२०॥नंदगोपडयरनंदगयेतहां॥गिरिगोवर्द्धनवडेदे
वजहां॥सिखरदेखिसवरीझेमनमन॥ग्वालकहींआजुही
आविरजवन॥अतिऊंचेगिरिराजविराजत॥कोटिमदननिर
खतछविलाजत॥पौहोंचेसकटनभरिभरिभाजन॥कोऊ
आयेकोऊनहींकहुंखोजन॥तिनकोंकान्हअहीरपठाए॥वि
लमकरहुमतितुरतवुलाए॥आवतमारगपाएतिनकों॥
आतुरह्वैवोलेनंदजिनकों॥तुरतलिवायतिनहितहांआए
मह्हरिमनअतिहरखवढाए॥सूरदासप्रभुतहांअधिका
री॥वूझतहेंपूजापदकारी॥२१॥आयजुरेसवव्रजकेवासी॥उ
रापरेकोसचेसोसी॥एकमिरतनकहूंठौरनपावें॥एतेपरआ
नंदवढावें॥कोऊकाहूसोवेंरनताकें॥वैठतमनजहांभावत
जाकें॥खेलतहसतकरतकोलाहल॥सुरेलोगजहांतहांअ
लाहल॥नंदकह्योसवभोगमगावहु॥अपअपनेसवलेंलें
आवहु॥भोगवहुतलखभानाहिघरकों॥कोककहिवरनेअति
हीमह्हरिकों॥सूरस्यांमजवआयसुदीनों॥विप्रवुलायनंदल
वलीनों॥२२॥तुरततहांतवविप्रवुलाए॥जग्यारंभनतहांक
राए॥स्यांमवेदधुनिकरतविप्रतहां॥देखतसुरविपकेअं
वरजहां॥सुरपतिपूजानहिमिटाई॥गिरिगोवर्द्धनतिल
कचढाई॥कांन्हकह्योगिरिदूधन्हवावहु॥वडोदेवताइनहिम
नावहु॥गोवर्द्धनदूधहिअन्हवाए॥देवराजकरिमांथनवा
ए॥नयोदेवताकांन्हपुजावत॥नरनारीसवदेखनआवत॥
सूरस्यांमगोवर्द्धनथाप्यौ॥इंद्रदेखिरिसकरितनकाप्यो॥२३

Shrimad Gokulnathji Maharaj

।।सू.सा देखिइंद्रमनगर्भबढायों।।व्रजलोगनिमोकोंबिसरायों।।अहिर
।।६५ जातिओछीमतिकीन्ही।।मेरीपूजागिरिकोंदीनी।।पूजनगिरि
हिकह्योमतिआई।।गिरिसमेतव्रजदेहुंवहाई।।देखोधोंकिननों
मुखपैहैं।।मेरेमारतकोहिमनेहैं।।पर्वतनंतवइनकोंकोराखत
बारंबारइहैंयोंभाखत।।पूजतगिरिप्रतिप्रेमबढायों।।सुपने
कोंमुखलेतमनायों।।सूरदासमुरपतिकीबांनी।।व्रजबोरों।
पारलयकेपांनी।।६४।।स्यांमकह्योंतुमभोजनल्यावहु।।गिरिआ
गेंसबआनिधरावहु।।सुनतनंदनह्यांग्वालबुलाए।।भोंगसांम
ग्रीसबेंमगाए।।खटरसकीबहुभांतिमिठाई।।अन्नभोगआति
हीअधिकाई।।विंजनबहुतनभांतिपरसाए।।चंदनहिसमपटल
रतेपाए।।दधिलवनीबहुमाटधराए।।दहींखराबहुतनहिंपरसा
ए।।अन्नकूटजैसोंगोवर्द्धन।।अरुपकवांनधरेबहुंकोदन।
परसेभोजनप्रातहिंतेसब।।रविमाथेंतेढरिआयोंतब।।गो
पनकह्योस्यांमयहांआवहु।।भोगधरोंसबगिरिहिंजिमावहु
सूरस्यांमआपुनहीभोगी।।आपुहिमायाआपुहिंजोगी।।स्य
कांन्हकह्योंनंदभोगधरावहु।।गोपमहरिउपनंदबुलावहु
नेंनमूंदिकरजोरिमनावहु।।प्रेमसहिततैनेवेदचढावहु।।
मनमेंनेंकखुटकजिनिल्यावहु।।दीनबचनमुखतेंजिनिभा
खहुं।।ऐसीविधिगिरिसनलहैहैं।।सहसभुजाधरिभोजनले
हैं।।सूरदासप्रभुआपुपुजावत।।यहमहिमाकोंकैसेंपावत
रहे।।स्यांमकहीसोईसबमांनी।।पूजाकीविधिअबहमजांनी
नेंनमूंदिकरजोरिमनाए।।भावभगतिसोंभोगलगाए।।स
हसभुजाधरिदरसनदीनों।।जेंजेंधुनितबदेवनकीनों।।भोज
नकरतसबनकेआगें।।सुरनरमुनिसबदेखनलागे।।देखि
प्यांकिनसबव्रजकीबाला।।देखतनंदगोपसबग्वाला।।सूर
स्यांमजननकेसुखदाई।।सहसभुजाधरिभोजनखाई।।६५।।
जेंवतदेखनंदसुखपाए।।कांन्हदेवताप्रगटदिखाए।।व्रजबा
सीगिरिदेखतदेखे।।जीवनजन्मसुफलकरिलेखे।।ललिता
कहतराधिकाआगें।।जेंवतकांन्हनंदकरलागे।।मेंजानीह
रिकीचतुराई।।सुरपतिमेटिआपुबलिखाई।।उनजेंवतइनबा
तनलागें।।कहतस्यांमगिरिजेंवनलागे।।मेंजोबातकहीसो
आई।।सहसभुजाधरिभोजनखाई।।औरदेवइनकीसरनांही

Shrimad Gokulnathji Maharaj

इतवोधतउनभोजनखाई॥ सूरदासप्रभुकीयहलीला॥ स
दाकरतब्रजमेंयहक्रीड़ा॥ २८ ॥ यहछबिदेखिराधेकाभू
ली॥ बातकहतनिसखियनसोंफूली॥ अपुहिदेखआपुपुजा
री॥ आपुहिजेंवतभोजनढेरी॥ अतिआतुरजेंवतहेंभारी॥
एकदूसरखभांनविलोवनहारी॥ नामनाहिवरसोंलानारी॥
ताकीवालिगईभुजापसारी॥ उनगिरिसंगखातेवलिसारी॥
वदरोलाकीवालिरुचिकारी॥ सूरदासप्रभुजेंवनवारी॥ गि
रिवपुरोसोकोंनकहारी॥ २९॥ इनहिस्यामगोपनसंगठाडे
भोजनकरतअघिकरुचिवाढे॥ गिरितनसोभास्यामविरा
जें॥ स्यामहिछविगिरवरकीछाजें॥ गिरवरउरहिपीतांवरसु
हें॥ मोतिनकीउरमालाभारें॥ अंगभूषणआभवणनिमनिकुं
डल॥ मोरमुकटसिरअलहेंकुंडल॥ छविनिरखतसबघो
षकुमारी॥ गोवर्द्धनछविस्यामनुसारी॥ सरसस्यामलीलारस
नायक॥ जन्मजन्मभक्तनसुखदायक॥ भोजनकरतदेख
भयेपरसन॥ मांगहुनंदतुम्हारेजोमन॥ भलीकरीतुममेरीपू
जा॥ सेवकतुमतेंऔरनदूजा॥ जोमांगोसोईफलहमदेहें॥ ज
हांभावतहांआपेंरहें॥ मैंसेवावसभयोतुम्हारे॥ जोफलचाहो
लेहुसवारे॥ यहसुनिचकितभयेनरनारी॥ भोजनकियोप्रथम
हीभारी॥ अवदेखहुमुखवातकहतहें॥ ऐसोदेवकहांत्रिभु
वनहें॥ कोंनहुवातकछुमांगहुइनसों॥ गिरिदेवतादेतपरस
नसों॥ सूरस्यामदेवताआपुहें॥ व्रजजनकेत्रैतापहरनहें॥ ३०॥
नंदकह्योंकहांमागोंस्वामी॥ तुमजानतसवअंतरजामी॥ अष्ट
सिद्धिनवनिधितुमदीनों॥ कृपासिंधुतुमराईकीनों॥ कुसल
रहेंवालिरांमकन्हाई॥ इनहीकारनकरतपुजाई॥ देवनकीम
णिगिरवरतुमहो॥ जहांतहांव्यापकपूरनहो॥ तुमहरतातुम
करतावरके॥ देखिपतितनरनारिनगरके॥ वडोदेवनास्यां
मवनायो॥ प्रगटभयेसवभोजनखायो॥ सूरस्यामकेजोमन
आवें॥ सोईसोईनानारूपवनावें॥ ३१॥ मांगिलेहुकछुऔर
पदारथ॥ सेवासवेंभईअवसारथ॥ फलमांग्योवालिरामक
न्हाई॥ येदोउरहेंकुसलसदाई॥ इनहीतेंतुमहमकोंजांनो॥
तवतुमगिरिगोवर्द्धनमांनो॥ करतकृपातुमदेहुपुजाई॥
मेरोदीनीहेंठकुराई॥ कोंनहुतुम्हारोमोकोंजांने॥ इनकोंसरि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू॰ योतुमसबमांनें ॥ इंद्रआयचरनिहूंनमऊपर ॥ पहुकहिहूंनहि
॥६६ राखोभूपर ॥ नेंकुकछुनहिंबासोंद्वेहैं ॥ स्यांमउठाइमोहितेवा
लेंहैं ॥ सूरस्यांमगिरिवरकीबांनी ॥ ब्रजजनसुनतसत्यकरिमां
नी ॥ ३३ ॥ कौतुकदेखतसुरनरभूले ॥ रोमरोमगाऊरसबफूले
सुरविमानसुमननिवरखायो ॥ जैधुनिसकलदेवमुनिगा
यो ॥ देववधूऔंब्रजवासिनसोंतब ॥ पूजाभलीकरीमेरीसब
जाहुसवेंमिलिसदननकरहुसुख ॥ स्यांमकहतगिरिगोवर्द्ध
नमुखग्वालकरतअस्तुतिसबठाढे ॥ भावप्रेमसबहीचित
बाढे ॥ भवनजाहुकहेंश्रीमुखवांनी ॥ भोजनशेषस्यांमकर
आंनी ॥ बांटिप्रसादसबनकोंदीनों ॥ ब्रजनरनारीआनंदकी
नों ॥ सूरस्यांमगोपनसुखकारी ॥ चलोकह्योंब्रजकोंनरनारी
॥ ३४ ॥ हेछकरजोरिभयेसबठाढे ॥ धन्यधन्यभक्तनकोंबाढे
तुमभुगतातुमहीप्रभुदाता ॥ अखिलब्रह्मांडलोककेज्ञाता
तुमकोंभोजनकोंनकरावें ॥ इनकेवसतुमकोंकोउपावें
तुमलायकहमरेकछुनांही ॥ सुनतस्यामठाढेमुसिकाही
ललितासखीदेखताचीन्हो ॥ चंद्रावलिराधेकहिदीन्हो ॥ देख
बडोंयहकुमरकन्हाई ॥ जगतजानिदृगिताहिचिन्हाई ॥ सूरस्यां
मकहिप्रगटसुनाई ॥ भक्तगोपतिभोजनवालिरवाई ॥ ३५ ॥ प
रसतचरणचलनसबघरकों ॥ जानचलेसबघोषमहरकों ॥
सुखसमेतसबजानचलेतब ॥ दूनीभीरभईतबतेंअब ॥ कोउआ
गेंकोउपाछेंआवत ॥ मारगमेंकहूंठौरनपावत ॥ प्रथमहिगए
गेंलतिनपाए ॥ पाछेंलोगमगमेंनसमाए ॥ घरपहुचेअबहीन
हिकोई ॥ मारगमेंअटकेसबलोई ॥ डेरापरेकोसचौरासी ॥ इतने
लोगजुरेब्रजवासी ॥ पेंडेचलननहींकोउपावत ॥ केतिकदूरि
ब्रजपूछतआवत ॥ सूरस्यांमगुनसागरनागर ॥ नौतनलियें
कीयेउजागर ॥ ३६ ॥ कोउपोहोंचेकोऊमारगमाही ॥ बहुतग
येघरबहुतेंजाई ॥ आनंदकरतसवेंब्रजआये ॥ निकटआइ
लोगनिनियराए ॥ सूरस्यांमआनंदरसाला ॥ पोहोंचेघरन
आयनंदलाला ॥ ३७ ॥ बडोदेवताकोंनृपुजायो ॥ ग्वालगोप
हरखिअंकमलायो ॥ कांन्हधनिधनिजसोमतिजायो ॥ ब्रजध
निधनितुमनेकहवायो ॥ धन्यनंदतुमजिनसुतपाए ॥ धनि
धनिदेवप्रगटदरसाए ॥ कहांइंद्रबपुरोंकेहिलायक ॥ गि

Shrimad Gokulnathji Maharaj

प्रिदेवतासवहिनकेनायक॥ सूरदासप्रभुकेगुनऐसे॥ भक्तन
वसहसूनकौनैसे॥ ४८॥ हरिसवकेमनयहउपजाई॥ सुरपति
निंदतिगिरिहिबडाई॥ पूजतरहेवृथाहमसुरपति॥ सवसुख
यहवांनीघरनीप्रति॥ वडोस्वयहगिरिगोवर्द्धन॥ यहेंकहत
गोकुलव्रजपुरजन॥ तहांदूतएकइद्रपठायो॥ व्रजकोसुखदे
खनउहआयो॥ घरघरकहतवाननरनारी॥ दूतसुन्योसोश्रव
नपसारी॥ मानतिगिरिनिंदतिसुरपतिको॥ हसतलोगसव
व्रजवासिनको॥ सूरसुनतदूतनरिसपायो॥ उठितुरतहिसुर
लोककहिआयो॥ ४९॥ ब्रह्मदईजाकोठकुराई॥ त्रिदसकोटिदे
वनकोराई॥ गिरिपूज्योतिनकोविसराई॥ अहिरजातिइनके
मनआई॥ सिवविरंचिजाकोकहेंनायव॥ जाकेंहमघवासे
पायव॥ यहकहतहिआएसुरलोकहि॥ पौहेवेआयदइकेओ
कहि॥ दूतनवैसीजायसुनाई॥ वैठेजहांसुरनिकराई॥ करजोरें
सनमुखभयेआई॥ पूछिउठ्योव्रजकीकुसलाई॥ दूतनव्रज
कीवातसुनाई॥ तुमहिमेंटिपूज्योगिरिजाई॥ तुमहिनिदरि
गिरवरहवडाई॥ यहसुनतहिरिसहकपाई॥ सूरस्यामयह
वुद्धिउपाई॥ ५०॥ ग्वालनमोसोंकरीढि
ठाई॥ मोकोंअपुनीजातिसिखाई॥ तेतीसकोटिसुरनकोरा
ई॥ तितंहूंभुवनभरिचलतवडाई॥ इनअपनीपरतीतिघटाई॥
मेरेवैरवाचिहेंभाई॥ नईरीतिइनअववहिचलाई॥ काहूइनहि
दियोंवहकाई॥ ऐसीमतिइनअववकेपाई॥ काकेसरणरहेंगे
जाई॥ इनसैनीमोकोंविसराई॥ नंदआपुनीप्रकृतिगवाई॥
जोंनीवातवुढईआई॥ अहिरजातिकोइनहिपत्याई॥ मांत
पितानहिमांनहिभाई॥ जानिवूझिइनकरीढिठाई॥ मेरीवलि
पर्वतहिचढाई॥ अवकाकीजेंहेंसरनाई॥ सूरदाससुरपति
रिसपाई॥ म्योपतंगदीपकढिगजाई॥ ५१॥ मोकोंनिदरिपर
वतहिवंदत॥ वालकपरपंछीज्योंफंदत॥ मरणकालऐ
सीवुद्धिहोई॥ कछुकरतकछुवेउहजोई॥ खेलतखातरहे
व्रजभीतर॥ नान्हेलोगतनकधनईतर॥ समयसमयवार
संप्रतिपालों॥ इनकीवुद्धिइनकोंअववालों॥ मेरेमारतकों
नराषिहें॥ अहीरनकेमनयहेंकोंषिहें॥ जोमनजावेंसोफ
लपावें॥ नीवलगायआबकोखावें॥ सूरदासयहसवको

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥सू.सा ऋजांनें॥तोज्ञाकोंसोताकोंमांनें॥४४॥पर्वतपहलेंहिखोदिव
॥९१ हूंउ॥वज्रमारिपातालपठाउं॥फूलिफूलिजिहिपूजाकीनों
नेंकुनराखोंताकोंचीन्हों नंदगोपनेंननयहदेखें॥वडोदेव
ताकोंमुखपेखें॥निसदिनमोहिकरीगिरिपूजा॥जासोंकहत
औरनहिदूजा॥गर्वकरतगोवर्द्धनगिरिकों॥पर्वतमांझ
आहिडुरिहिकिनकों॥राखौंनहींकहूंसवमारों॥व्रजवासिन
कोंखोजनिवारों॥सूरदासयहइंद्रप्रतिज्ञा॥व्रजवासीनस
वकरीअवज्ञा॥४५॥सुरपतिक्रोधकियोंअतिभारी॥फरक
तअधरनेंनरतनारी॥दूतवुलाएदेहेंगारी॥मेघनल्यावहु
तुरतहकारी॥मेघवर्त्तजलवर्त्तवुलावहु॥सेंनासाजितुर
तलेंआवहुं॥कापरक्रोधकियोंअमरापति॥महाप्रलय
जियजांनिडरेअति॥मेघनसोंयहवातसुनाई॥तुरतचले
वोलेसुरराई॥सेंनासाजिवुलाएतुमकों॥रिसकरितुरतप
ठाएहमकों॥वेगिचलोंकछुविलमलांवहुं॥हमहिक
होंअवहीलेंआवहुं॥मेघवर्त्तसवसेंनवुलाए॥महाप्रल
यकेनेसवआए॥कछुहमकोंछमनाहिसकानें॥प्रलय
आहिकीहमहिरिसानें॥वोलतचलेआपुनीवांनी॥सुरप
तिसन्मुखपौहैवेवांनी॥गरजिगरजिघहरातहिआए॥दे
वदेवकीहिमापठवाए॥सूरदाससवडरपतजलधर॥ह
मपरक्रोधकियोंकाहूपर॥४६॥चितवतनहींसवगयेसुराई
सकुचिरहेसोंकापररिसराई॥छिमाकरहुआयुसहमपावें
जापरकहोंतापरधावें॥सेंनसाहितप्रभुहमहिवुलाए॥
आगपासुनतसुरतउठिधाए॥ऐसोंकोंनजाहितुमकोपें॥
जीवनांमसवतुमरेरोपें॥सरकहीयहमेघनवांनी॥पहसुनि
मुनिरिसकछुकवूझांनी॥४७॥मेघनसोंवोलेसुरराई॥अ
हीरनमोसोंकरीढिठाई॥मेरीरीनीकरतवडाई॥जांनिवूझि
मोहिदियोभुलाई॥सराकरनमेरीसिवकाई॥अवसेवनप
वेतकोंजाई॥यहीकाजतुमकोंहकरायो॥भलीकरीसेंना
लेंआयों॥गायगोपसैव्रजमेंवहावहु॥पहलेंपर्वतखोदि
वहावहुं॥जवयहसुनाइइंद्रकीवांनी॥मेघनकेमनधीरजआ
नी॥सूरदासयहसुनिघनतमके॥कापरक्रोधकरतप्रभुज
मके॥४८॥रिसलायकतापररिसकीजें॥जिहिरिसतेंप्रभुदे

Shrimad Gokulnathji Maharaj

हीछीजें ॥ तुमप्रभुहमसेसेसेवकजाके ॥ ऐसोकोंनरहतनुम
नावे ॥ छिनहीमेंव्रजधोयवहावें ॥ पर्वतकोंनहिनामवचावें
आपुछमाकरियेंदेवराई ॥ हमकरिहेंउनकीपोहोंनाई ॥ य
हसुनिकेंहरखितचितकीनों ॥ आदरसहितपांनकरदीनों
प्रथमाहिदेहुपहारवहाई ॥ मेरीवलिसवउनहीखाई ॥ सुर
इंद्रमेघनसमुझावत ॥ हरषिचलेघनआदरपावत ॥ ५७ ॥
आयुसपायतुरतहीधाए ॥ अपुनीसेनासवनवुलाए ॥ कहीं
सवनिव्रजऊपरधावहुं ॥ घटाजोरिकेंगगनछिपावहुं ॥ मे
घवर्त्तजलवर्त्तकआगें ॥ औरमेघसवपाछेंलागें ॥ गरजि
उठेव्रजऊपरजाई ॥ सवाकियोंआघातसुनाई ॥ व्रजकेलोग
डरेअतिभारी ॥ आजुघटादेखियतहेंकारी ॥ देखतदेखतअ
तिअधिकायों ॥ नेकुहीमेंरविगगनछिपायों ॥ ऐसेमेघक
वहूंनहिदेखे ॥ अतिकारेकाजरअवरेखे ॥ सुनहुसूरयेमेघ
डरावन ॥ व्रजवासीसवकहतभयावन ॥ ५८ ॥ गरजिगरजि
व्रजघेरतआवें ॥ तरपितरपिचपलाचमकावें ॥ नरनारीसव
देखतठाये ॥ येवादरपरलयकेआये ॥ दरदरातघहरातअ
वलअति ॥ गोपीग्वालभयेभोरेगति ॥ कहांहोंनअववहीय
हवाहत ॥ जहांतहांलोंगहहअवगाहत ॥ सनभीतरसवनवा
हिरआवत ॥ गगनदेविधीरजविसरावत ॥ सूरस्यामयह
करीपुजाई ॥ तातेंसुरपतिवढ्योरिसाई ॥ ५९ ॥ फिरतलोगज
हांतहांविततानें ॥ कोंहंअपुनेकोंनविरानें ॥ ग्वालगयेजेधे
नुचरावन ॥ तिनहीपहोंवनमाहिपरावन ॥ गायवछकों
ऊनाहिसभारें ॥ प्रलयकालकेजलधिनिहारें ॥ भागेआवत
व्रजहीतनकों ॥ विपतिपरीअतिविनग्वालेनकों ॥ अंधधुं
धतमकहूंनसूझें ॥ व्रजभीतरव्रजहीकोंवूझें ॥ जेसेतेसेंव्र
जहिपहचानत ॥ अटकिरहीअटकेंरकरिजांनत ॥ खोज
नफिरेंआपुनेघरकों ॥ कहांभयोंयहघोषसहरकों ॥ रोव
तडोलेंघरनहिपावें ॥ घरद्वारेघरकोंविसरावें ॥ सूरस्यांम
सुरपतिविसरायों ॥ गिरिकेपूजेंयहफलपायों ॥ ६० ॥ जमुना
जलहीगईजेनारी ॥ डगिचलीसिरगागरिभारी ॥ देखोमेंवा
लककेंहांछाड्यो ॥ एककहतआंगनदधिमांड्यो ॥ एककह
तिमारगनहिपावत ॥ एकसामुहेंवोलवुलावत ॥ व्रजवा

Shrimad Gokulnathji Maharaj

सू.सा. सीसकपंति अकुलाने ॥ कालिहि पूज्यौं फलेविहाने ॥ कह्यौ र
९८ ह्यौ अब कुमर कन्हाई ॥ गिरि गोवर्द्धन लेहि बुलाई ॥ जेवन सह
स भुजा धरि आवें ॥ अब उह भुजा हम कों दिखरावे ॥ सूरस्याम
सुपनो प्रगटायो ॥ घर कों देव सब न बिसरायो ॥ ५२ ॥ गरज
त घन अति ही घहरावत ॥ कांन्ह सुनत आनंद बढावत ॥ कौ
तुक देखत ब्रजलोगन के ॥ निकट रहत संग ही संगा जिनके
एक सेंन ति सब घर के बासन ॥ लीनें फिरत घर ही के पास
न ॥ एक कहत जिय की नहि आसा ॥ देखत सबें इंद्र के नासा ॥ सू
रस्याम जांनत यह गासा ॥ कहा पानी कों करें हु तासा ॥ ५२ ॥ मे
घ वर्त मेघ नहि बतावत ॥ वारवार गिरि तिनहि दिखावत
तुरत ही देह प्रह्यौ खवहाई ॥ नाव रहें नहि ठौर जनाई ॥ सूरप
ति की बलि इन सब खाई ॥ ताकों फल पावें गिरिराई ॥ जेंव
त कालिह अधिक रुचि पाई ॥ सलिल देहु ब्रज बिथा बुझाई ॥
दिना चारि रहत जग ऊपर ॥ अबन रहत पावेंगे भूपर ॥ सूर
मेघ सुरपति हि पठायो ॥ ब्रज पर प्रलय करन कों आयो ॥ ५३
ब्रजबासी सब कों न्हवतावत ॥ महाप्रलय जल गिरिहि दि
ढावत ॥ झहरान झर पत झर लावत ॥ गिरिहि धोय ब्रजऊपर
आवत ॥ बिकल देखि गोकुल के बासी ॥ दरसारियों सब कों
अविनासी ॥ अविनासी कों दरसन पाये ॥ तब सब मन प र
तीति कराए ॥ नंदमहर सों सुत हि तजानें ॥ औरसबें मुख अ
स्तुति गाने ॥ बरखत गिरि झरयत ब्रजऊपर ॥ सो जल जहां न
हां ब्रज भूपर ॥ सूरदास प्रभु राखि लेहु अब ॥ जैसें राखे अघा
व दन तब ॥ ५४ ॥ राखि लेहु अब नंदकुमार ॥ गोसुत गाय पि
रत बिकरार ॥ बरषत बूंद लगत जनु सायक ॥ राखि लेहु ब्र
ज गोकुल नायक ॥ तुम बिनु कोंन सहाय हमारें ॥ नंदसुवन
अब सरन तुम्हारें ॥ सरन सरन जब ब्रजजन बोले ॥ धीरबच
न देंह दय बोले ॥ यह बोले हंसि कृष्ण मुरारी ॥ गिरि कर धरि
राखे नरनारी ॥ सूरस्याम चितयो गिरिवर नन ॥ बिकल देखि
नरनारी गोमन ॥ ५५ ॥ गोवर्द्धन लीनें उचकाई ॥ देखि बिक
ल नरनारि कन्हाई ॥ अपने सुख ब्रजजन बितताए ॥ नंद क
छुक ब्रज पर बरषाए ॥ बेडर पत आपुन हरखत मन ॥ राखि
रहे जहां तहां ब्रज के जन ॥ घरी क देखि मन दी सुख दीनों ॥ बां

Shrimad Gokulnathji Maharaj

मभुजागिरिवरकरलीनों ॥ सूरस्यांमगिरिकरजबराष्यौं ॥ धी
रधीरसबसोंकछिभाष्यौं ॥ ५६ ॥ स्यांमधर्यौंगिरिगोवर्द्धनकर ॥
राखिलीयेब्रजकेनारीनर ॥ गोकुलब्रजराष्यौसबघरघर ॥ आ
नंदकरतसबैंताहीनर ॥ बरखतमूसलधारमेघवर ॥ बूंदन
आवततनैंकनभूपर ॥ धारअखंडितबरखतहेंझर ॥ कहतमेघधौं
बहुब्रजगिरिवर ॥ सलिलप्रलयकोढूंढततेरतरं ॥ कनतसर्
वाहरकोंधरधर ॥ बैजानतजलजोतहेंररर ॥ बीचाछिजरत
जातजलअंबर ॥ सूरदासप्रभुकोंनहगवेंहर ॥ बरखतकहत
गयोंगिरिकोंजर ॥ ५७ ॥ बोलिलियेसबग्वालकन्हाई ॥ टेकहु
गिरिगोवर्द्धनराई ॥ आजुसबैंमिलिहोउसहाई ॥ हसनदेखत
बलिरांमकन्हाई ॥ लकुटलियेंकरटेकनजाई ॥ कहतपरस्प
रलेहुउठाई ॥ बरखतइंद्रमहाझरलाई ॥ अतिजलदेषैंसखा
उरपाई ॥ नंदनंदनबिनुकोगिरिधारें ॥ ऐसेंबलबिनुकोंन
सभारें ॥ नखतेंगिरिहिकोंनपुनिराखें ॥ सबेंवारकहिकहिय
हभाखें ॥ सूरस्यांमगिरवरकरलीनों ॥ बरखतमेघचक्रितमन
नकीनों ॥ ५८ ॥ बातकहतआपुसमेंवारर ॥ बरखेवरखेमन
भएअतिकारर ॥ खीजतकहतमेघसबहीसों ॥ बरषिकहां
कीनोंतबहीसों ॥ महाप्रलयकोंजलकहांराखत ॥ डारिदेहु
ब्रजपरकहंतांकत ॥ क्रोधसहितफिरिबरखनलागे ॥ ब्रज
बासीआनंदअनुरागे ॥ ग्वालकहतनतुमधन्यकन्हैया ॥ बाम
भुजागिरिलियोउठैया ॥ सूरस्यांमतुमसरकोउनाही ॥ बरस
तघनगिरिदृष्टिबिसाही ॥ ५९ ॥ प्रलयमेघआएलैंबाने ॥ आ
पुसहीमेंसबैरिमाने ॥ सातदिवसजलबरषिसिराने ॥ महाप्र
लयकेसबहिठुराने ॥ बरखिबरखिवारदविततानें ॥ बूंदएकन
हिघनहिवचाने ॥ जलअआपुकोंधृगकरिमानें ॥ फिरिसबचले
अतिहिबिकलाने ॥ सूरस्यांमगोवर्द्धनरानें ॥ मूढइंद्रअजहूंन
हिजानें ॥ ६० ॥ मेघचलेमुखफेरिअमरपुर ॥ करीपुकारजायअ
गेंसुर ॥ अमतेंटूटिगयेसबकेउर ॥ अतिडरतेसबआगगयेफु
रि ॥ जहांतहांवादरोवतबोले ॥ अमअपनोंइंद्रआगेंषोले
सातदिवसनहीमिटीलमार ॥ बरख्यौसलिलअखंडितधार
महाप्रलयजलनेंकुनउबर्यौ ॥ ब्रजवासीनकेंश्रवनिरख्यौं
सरसुनतसुरपतिहिउदासी ॥ देखहुफिरिआएजलरासी ॥ ६१

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ सू०सा चकृत भए ब्रजवात सुनाई ॥ पुनि पुनि पूछत मेघ बुलाई ॥ कहौ क
॥ ९९ ह्यौं अपनों बल खीनों ॥ व्याकुल होय रोयत व दीनों ॥ ह्यौं एक बर
खेलो लाई ॥ पूरण होन गगन लो आई ॥ पर्वत में कोउ है अवतार
सुरपति मन यह कारन विचार ॥ सूर इंद्र सुरगण ह्यां करए ॥ आप
सुनत तुरत सब आए ॥ ९२ ॥ सुरपति आगें भये सब ठाढे ॥ चिंता स
बहिन के मन बाढे ॥ कौन काज सुरराज बुलाए ॥ सकुच सहित
पूछन सब आए ॥ कहा करूं कछु कहत न आवे ॥ मघवनि
की गति सुरनि बतावे ॥ ब्रजवासी मोकों विसरायो ॥ भोजन ले
सब गिरिहि चढायो ॥ मोकों मेटि पर्वत तिहि पायो ॥ तब मैं घर
परायसि कोप्यो ॥ सूरदास यह सुरनि सुनाई ॥ ता काज तुम
लिये बुलाई ॥ ९३ ॥ सुरनि कही सुरपति के आगें ॥ मन सुख होन
सकुच मोहि लागें ॥ नीकी भांति सुनो सुरराई ॥ ब्रजों प्रगट ब्र
ह्म भए आई ॥ तुम जानन सब धरनि पुकारी ॥ पापहि पाप भई
अति भारी ॥ पोर्ढें छोड संग आयौ प्यारी ॥ ते ब्रज [illegible] नर है वपु धारी ॥
ब्रह्म कृपा करि हि आदि पसारी ॥ तिन मोहि भ्रम कीने अधिकारी ॥
सूरदास प्रभु गिरिकरधारी ॥ यह सुनि इंद्र डरयौ मन भारी ॥ ९४
यह मोकों पहलें न सुनाई ॥ सुरराज हम जानन पाई ॥ अब सु
नियें आपुन मन लाई ॥ ब्रज [illegible] चलौं नहि और उपाई ॥ वेहैं कृपा
सिंधु करुणाकर ॥ [illegible] कराहिंगे श्री सुंदरवर ॥ और कछु म
न में जिनि आनहु ॥ हम जो कहें सत्य करि मानहु ॥ सुरसुरनि य
ह बात सुनाई ॥ सुरपति सरन चल्यो अकुलाई ॥ ९५ ॥ जब जान्यो
ब्रजदेव मुरारी ॥ उतरि गई तब गर्भ खुमारी ॥ व्याकुल भयो उ
ह्योजि पभारी ॥ अनजानत कीनी अधिकारी ॥ बैठि रहे ते नहि
बनि आवें ॥ ऐसो को अब मोहि बचावें ॥ जाय परों चरननि सि
र धारों ॥ के मारों के मोहि उबारों ॥ अमरनि कह्यौ करो असवारी
ऐरापति को ले हुहुंकारी ॥ सूर सरन सुरपति चल्यो धाई ॥ लि
ये अमरगण संग लगाई ॥ ९६ ॥ करत विचार चल्यो मन सुरव
ज ॥ लटपटात पग धरत धरनि गज ॥ कोटि इंद्र जाके रोमनि
ह्ज ॥ ब्रज ओनारलियो माया तज ॥ उतरि गगन पो होमी पर आ
आये ॥ ब्रजवासी सब देखन धाए ॥ चकृत भए मन सबन भ्रमा
ए ॥ एधों कौन कहांते आए ॥ देखि सेन ब्रज लोग सकान ॥ यह
आयो कीने कछु घान ॥ सुरपति सेन साजि ब्रज आयो ॥ सूरस्या

Shrimad Gokulnathji Maharaj

मकौंजायसुनायौ॥४७॥निकरजायत्यागौंवाहूनकौं॥व्रजवाहि
राखौंनाहूनकौं॥सकुचतचल्यौंकृष्णकेसनमुख॥कछुआ
नंदनकछुकमनमेंदुख॥पर्यौंजायचरननसुरराई॥कृपासिं
धुराखहुसरनाई॥कियेअपराधवहुतनिजमांने॥प्रभुउठा
यलेंहसिमुसिकानें॥श्रीमुखकहेंउठहुसुरराजा॥वरनउठा
यसकुतनाहिलाजा॥पैरिनवहआगएवेकाजा॥तुमकोंनहि
जान्योंव्रजराजा॥सूरस्यामलीनेउरलाई॥असरनसरननि
गमयहगाई॥४८॥हसिहसिकहतकृष्णमुखवांनी॥हमनां
हीरिसतुमपरआंनी॥तुमकितअतिसंकाजियजांनी॥भली
करीव्रजवरख्योंपानी॥यहसुनिइंद्रअतिहीसकुचान्यों॥व्र
जअओतारनहीमेंजांन्यो॥राखिराखित्रिभुवनकेनाथ॥नहि
मोतेकोऊऔरअनाथ॥फिरिफिरिचरणधरतलेमाथ॥छ
माकरहुमोहिराखहुसाथ॥रविआगेंखद्योतप्रकास॥मणि
आगेंज्योंदीपकनास॥कोटिइंद्ररविकोटिविनास॥मोगरि
बकीकेतिकआस॥अमरापतिचरणनतरलोरत॥रहीन
हीउरमेंकछुखोटक॥उभयभुजासोंलिपोंउठाई॥सुरपति
सीसअभैकरनाई॥हसिरीनेप्रभुकरेबडाई॥श्रीमुखकह्यों
करहुसुखजाई॥जेंजेंधुनिवनमुखगाई॥धन्यधन्यजनके
सुखदाई॥असरनसरनसदातुमवांनो॥यहलीलाप्रभुतुमही
जांनो॥धनिव्रजधनिगोकुलवृंदावन॥धनियमुनाधनिल
ताकुंजघन॥धनिनंदधनिजननिजसोदा॥वालिकेलिहरि
केरसमोदा॥अस्तुतिसुनिमनहरखवढायो॥साधुसाधुक
हिसुरनसुनायो॥आवतजानवहुतश्रमपायो॥जाहुभवन
करिकृपापठायो॥सूरदाससुरपतिअतिहरष्यौं॥गयोलो
कसुमननिव्रजवरष्यो॥४९॥हरिकरतेगिरिराजउतार्‍यौं॥
मानरिवसजलप्रलयसभार्‍यौं॥हमहिमिलेतुमगायच
रावत॥नंदजसोदासुवनकहावत॥देखिरहीसवगोपकुमा
री॥कोटिकांमछविपरवलिहारी॥करजोरतरविगोरपसा
रें॥गिरधरपतितोंहोयहमारे॥तनकतनकभुजतनककन्हा
ई॥यहकहिउठीजसोदामाई॥यहलीलाइनकोंअतिभावें॥
देहधरेंपुनिपुनिप्रगटावें॥नेंकुनजततनहीव्रजनरनारी॥द
नकेसुखगिरिधरनमुरारी॥गर्ववंतसुरपतिचढिआए॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj

॥ भा.सा ॥ वाएकरगिरिटेकिउठाए ॥ यह लीला जो नित प्रति गावें ॥ आपु
॥ २०० ॥ न सीखें औरसिखावें ॥ चतुरानन जाके जस गानें ॥ शेष सहस
मुख जाहि बखांनें ॥ आदि अंत कोउ नहि पावें ॥ ताकों निगम ने
त नित गावें ॥ सूरदास प्रभु सब के स्वामी ॥ सरण राखि मोहि अं
तरजामी ॥ ७ ॥ रा ॥ म ॥ ला ॥ र ॥ सुरभी कह्यो कृष्ण सों वांनी ॥ तुम ह
म करें अनाथ सनाथ हि इंद्र हमारे जांनी ॥ १ ॥ विधि आज्ञा ते
इंद्र जग पकरी हमरे पती कहायो ॥ हरिने लें ग्राग्वा अपुने पय
तहां तुरत न्हवायो ॥ २ ॥ तब ऐरापति निज सुंडन में नभ गंगा
जल ल्यायो ॥ इंद्र नवहिं न्हवाइ प्रीतिसों गोविंद नाम धरायो ॥
३ ॥ सुरमुनि जै जै भाखि कुसम लें वरखा बहुत कराई ॥ नाचि अ
पछरा मंगल गावें अस्तुति इंद्र सुनाई ॥ ४ ॥ हरि प्रसन्न ह्वे कही
इंद्र सों अब निज लोक सिधावो ॥ अब ऐसी कबहूं मति करियो
भय कछु मन में नहिं ल्यावो ॥ ५ ॥ करि परिक्रमा गयो लोक कों
हरि कौतुक यह कीनों ॥ सूरदास गुण गावे अहर्निस सुफल
जन्म करि लीनों ॥ ६ ॥ इति श्री भागवते महापुराणे दशम स्कंधे स
प्तविंसतितमोध्यायः ॥ २७ ॥ अथ वरुण लोक गमन
राग सारंग ॥ उत्तम शुक्ल एकादशी आई ॥ विधि व्रत नंद न कीनों नं
दराई ॥ १ ॥ निराहार जल पान विवर्जित ॥ पाप रहित फल धर्म
हि अर्जित ॥ २ ॥ नारायण हिं तन ध्यान लगायो ॥ औरन ही कहूं म
न विरमायो ॥ ३ ॥ वासर ध्यान करत सब वीत्यो ॥ निसि जागरन
करन मन दीन्यो ॥ ४ ॥ दिव्य पटंबर मंदिर छायो ॥ चौकार्ई वंदा
की बनायो ॥ ५ ॥ सालिग्राम तहां बेठायो ॥ धूप दीप नैवेद्य चढायो ॥
६ ॥ प्रेम सहित करि भोग लगायो ॥ आरति करि तब माथ नवायो ॥
७ ॥ आदर सहित न करी तब पूजा ॥ तुम तजि देव नाहि कोउ दूजा ॥ ८
॥ तीय पहर जब रैनि गवाई ॥ नंद महरि सों कह्यो बुलाई ॥ ९ ॥ ए
क दंड द्वादसी सकारें ॥ पारन की विधि करो सवारें ॥ १० ॥ यह कहि
नंद गए जमुना तट ॥ लें धोती झारी विधि करम य ॥ ११ ॥ झारी भरि
जमुना जल लीनों ॥ बाहिर जाय रेह छक न कीनों ॥ १२ ॥ लई मृत
का चरण पखारे ॥ अति उत्तम विधि करी मुखारी ॥ १३ ॥ अब व
न लें पेठे नंद पांनी ॥ जल वाजत दूनि नस नवजांनी ॥ १४ ॥ नंद वां
धि लें मये पताल हि ॥ वरुण पास ल्याए तत काल हि ॥ १५ ॥ जा
नौं वरुण ताहि कृष्ण को नात ॥ मन ही मन हरखे न यां भांत ॥ १६ ॥

Shrimad Gokulnathji Maharaj

भीतरलैंराखेनंदस्त्रीकैं॥अंतहपुरमहलनिरानीके॥१७॥रानी
सबनिनंदकोंदेख्यो॥धन्यजन्मअपनोंकरिलेख्यो॥१८॥श्रीहरिकों
सुतत्रैलोकसुसाई॥सुरनरमुनिसबहीकेसाई॥१९॥बरुणक
ह्योमनदुखबढायो॥बडीबातभईनंदहिल्याए॥२०॥अंतरा
जामीजानीबात॥आपुनआवतहैंजगतात॥२१॥जाकोंब्रह्मा
अंतनपायो॥जाकोंमुनिजनध्यानलगायो॥२२॥जाकोंनेति
निगमगावतहैं॥जाकोंमुनिवरमनध्यावतहैं॥२३॥जाकोंध्या
नधरेंसिवजोगी॥जाकोंसेवतसुरपतिभोगी॥२४॥जोप्रभुहै
जलथलमेंव्यापक॥सोहैंकंसगरबकोदाहक॥२५॥सोव्र
जमेंखेलतसुखरासी॥गुणअतीतअविगतिअविनासी॥२
६॥धनिमेरेभतनंदहिल्याए॥करुणामयअबआवतधाए
२७॥महरिकहीतबहीग्वालनकों॥बडीबारभईनंदमहरि
कों॥२८॥गएग्वारतबनंदबुलावन॥देखेजायजमुनजल
पावन॥२९॥जहांतहांग्वालढूंढिघरआए॥धोतीअरुझारीलै
ल्याए॥३०॥मनमनसोचकरेंअकुलाए॥कहेंजसोदानंदन
पाए॥३१॥धोतीझारीतटमेंपाई॥सुनतमहरिसुखगईझुराई
३२॥निसांअकेलीआजुसिधाए॥काहूजलेचरधरिखाए॥३३
यहकहिजसुमतिरोइपुकार्यो॥मेंबरजतकितरैनिपधा
र्यो॥३४॥ब्रजजनलोगसबेउठिधाए॥जमुनाकेतटकहूंन
पाये॥३५॥बनबनढूंढतगाउमझारी॥नंदनंदकहिलोगपुका
री॥३६॥खेलतहेंहरिहलधरआए॥रोवतमातदेखिदुखपाए
३७॥कितहरीबतजसोदामैया॥पूछतजननीसोंदोउभैया॥३८
कहेंस्यांमजिनिरोवहुमाता॥अबहीआवतहैंनंदताता॥
३९॥मोसोंकहिगयेअबहीआवन॥रोवहुजिनमेंजातबुला
वन॥४०॥सबकेअंतरजामीहैंहरि॥लेंगयेबरुणबांधिनं
दहिधरि॥४१॥यहकारजतुमकोंहमदीनो॥वाकेदूतनंद
हीचीनो॥४२॥बरुणलोकतबप्रभुजूआए॥सुनतबरुणआ
तुरह्वैधाए॥४३॥आनंदकियोदेखिहरिकोंमुख॥कोटिजन्म
केसबेंगयेदुख॥४४॥धन्यभागिमेरेवडआजु॥चरणकम
लदरसनशुभकाज॥४५॥महलनवंदनमालबंधाए॥
पाटंबरपांवडेडसाए॥४६॥रतनजटितसिंघासनधार्यो
तापरकृष्णहिलैबेठार्यो॥४७॥अपनेकरप्रभुचरणपखा

Shrimad Gokulnathji Maharaj